— : श्री पालगुम्मि पद्मराजु : व्यक्तित्व व कृतित्व : —

(एम · ए ·(हिन्दी) उपाधि केलिए प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध)

प्रस्तुत - कर्ता :-

शीरेड्डि सत्यनारायण

— * निर्देशक * —

'साहित्यरत्न'
डा० कर्ण · राजशेषगिरिराव, एम · ए ·(हिन्दी) एम · ए ·(संस्कृत) एम · ए ·(तेलुगु), पी · एच

1970

आन्ध्र - विश्वविद्यालय,

वाल्टेर ·

: निवेदन :

श्री पालगुम्मि - पद्मराजु बहुमुखी प्रतिभासंपन्न लेखक हैं। वे विश्वविख्यात कहानीकार हैं, लोकप्रिय नाटककार हैं और व्यंग्य प्रधान उपन्यासकार हैं। वे विज्ञान-शास्त्र हैं, अनेक वर्षों तक अध्यापक रहे, अब चित्र-जगत के क्षेत्र में लेखक के रूप में प्रतिष्ठित हैं। इस महान् कलाकार के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का अध्ययन करने का विनम्र प्रयास इस लघु-शोध-प्रबंध में किया गया है। पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित एवं बिखरी हुई उनकी सामग्री अधिक है। पर पुस्तकाकार में उपलब्ध सामग्री तक मेरा यह अध्ययन सीमित है।

अध्ययन की सुविधा केलिए यह प्रबंध चार अध्यायों में विभाजित किया गया है। प्रथम अध्याय में पूर्व पीठिका के अंतर्गत तेलुगु रूपक-साहित्य की, उपन्यास-साहित्य की, एवं कहानी-साहित्य की संक्षिप्त रूप-रेखा प्रस्तुत की गई है। द्वितीय अध्याय में श्री पद्मराजु का संक्षिप्त जीवन-परिचय दिया गया है, साथ ही साथ उनकी उपलब्ध-कृतियों का विश्लेषण किया गया है। तृतीय अध्याय में कृतियों का - रूपकों, उपन्यासों, एवं कहानियों का मूल्यांकन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में तेलुगु साहित्य के विकास में श्री पद्मराजु के योगदान का अंकन किया गया है। परिशिष्ट (अ) में मूल ग्रंथ-सूची एवं परिशिष्ट (आ) में सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

साहित्याचार्य श्री जी0 सुंदररेड्डी, प्रोफेसर तथा अध्यक्ष, हिन्दी विभाग ने इस विषय पर शोध कार्य करने की स्वीकृति देकर पग पग पर मुझे प्रोत्साहित किया है। अतः उनके प्रति मैं अपनी कृतज्ञता का ज्ञापन करता हूँ। डा0 कर्ण - राजशेषगिरिरावजी के तत्वावधान में यह शोधकार्य सुसंपन्न हुआ है। एतदर्थ मैं उनका बहुत बड़ा आभारी हूँ। श्री पालगुम्मि0 पद्मराजुने मेरी शंकाओं का समाधान

देने की कृपा की जो वस्तुतः उनकी उदारता का प्रतीक है। उनके प्रति मैं अपनी कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ। आशा है कि सहृदय मेरे इस प्रयास का हृदय-पूर्वक स्वागत करेंगे और मुझे आशीर्वाद देकर प्रोत्साहित करेंगे।

(पीरेड्डि० सत्यनारायण)

विषय - योजना :-

-: श्री पालगुम्मि० पद्मराजु : व्यक्तित्व व कृतित्व :-

....

प्रथम - अध्याय :

पूर्व - पीठिका

1 • 0 • 0

तेलुगु रूपक-साहित्य की संक्षिप्त रूप रेखा

0

आन्ध्र भाषा मधुर भाषा है। आधुनिक युग में आधुनिक साहित्य की श्रीवृद्धि निरंतर हो रही है। आन्ध्र साहित्य का अवलोकन करने से हमें यह मालूम होता है कि 1850 तक तेलुगु नाटक रचना का आरंभ ही नहीं हुआ। आन्ध्र कविगण समस्त साहित्यिक विधाओं में संस्कृत कवियों का अनुसरण करने पर भी 'काव्येषु - नाटकं रम्यम्' नामक उक्ति का महत्व जानने पर भी न जाने वे क्यों नाटक रचना में संलग्न नहीं हुए। यक्ष गानों में रूपकों का धूमिल रूप मिलता है। सन् उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्ध में धार्वाड नाटक समाज ने भारत देश के कई प्रांतों में हिन्दी नाटकों का प्रदर्शन कर आन्ध्र जनता को आकर्षित किया है तो आन्ध्र देश के कई पंडितों में नाटक रचना करने की लालसा पैदा हुई।

तेलुगु भाषा में प्रथमतः नाटक रचना करने का श्रेय आन्ध्र पंडितों में श्री कोराड रामचंद्रराव को प्राप्त है। उन्होंने सन् 1860 में 'मंजरी मधुकरीयम' नामक एक मूल नाटक की रचना की।

श्रीरंगाचार्युलु और श्री वीरेशलिंगम ने कालिदास कृत अभिज्ञान शाकुंतलम का अनुवाद किया। सन् 1865 में वाविलाल वासुदेवशास्त्रीजी ने शेक्सपीयर का जूलियस सीजर का अनुवाद किया। सन् 1880 तक प्रकाशित आन्ध्र-नाटकों में कई ग्रंथ अनुवाद मात्र हैं। नंदकराज्यम और मंजरी मधुकरीयम आदि नाटक होने पर भी उनके लिए विशिष्ट स्थान प्राप्त नहीं हुआ।

श्री वीरेशलिंगम पंतुलुजी के नाटकों में अनुवाद ग्रंथ ही नहीं बल्कि निज गढ़ंत

रचनाएँ भी हैं। उन में दक्षिण गोग्रहणम, और सत्यहरिश्चन्द्र प्रसिद्ध हैं। लेकिन उनके अनुवादों के लिए जितनी प्रशंसा उन दिनों मे मिलती थी, उनकी स्वतंत्र रचनाओं को नहीं प्राप्त हुई। महामहोपाध्याय वेदं वैंकटराय शास्त्रीजी ने प्रतापरुद्रीयम, और बोब्बिलियुद्धम, आदि ऐतिहासिक नाटकों को लिखा। उनका पौराणिक नाटक है उषा। उषा और बोब्बिलियुद्धम में श्री शास्त्री ने अद्भुत नाट्यशिल्पविद्या का प्रदर्शन किया है। कहीं कहीं उन्होंने हास्यरस पूर्ण दृश्यों का भी प्रणयन किया है।

श्री पानुगंटि नरसिंहरावजी ने लगभग तीस नाटक लिखकर 'आन्ध्र शेक्सपीयर' नामक उपाधि प्राप्त किया। उनकी कृतियों में पादुकापट्टाभिषेकम, राधाकृष्ण, विप्रनारायण आदि उल्लेखनीय हैं। इनके नाटकों में पद्यों की संख्या कम है। शेक्सपीयर के जैसे दीर्घ स्वगत का लिखना इनके लिए विशेष अभिरुचि बात रही।

चिलकमर्ति लक्ष्मीनरसिंह पंतुलु जी कई नाटकों को लिखकर अधिक लोक प्रिय बने। उनके नाटकों में 'गयोपाख्यानम' प्रसन्नयादवम', पारिजातापहरणम', प्रह्लाद चरित्र', आदि उल्लेखनीय हैं।

श्री तिरुपति वेंकट कवियों ने संस्कृत नाटकों के अनुवादों के साथ-साथ कई स्वतंत्र नाटकों की रचना भी की। उन में 'पांडव उद्योग विजय' अत्यधिक प्रसिद्ध है। इस नाटक के पद्य अत्यंत मनोहर और लोक प्रिय हैं।

आन्ध्र देश में अत्यधिक ~~प्रसिद्ध~~ प्रसिद्ध एवं लोकप्रिय कृति श्री बलिजेपल्लि लक्ष्मीकांत कविकृत नव्य कविकृत सत्य हरिश्चंद्रीयम है। इस नाटक में प्रत्येक पद्य एक-एक रत्न के समान है।

आन्ध्र देश में सामाजिक नाटकों में अत्यंत उल्लेखनीय नाटक श्री गुरजाड अप्पाराव जी कृत 'कन्याशुल्कम' है। इसकी रचना होकर पचहत्तर साल हुए, फिर भी इस

में नितनूतनता परिलक्षित होती है। इस नाटक में गिरीशं नामक पात्र को विशि विशिष्ट स्थान है।

कविसम्राट विश्वनाथ सत्यनारायणजी कवि ही नहीं, नाटककार के रूप में भी वि विशेष प्रसिद्ध हैं। नर्तनशाला, वेनराजु, त्रिशूलम, अनार्कली आदि उनके प्रसिद्ध-नाटक हैं। आजकल सर्वत्र व्याप्त राजनीतिक, सामाजिक, कुरीतियों को दृष्टि में रखकर कई नाटकों की रचना की गई। इन नाटकों की भाषा अधिकतर बोलचाल व्यवहारिक भाषा है। ऐसे नाटककारों में श्री पालगुम्मि पद्मराजु का स्थान अनुपम है। इन्होंने अपने नाटकों के द्वारा सामाजिक कुरीतियों का खण्डन किया है। श्री पद्मराजु कृत 'रक्त कन्नीरु' (रक्तिम आँसु) नामक सामाजिक नाटक को न जानने वाला कहीं नहीं दिखाई देता है। इस नाटक के द्वारा नाटककार ने पराई स्त्रियों का आशिक होकर गुलछर्रे उडानेवाले आँख के अँधों को चेतावनी दी। इस में भारतीय स्त्री की विशिष्टता का उल्लेख भी है। इन के अलावा 'भिखारी राम', 'पापं पंडिंदि' (पाप पक गया है) आदि नाटक विशेष लोक प्रिय बन पडे हैं। श्री कोपेल्ल वेंकट रामाराव द्वारा लिखित 'पेद्दमानि मगडु'; भाग्य-रेखा', 'वेन्नेल' आदि नाटकों में सामाजिक कुरीतियों का खंडन है। आचार्य आत्रेय द्वारा लिखित 'मान - वि - ओ', कप्पलु', (मेंढक), भयं'(डर) आदि नाटक भय और आंदोलन से ग्रसित एक सामान्य व्यक्ति के मानसिक तत्व का चित्रण है।

आत्मवंचन नामक, बुच्चिबाबु कृत सप्त नाटक अहंकार के कारण कलुषित भा भावों से प्रेरित हो, आत्मवंचन करनेवाले आधुनिक विद्यार्थियों के सच्चे स्वरूप का दिग्दर्शन है। श्री चलंम के 'चित्रांगि' नामक नाटक आन्ध्र नाटक क्षेत्र को नई देन है। श्री कुंदुर्ति जी द्वारा लिखित 'गीता नाट्य' आन्ध्र नाटक साहित्य में

नूतन कृति है।

अब तो एकांकी नाटकों की संख्या अधिक होने लगी है। राजमन्नारजी ने सन् 1920 में ही पहले पहल एकांकी का श्री गणेश किया है। 'एमि मोगवाळ्ळु' (क्या मर्द हैं?) 'नागुबामु' (साँप) 'निष्फली', (निष्फला) नामक इन के एकांकियाँ उत्तमोत्तम है। ~~बुच्चि बाबु~~ मुद्दुकृष्ण, धर्ली, भमिडिपाटि कामेश्वरराव, श्री चिंता दीक्षितुलु, श्री मल्लादि विश्वनाथ कविराज और गोक्कपाटि नरसिंह शास्त्रीजी आदि काल और कला की दृष्टि से उल्लेखनीय कलाकार हैं।

आधुनिक एकांकियों के रचनाकार अपने एकांकी नाटकों में यथार्थ जीवन चित्रण को प्राधान्य देने का प्रयास करते हैं। श्री बुच्चिबाबु, आत्रेय, नार्ल, अनिसेट्टि, पिनिसेट्टि, गंगाधर और ~~वि-विश्वनाथ~~ शिवप्रसाद आदि एकांकीकार इस पथ पर आगे बढ़ रहे हैं। आत्रेयजी की रचनाओं में प्रगतिशीलता दृष्टिगोचर होती है। श्री तल्लावज्झुल शिवशंकर शास्त्रीजी ने कुछ एकांकियों को गीति रूप में लिखा है। श्री नारायणरेड्डी ने भी कुछ गीत एकांकियों की रचना की।

आजकल रेडियो एकांकियों का प्रचार और प्रसार अधिक हो रहा है। रेडियो एकांकियों को लिखने में और उनके प्रचार करने में श्रीकपिलशास्त्री अधिक लोकप्रिय है। श्री बुच्चिबाबु, गौरशास्त्रीजी, श्री श्री, कृष्णशास्त्रीजी श्री पालगुम्मि पद्मराजु, आरुद्र, रजनीकांतराव, मुनिमाणिक्यं नरसिंहरावजी आदि रेडियो एकांकियों को लिखने में कुशल हैं।

संगीत नाटक लिखनेवालों में श्री कोप्परपु सुब्बाराव, उल्लेखनीय हैं। बच्चों की एकांकियों लिखनेवालों में नार्ल चिरंजीवि, पालकि सरस्वतीदेवी, चिंतादीक्षितुलु उल्लेखनीय हैं। आजकल बड़े नाटकों के अलावा एकांकियों की माँग अधिक है। इन

में कई एकांकियों का प्रदर्शन विद्यार्थियों के द्वारा वार्षिकोत्सवों के अवसर पर किया जा रहा है। विद्यार्थियों की सुविधा के लिए केवल पुरुष पात्रों से ही एकांकी रचना कर रहे हैं। एकांकियों की संख्या बढ़ रही है। सोचने की बात यह है कि उन में कला की परिपक्ति घटती जा रही है। आशा है कि प्रतिभावान लेखक एकांकियों से तृप्त न होकर कला परिपक्ति से पूर्ण नाटकों की रचना करके कला की अभिवृद्धि के लिए अपना सहयोग प्रदान करेंगे।

1 • 2 • 0 तेलुगु उपन्यास साहित्य की संक्षिप्त रूप रेखा : —

पाश्चात्य भाषा के प्रभाव से पल्लवित साहित्यिक विधाओं में उपन्यास साहित्य भी एक है। दक्षिणांध्रयुग में कई गद्यग्रंथ निकले, पर उन में से अत्यधिक पौराणिक कथावस्तु से ही भरे पडे हैं। सन्" 1878 में श्री वीरेशलिंगम पंतुलु द्वारा लिखित 'राजशेखर चरित्रम' नामक उपन्यास ही तेलुगु भाषा में प्रप्रथम उपन्यास माना जाता है। यह तो गोल्डस्मिथ से लिखित 'विकार आफ वेकफील्ड' नामक उपन्यास का अनुवाद है। समाज की कुरीतियों का खंडन करना इस रचना का प्रधान लक्ष्य रहा है। सन् 1873 में श्री खंडविल्लि रामचंद्रजी ने 'धर्मवती विलास' नामक एक उपन्यास को प्रकाशित किया। इस के बाद वे ही मालयती माधवम और लक्ष्मी सुंदरविजयम नामक दो उपन्यासों को प्रकाशित कर सके। ये तीनों उपन्यास उस समय प्रचलित चिंतामणि पत्रिकावालों से पुरस्कृत हुआ है। सन् 1893 में चिलकमर्ति लक्ष्मी नरसिंह पंतुलु जी द्वारा लिखित 'रामचंद्रविजयम' नामक उपन्यास कि चिंतामणि पत्रिका की ओर से पुरस्कृत हुआ है। इनके उपन्यास इतिहास प्रसिद्ध हैं। इनका 'गणपति' नामक उपन्यास हास्यरस से ओत प्रोत है।

केतवरपु वेंकटशास्त्रीजी ने कई ऐतिहासिक प्रसिद्ध उपन्यासों को लिखा। इनके कई उपन्यासों में 'बोब्बिलि मुट्टडि', रायचूर युद्ध, पूर्णानंद, अग्रहारम आदि उल्लेखनीय हैं।

आधुनिक उपन्यासकारों में श्रीविश्वनाथ सत्यनारायणजी का स्थान अनुपम है। इनके प्रथम उपन्यास 'एकवीरा' है। इस उपन्यास की कथावस्तु, शैली, पात्रपोषण आदि लेखक की प्रतिभा के परिचायक हैं। चेलियलिकट्टा'(समुद्रतट), धर्मचक्रमु बद्दैन सेनानि, स्वर्गानिकि निच्चेनलु (स्वर्ग केलिए निसेनी), तेरचिराजु, मा बाबू आदि इनके अन्य उपन्यास हैं। इन से रचित वेय्यिपडगलु (सहस्रफण) नामक उपन्यास उत्तमोत्तम है। इस उपन्यास में गुम्फित भाव गंभीरता पात्रों की सजीवता, शैली आदि अनुपम हैं।

सामाजिक उपन्यास के नामी उपन्यासकारों में श्री अडवि बापिराजु का स्थान उल्लेखनीय है। इनका नारायणराव नामक उपन्यास अधिक प्रशंसनीय बन पडा है। 'हिम बिंदु', कोनंगि, गोन गन्ना रेड्डी आदि इनके अन्य उपन्यास आन्ध्र देश में विशेष लोक प्रिय हैं। श्रीपाद सुब्रह्मण्य शास्त्रीजी की 'आत्म बलि', गोपीचंदजी के 'असमर्थुनिजीवयात्रा', बुच्चिबाबू जी की 'चिवरकु मिगिलेदि' (अंत में बचेगा क्या?) जी · वी · कृष्णारावजी का 'कीलुबोम्मलु' (हाथ की पुतलियाँ) बलिवाड कांतारावजी का 'गोडमीद बोम्मलु' (दीवार पर के चित्र) और पोतुकूचि सांबशिवरावजी का 'उदय किरणालु' उत्तम पात्र-चित्रण सामाजिक वातावरण आदि के कारण अधिक लोकप्रिय हैं।

श्री नोरि नरसिंह शास्त्रीजी के नारायणभट्ट रुद्रम, मल्लारेड्डी, नामक ऐतिहासिक उपन्यास अत्यधिक प्रसिद्ध हैं। डा० कार्ल नरसिंहजी के कनकाभिषेकम, रघुनाथ रायलु, श्रीमति वसुंधरा के तंजावूरि पतनम, सप्तपर्णी श्री धूलिपाल श्रीराममूर्तीजी

भुवन विजयम आदि आन्ध्र विश्वविद्यालय की ओर से पुरस्कृत ऐतिहासिक उपन्यास हैं। उपर्युक्त उपन्यास अतीत के आन्ध्र-वैभव को आँखों के सामने खड़ा करते हैं।

आन्ध्र भाषा का प्रसिद्ध उपन्यास श्री उन्नवलक्ष्मीनारायण जी का 'मालपल्लि' है। इस में राजनीतिक, सामाजिक और धार्मिक आदि समस्याओं का उल्लेख है।

श्री पालगुम्मि पद्मराजु कृत रैंडव अशोकुनि मूण्णाल पालना (द्वितीय अशोक का तीन दिनों का शासन) नामक उपन्यास राजनीति की दृष्टि से खरा उतरा है। इस में कई राजनीतिक समस्याओं का दिग्दर्शन किया गया है। किस प्रकार लोग जनतंत्र-सत्तात्मक शासन से तंग आकर प्रभुता सत्ता शासन की योजना करते हैं, उसका विस्तृत वर्णन इस में मिलता है। इसके अलावा ~~उप्पल~~ ~~उप्पल~~ उप्पल ~~ल~~ लक्ष्मण रावजी का 'अतडु-आमे' (वह और वह) श्री महीधर राममोहनरावजी का 'रथ - चक्रालु' (रथ चक्र) 'ओनमालु' (क ख ग) 'दावानलमु' (दावानल) आदि उपन्यास और श्री वट्टिकोट आलवारु स्वामीजी के 'प्रजल मनिषि' (प्रजानायक) आदि में राजनीति और सामाजिक समस्याओं का सम्मिश्रण पाया जाता है।

हास्य रस पूर्ण उपन्यासकारों में श्री मोक्कपाटि नरसिंहशास्त्रीजी, मुनिमाणिक्यं नरसिंह शास्त्रीजी और पालगुम्मि पद्मराजुजी आदि उल्लेखनीय हैं। श्री नरसिंह शास्त्री का 'बारिस्टर पार्वतीशम' अधिक लोक प्रिय हास्य रचना है। श्री मुनिमाणिक्यं नर-सिंहरावजी के तिरुमालिगा, दीक्षितुलु, और कांते दस्तु आदि हास्य रस से ओत-प्रोत हैं। श्री पालगुम्मि पद्मराजु कृत 'ब्रतिकिन कालेजी' नामक उपन्यास में हास्य रस की पहुँच पराकाष्ठा तक है।

उपन्यास साहित्य में स्त्रियों का योगदान अनुपम है। श्रीमती कनीति पुरुष्याजी के 'सुदक्षिणा चरित्र' पौराणिक इतिवृत्त से ओत प्रोत है। श्रीमति पुलुगुर्त लक्ष्मी -

नर सिंह राव जी की 'भद्र', योगेश्वरि और अन्नपूर्णा आदि गृहजीवन के प्रतीक हैं। श्रीमति कनुपर्ति वरलक्ष्मम्माजी की 'वसुमति', मालती चंदूरजी के 'दूरपु कोंडलु' आदि उपन्यास उल्लेखनीय हैं।

अंग्रेजी से अनुवादित उत्तम उपन्यासों में वीरेशलिंगमजी के राजशेखर चरित्र को ले सकते हैं। चिलकमर्तीजी की दासी कन्या, श्री पालगुम्मि पद्मराजु का 'नरुलु-नदुलु (आदमी और नदियाँ) आदि उपन्यास लोकप्रिय कृतियाँ हैं। ~~-----~~ गोरा, नौका भंगमु (नौका भंग) इंटा बयटा (अंदर और बाहर) तपोवन, योगभियोग आदि रवीन्द्र कृतियों का अनुवाद भी तेलुगु में हुआ है।

आजकल उपन्यास साहित्य अधिक लोकप्रिय वस्तु है। इसी क्षेत्र में अनेक प्रसिद्ध-लेखक एवं लेखिकाएँ अनुपम कृतियों का प्रणयन कर रहे हैं। युग की माँग के साथ-साथ युग संदेश को भी लेकर, आशा है कि उपन्यास परिपुष्ट बनेंगे।

1·3·0 आन्ध्र कहानी साहित्य विकास की एक झाँकी :—

आन्ध्र साहित्य केलिए उन्नीसवीं सदी की उत्कृष्ट देन गद्य-वांगमय है। तेलुगु कथा साहित्य का आरंभ भी इसी सदी में हुआ। कहानी साहित्य का प्रारंभिक युग अनुवाद का युग था। भोज कथाएँ, विक्रमार्क कथाएँ, दशकुमार कथाएँ आदि अनुवाद साहित्य के उज्वल उदाहरण हैं। ये कहानियाँ पंचतंत्र, हितोपदेश, विक्रमार्क कहानियाँ, कथा सरित्सागर आदि प्राचीन संस्कृत ग्रंथों से अनुवादित होने पर भी, बड़ी मधुर होती थी। भाषा सरल होती थी। ये कहानियाँ सरस घटनाओं, अद्भुत चरित्र चित्रणों से, प्रकृति वर्णन से शोभित होती थी, जिनको पढ़कर पाठकगण फूले न समाते थे। इसी युग में कुछ कहानियाँ अंग्रेजी भाषा से भी अनुवादित होती थी।

दूसरी पीढ़ी के युग के अंतर्गत गुरुजाड अप्पारावजी की रचनाओं को ले सकते हैं।

इनके 'अग्निगुल्यालु' नामक कहानी संग्रह अधिक प्रसिद्ध हैं। चिलकमर्ति लक्ष्मीनरसिंहम जी की रचनाओं में 'चमत्कार मंजरी' 'भारत कथा मंजरी', राजस्थान कथावलि', 'चित्र कथा गुच्छमु' आदि कहानियाँ उल्लेखनीय हैं।

कवि सम्राट विश्वनाथ सत्यनारायणजी, कहानियों की रचना में सिद्धहस्त है। ये तो आधुनिक युग के प्रतिनिधि कलाकार हैं। इनकी कहानियों में संक्षिप्तता, अन्विति आदि विशेषताएँ दिखायी पड़ती हैं। इनकी कहानियों में 'सुगुरु भिक्षगाव्वु' 'जमीं-दारिन कौडुकु' आदि मर्मस्पर्शी कहानियाँ हैं।

आन्ध्र कहानीकारों में श्री अडवि बापिराजु केलिए एक विशिष्ट स्थान है। इनकी कहानियों में रेखाचित्र जैसे जीता जागता चित्रण हमें दृष्टिगोचर होता है। इनकी कहानियों में 'तिरुपति कोंड मेट्टलु' , 'हैपी शियेलालु', आदि श्रेष्ठ माने जाते हैं। इनकी शैली अनुकरणात्मक नहीं है, केवल मात्र स्वच्छंदता इनकी कहानियों में फूट निकलती है।

श्रीपाद सुब्रह्मण्यमजी की कहानियों में जीवन का सत्य अत्यंत मनोहर रूप में चित्रण किया गया है। 'गुलाबी अत्तरु', 'अच्चितमैन जवाबु' आदि इनकी प्रसिद्ध कहानियाँ हैं।

श्री चलम आन्ध्र कहानी साहित्य के मेरुदंड हैं। इनकी भाषा, कथा विधा, भाव आदि मनमोहक हैं। इनकी 'हैपी कन्यलु', 'सिनिमा हालु' आदि कहानियाँ प्रसिद्ध हैं।

श्री कोडवटिगंटि कुटुंबराव एक अच्छे कहानीकार और समालोचक हैं। इनकी कहानियों में मार्क्सवादी प्रभाव दृष्टि गोचर होता है। इनकी कहानियों में चरित्र-चित्रण की कौशलता भरी रहती है। 'स्त्री जन्म', 'गोंजि कैंद्रमु', और क्षोत्तजीवितमु'

आदि इनकी कहानियों में उल्लेखनीय हैं।

चिंतादीक्षितुलुजी कहानी सम्राट के नाम से प्रसिद्ध हैं। ये तो बाल-साहित्य के लिखने में सिद्ध हस्त हैं। 'दासरि पाट' आदि इनकी कहानियों में उल्लेखनीय हैं।

श्री मुनिमाणिक्यं नरसिंहरावजी की अनुपम सृष्टि 'कांतम' है। इनकी कहानियों में दो ही पात्र होते हैं। एक तो स्वयं वे हैं, दूसरा उनकी पत्नी कांतम। घरेलू जीवन में घटनेवाले दुःखमय मार्मिक अंशों को हास्यमय बनाने में ये कुशल हैं। श्री मोक्कपाटि नरसिंहशास्त्री ने कुछ उत्तम कहानियों की रचना की है। 'चित्तरुवु' नामक कहानी अत्यंत मनोहर है।

श्री गोपीचंदजी समालोचक और उपन्यासकार ही नहीं, बल्कि एक उत्तम कहानी कार भी हैं। इनके भाव आदर्श और राजनीति से संबंधित होते हैं। इनकी कहानियों में, विवाह और प्रेम की समस्याएँ स्पष्ट परिलक्षित होती हैं। इनकी कहानियों में 'धर्म वड्डी', 'भार्यललोने वुंदि', 'तंडुलु-कोडुकुलु' आदि उत्तम हैं। 'सूदखोरो' नामक कहानी आत्माभि-व्यंजना का ज्वलंत उदाहरण है।

श्री पालगुम्मि पद्मराजु एक महान आन्ध्र कहानीकार हैं जिन्हें विश्व कहानी प्रतियोगिता में द्वितीय पुरस्कार मिला है। इनकी जगद्विख्यात कहानी 'तुफान' है। यह तो एक उच्चकोटि की कहानी है। कहानी रचना में ये तो एक उत्तम ढंग की शिल्प विद्या को प्रदर्शित करते हैं। 'एदुरु चूसुन्न मुहूर्तमु', 'वासन लेनि पुव्वु' 'पडव प्रयाणमु' आदि इनकी प्रसिद्ध-कहानियाँ हैं।

श्री बुच्चिबाबू की प्रतिभा सर्वतोमुखी है। इनकी रचनाएँ हृदयाकर्षक और बुद्धि परक हैं। 'मेड मेट्लु', 'नन्नु गुरिंचि कथरायवु', 'मणिद्वीपमु' आदि इनकी श्रेष्टतम कहानियाँ हैं।

श्री करुणकुमार भी उत्तम कहानीकारों के अंतर्गत आते हैं। ग्रामीण जीवन का वर्णन करने में ये कुशल हैं। 'कैन्ना', 'पिल्ल मोलवाडु' (करघना) आदि इनकी अनुपम कहानियाँ हैं।

भरद्वाज, धनिकोंड, अनिसेट्टि आदि श्री चलमजी धारा के अंतर्गत आनेवाले उत्तम कहानीकार हैं। इनकी कई कहानियाँ लैंगिक कामशास्त्र से संबंधित होती हैं।

श्री मधुरांतकं राजाराम ~~के~~ की कहानियों में ~~क~~ गतुलु, दुंपटिलो कुर्मं आदि श्रेष्ठ हैं। श्री भास्कर भट्ल कृष्णाराव, श्री पोट्लपल्लि रामाराव, श्री धरणिकोट श्री निवासुलु, श्री इटिकल नीलकंठराव, श्री चक्रवर्ति रंगस्वामी आदि कहानीकार अच्छी कहानियाँ लिख रहे हैं। आगे चलकर ये उत्तम कहानीकार ~~बनेंगे~~ होने में संदेह नहीं है।

कहानी लेखिकाओं में श्रीमति वासिरेड्डी सीतादेवी, इल्लिंदल सरस्वतीदेवी, मालती चंदूर, श्रीदेवी, रामलक्ष्मी, जानकीरानी, भानुमती, रमादेवी, हेमलतादेवी, सुलोचना आदि उल्लेखनीय हैं। मालती चंदूर की कहानियाँ मधुर अनुभूति और मूल वेदना से ~~भी~~ भरी रहती हैं। इनकी ~~प्रसिद्ध~~ प्रसिद्ध कहानी है ''डाबा इल्लु''। ''लाल गुलाब'' जानकी रानी की श्रेष्ठतम कहानी है। रमादेवी की कहानी ''आँखों के सामने'' प्रसिद्ध हैं।

अंग्रेजी, बंगाली, हिन्दी आदि भाषाओं से कई कहानियाँ अनुवादित हुई हैं। आजकल 'कहानी ही ऐसी साहित्य विधा है जो अधिक लोकप्रिय है। कहानीकार बड़ी उत्सुकता से रचना कर रहे हैं। सच बात यह है कि उत्तम उपन्यासों का लिखना आसान है, पर उत्तम कहानियों का लिखना सुलभ साध्य नहीं है। कहानियों में गागर में सागर को भराने की कला कुशलता की आवश्यकता है। आशा है आगे

चल कर कहानीकार उत्तम कहानियों की रचना करके पाठकों को संतुष्ट बनायेंगे।

द्वितीय - अध्याय

संक्षिप्त-जीवन-परिचय और कृतियों का विश्लेषण

24
23
22
21
20
19
18
17
16
15
14
13
12
11
10
9
8
7
6
5
4
3
2
1

कहानी साहित्य

एकांकी साहित्य

रूपक साहित्य

उपन्यास साहित्य

Scale 1=10
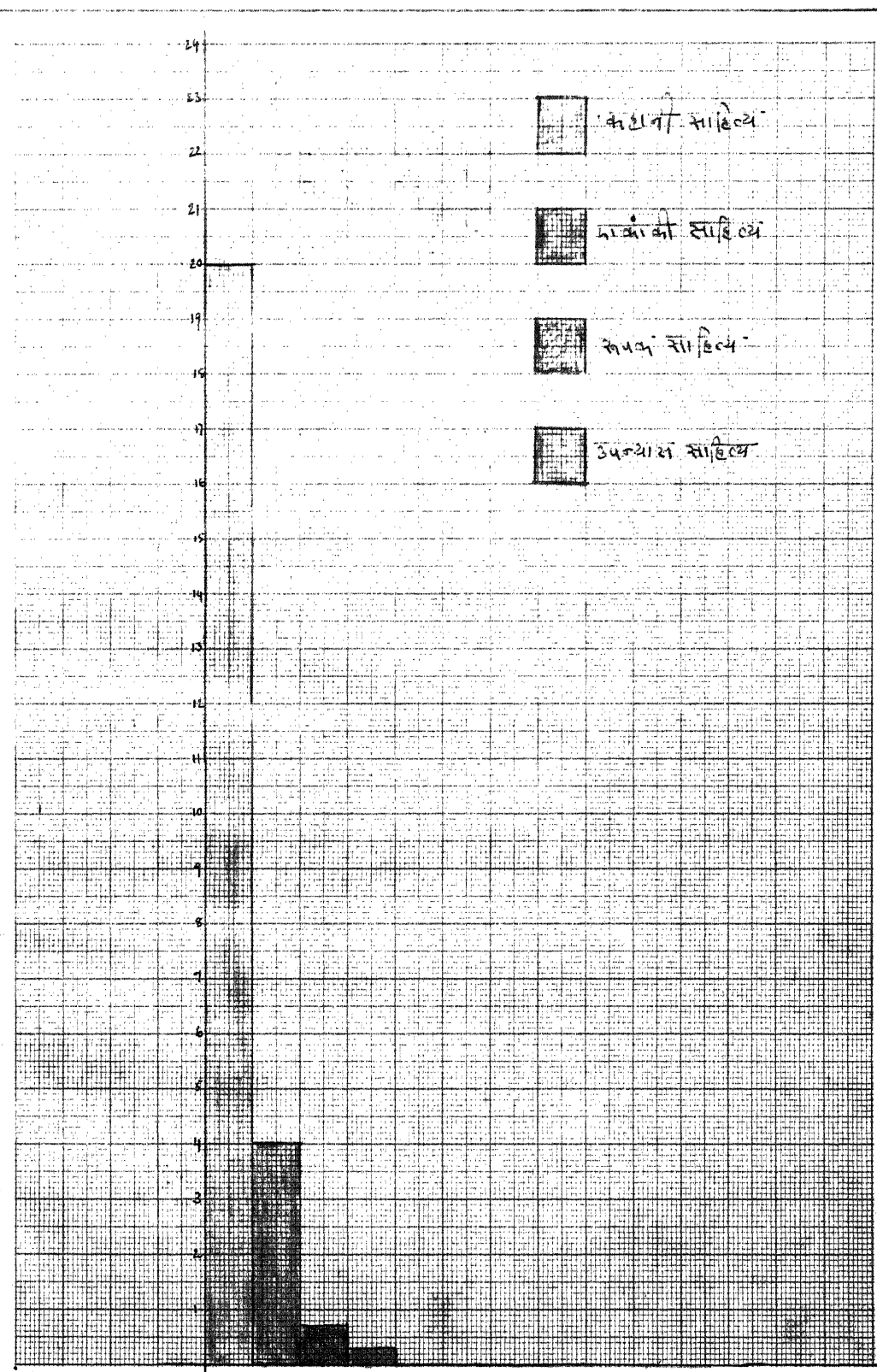
2 · 0 · 0

श्री पद्मराजु का संक्षिप्त जीवन परिचय एवं कृतियों का विश्लेषण

श्री पालगुम्मि पद्मराजुजी कहानीकार, उपन्यासकार, नाटककार, एकांकीकार और रेडियो एकांकीकार के रूप में लोक में प्रसिद्ध बन गये हैं। ये तो चौबीस जून उन्नीस सौ पंद्रह को पश्चिम गोदावरी जिला, तणुकु तालूका के तिरुपतिपुरं नामक एक गाँव में पैदा हुए। इनकी शिक्षा-दीक्षा राजमहेन्द्रम में हुई। इन्होंने बी · एस सी · परीक्षा में पहली श्रेणी में उत्तीर्ण हुए। इसके पश्चात् ये हिन्दू-यूनिवर्सिटी बनारस (काशी) में एम · एस · सी · उपाधि-धारी बने। इनका मुख्य विषय था रसायनशास्त्र। इन्होंने एम · एस · सी · में पहली श्रेणी प्राप्त की। सन् 1936 से 1945 तक पी · आर कालेज काकिनाडा में अध्यापक के नाते काम किया। इसके पश्चात् सन् 1945 में भीमवरम कलाशाला में रसायन शास्त्र के प्रधान आचार्य बने। सन् 1952 तक अध्यापन का कार्य करते रहे। उन्होंने सिनीमा क्षेत्र में पदार्पण किया। ये अब सिनेमा रचयिता के नाते लोकप्रिय हैं।

अध्यापन का कार्य करते वक्त ये अपनी कहानियों को पत्र-पत्रिकाओं को प्रकाशित किया करते थे। जब तूफान कहानी प्रतियोगिता में द्वितीय पुरस्कार मिला है, तब इनका यश सर्वत्र फैल गया है। अब ये तो कहानीकार, उपन्यासकार, नाटककार और एकांकीकार के रूप में सुपरिचित हो गये हैं। अब तक करीब इनकी दो सौ कहानियाँ पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुईं। खेद की बात यह है कि इनकी कहानियाँ पुस्तकाकार में नहीं निकलीं। इनकी कहानियाँ दो संग्रहों में प्रकाशित हुई हैं। वे हैं 'कुलिजनं-

कथलु', 'पद्मराजु कथलु'। इनकी कहानियों में 'गदुरु चूस्तुन्न मुहूर्तं', 'चाल-लेनि पुव्वु' और 'पडव प्रयाणमु' आदि उल्लेखनीय हैं।

ये तो प्रसिद्ध उपन्यासकार भी हैं। 'ब्रतिकिन कालेजी' नामक इनके उपन्यास ने इनको बड़ा नामी उपन्यासकार बना दिया है, क्यों कि इस उपन्यास में हास्यरस का पुट है। इनके अन्य उपन्यास हैं 'नल्ल रेगडि' और 'रेंडव प्रपंचंलो मूणक्क-पालना' आदि हैं।

ये तो रूपक साहित्य के मेरुदंड हैं। इनकी सर्वतोमुख प्रतिभा का ज्वलंत उदाहरण है 'रक्तकन्नीरु' नामक इनका सामाजिक नाटक। इनके अन्य नाटक हैं – पार्थ पीडिंद और भिखारी राम आदि।

ये तो नामी एकांकीकार भी हैं। इनके बारह एकांकी नाटक हैं जो प्रकाशित नहीं हुए हैं। इनके चालीस रेडियो एकांकी नाटक हैं जो रेडियों में प्रसारित किये गए हैं। बल्कि ये तो अभी तक पुस्तक के आकार में नहीं आये। वे स्वयं अपने एक पत्र में लिखते हैं कि — "नेनु चाला बद्धकस्तुडनु कावडं चेत ना रचनल अच्चु विषयं लो श्रद्ध वहिंच लेदु। अच्चु अयिनवि बहुकोद्दि। मिगता रचनलन्नी पत्रि-कललो प्रचुरिंप बड्डवि, रेडियो लो प्रसारमैनविन्नी।" (मैं तो बहुत सुस्त हूँ। इसलिए मेरी रचनाओं के छपने के विषय में विशेष उत्सुकता या श्रद्धा नहीं है। छपी हुई रचनाएँ बहुत कम हैं। बाकी रचनाएँ पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई हैं और रेडियों में प्रसारित हुई हैं।" जो भी हो श्री पद्मराजुजी तेलुगु साहित्य के उत्तम लेखक हैं और आशा है कि आगे चलकर ये महान कवि भी बनेंगे।

तृतीय अध्याय

कृतियों का मूल्यांकन

3·0·0

कृतियों का मूल्यांकन

3·1·1 रक्त कन्नीरु (रक्तिम आँसू) : —

परिचय :—

'रक्त कन्नीरु' नामक श्री पद्मराजु कृत यह नाटक सामाजिक दृष्टिकोण से खरा उतरा है। इस नाटक के द्वारा नाटककार ने सामाजिक कुरीतियों का दिग्दर्शन किया है। पाश्चात्य सभ्यता का अनुकरण करके आकाश पर दिया जलानेवाले, अक्ल के दुश्मनों केलिए यह नाटक एक चेतावनी है। अपने पतियों को ही अपना सर्वस्व समझकर आत्म समर्पण करनेवाली स्त्रियों के आशाओं पर पानी फेरनेवाले पतियों का जीता-जागता चित्रण इस नाटक में दर्शनीय है। यह नाटक अपनी पत्नी की उठती जवानी पर धूल झोंककर वेश्याओं के आशिक होनेवाले उल्लू के पट्ठे के कान खडा करता है।

अपनी अठखेलियों पर अकड जाकर, अपने परिवार का आबरू खाक में मिलानेवाले आँख के अंधों केलिए यह नाटक एक चेतावनी है। आटे दाल की फिक्र भी भूलकर गुलछर्रे उडानेवाले पत्नी के सुख-जीवन पर धूल झोंकनेवाले कामांधों का उल्लू सीधा करता है यह नाटक।

"जब कोई व्यक्ति बुरी आदतों में फँसकर, अपनी पत्नी को आँख का काँटा समझता है, और काम लोलुप होकर पराई स्त्री को आँख का तारा समझता है, वह जरूर जहाज का कौआ बनकर पत्नी के आश्रय केलिए लालायित हो जाता है" इस नग्न सत्य का ज्वलंत उदाहरण है यह नाटक। श्री पद्मराजु ने इस नाटक के

द्वारा भारतीय नारी की दयनीय स्थिति का भरपूर वर्णन करने का सफल प्रयास किया है।

कथावस्तु :—

गोपाल पाश्चात्य आदतों में फँसा हुआ एक भारतीय युवक है। वह अपने दोस्त रमण के अनुरोध पर एक सभा में श्रम जीवियों के बारे में भाषण देता हुआ कहता है कि "मैं अपना मुँह मियां मिट्ठू बनाना नहीं चाहता। श्रम जीवियों से मुझे बहुत नफरत है। हमारे देश के श्रमजीवी दई के घाले (भाग्यहीन) होने के कारण भूखे मर रहे हैं और पाश्चात्य देशों के श्रम जीवी गाँठ के पूरे होने के कारण गुल छर्रे उडा रहे हैं। हमारी दरिद्रता का कारण है कि आज भारत देश में हरेक गाँव केलिए एक नायक, हरेक केलिए एक-एक भगवान और मुख्यतः अधिक संतानोत्पत्ति है।" इस प्रकार भाषण देता हुआ, वह टाइम देखता है और अपनेलिए और एक प्रोग्राम 'बाल रूम डान्स' में भाग लेने चल जाता है।

सुंदरी एक वेश्या और गोपाल की प्रिय है। वह अपनी चमक दमक से गोपाल को वश कर लेती है। वह श्रमजीवियों का गीत गाती देख गोपाल चिढता है तो वह राधाकृष्ण के प्रेम गीत को गाती है। गोपाल मदमस्त बन उसी का मजाक उडाता है।

शांतम्मा गोपाल की माँ है। वह अपने भाई की बेटी से अपने बेटे का घर आबाद करना चाहती है। लेकिन गोपाल अपनी माँ की बात टाल देता है। अपनी माँ और मामा के अंकुश के बल पर वह अपने मामा की बेटी इंदिरा से घर आबाद करता है।

गोपाल शादी के दिन ही सुंदरी के घर पहुँचता है। उसे देखकर सुंदरी

उँगली काटती है। सुंदरी कारण पूछती है। तो वह बताता है कि मेरी स्त्री ग्रामीण रीति रिवाजों की पुजारिन होने के कारण अपना-सा मुँह लेकर रह जाती है।" वह सुंदरी को ही अपनी जीवन संगिनी बनाना चाहता है। इसी सुअवसर को पाकर सुंदरी अपने घर के पुराने सामान के स्थान पर नये सामान से सुसज्जित करने का अनुरोध करती है तो काम लोलुप गोपाल वादा करता है।

इंदिरा अलख जगाती हुई अपने दुर्भाग्य पर आठ-आठ आँसू रोती है। इतने में उसका पिता आकर अपने साथ चलने का अनुरोध करता है। परंतु वह इनकार करती है। वह अपने पतिदेव के चरण कमलों के यहाँ ही मर मिटने का निश्चय कर लेती है। इतने में गोपाल मदमत्त बन आता है और वह अपने मामा और माँ को खूब खरी खोटी सुनाता है। वह इतना अक्ल का दुश्मन बन जाता है कि अपनी माँ, सुंदरी को राक्षसी कहती है तो वह आपे से बाहर होकर उसे थप्पड़ मारने केलिए हाथ उठाता है। वह माँ और पत्नी को ठुकरा कर सुंदरी के घर जाता है।

गोपाल का सत्यनाश प्रारंभ हो जाता है। सिगरेट का अधिक पीने के कारण गोपाल को खाँसी का रोग चढ जाता है। वरहालु सुंदरी की माँ गोपाल को घर से गर्दन पकड़कर निकालने की सलाह देती है। सुंदरी उस पर अँगार उगलती है। गुल-छर्रे उड़ाने के कारण गोपाल रुई का थाला बन जाता है। इसलिए सुंदरी हार के बारे में पूछने पर असमर्थता प्रकट करता है।

वरहालु के जन्म दिवस का समय है। गोपाल अतिथियों के स्वागत करने में मस्त रहता है। रमण शांतम्मा का गोलोक सिधारने की सूचना देता है। गोपाल अपनी माँ की मृत्यु पर एक बूँद भी आँसू नहीं टपकता। वह अपनी माँ की अंत्य-

क्रियाओं को हाजिर होने के अलावा, सुंदरी के घर में ही खूब पीकर सो जाता है। उसे घर ले जाने केलिए रमण और इंदिरा सुंदरी के घर आते हैं। उन्हें देखकर गोपाल आँखें लाल करता है। पतिता सुंदरी निष्कलंक इंदिरा और रमण के बीच एक अनहोनी संबंध-मढती है, पर गोपाल नहीं मानता। लेकिन सुंदरी की अफवाह की बातें उसके कानों में गूंज उठने लगती हैं।

इंदिरा इस सांसारिक जीवन से ऊब जाती है और फाँसी लगाकर टिम टिमाता हुआ अपना जीवन दीपक बुझाना चाहती है। इतने में रमण आकर उसकी रक्षा करता है। इतने में आँखों का अंधा गोपाल वहाँ आकर उन पर टूट पडता है। इंदिरा और रमण अपने को निष्कलंक बताते हैं, पर गोपाल के कान पर जूँ न रेंगता।

सुंदरी डाक्टर के मुँह से जब गोपाल को कोढी का रोग चढने की बात सुनती है तब वह अपनी वेश्या सहज बुद्धि को सोलह आने साबित करती है। वह नौकर रामु से कहती है कि ''गोपाल केलिए अलग सामान काम में लाया जाय।'' जब सुब्बाराव के द्वारा उसे सिनीमा में 'हीरोइन' का अवकाश मिलता है, तब वह अपनी खिचडी अलग पकाना चाहती है। गोपाल की इस दयनीय स्थिति में भी इंदिरा अपने पति केलिए पलक बिछाती है। परंतु गोपाल उ अपने को तुच्छ, पर-स्त्री लोलुप और पापी बताकर अपनी पत्नी के साथ जाने से इनकार कर देता है।

सुंदरी गोपाल के प्रति आस्तीन का साँप बन जाती है। वह गोपाल को धक्के मारकर, घर से बाहर निकालकर दरवाजा बंदकर देती है। गोपाल बार-बार पुकारने पर भी वह दरवाजा नहीं खोलती। अब गोपाल न घर का बनता है न घाट का। वह इस अनंत विश्व में अकेला बन जाता है।

गोपाल अपने पाप पूर्ण, क्रूर करतूतों पर उँगली काटता है। उसके चारों ओर अपनी माँ और पत्नी की बातें गूँज उठती हैं। वह अंधा और लंगडा हो जाने के कारण मुश्किल से चलता रहता है। वह इतना गोबर गणेश बन जाता है कि स्वयं उसकी पत्नी भी उसे नहीं पहचान सकती। वह भूख के कारण तरस जाने पर इंदिरा ही उसके लिए अंधे की लाठी बनती है।

जब रमण सुंदरी की आकस्मिक मरण की खबर खोलता है तब गोपाल अपना निज रूप प्रकट करता है। इंदिरा उस आगंतुक को अपना पति जान, उस गोबर गणेश गोपाल के लिए आँख बिछाती है। तब गोपाल अपने को अयोग्य कहकर, इंदिरा और रमण के हाथों के को जोडना चाहता है। उनके न मानने पर गोपाल समाज से अपनी राम कहानी व्यक्त करके अपने निश्चय को दृढ करने की याचना करता है। यों कथावस्तु का अंत हो जाता है।

चरित्र-चित्रण (पुरुष पात्र) :—

गोपाल :—

गोपाल पाश्चात्य सभ्यता में फँसा हुआ एक भारतीय युवक है। वह विदेशों में छः साल तक पढकर, अनेक विषयों के ज्ञाता बनकर भारत लौट आता है। उसकी बोल-चाल में, वेष-भूषा में विदेशी कि चिह्न स्पष्ट परिलक्षित होते हैं। वह अब जीवियों से बहुत नफरत करता है।

उसकी आँखों में पाश्चात्य सभ्यता का चरबी छा जाने के कारण, अपनी माँ को माँ बताना लज्जित मानता है। यदि साडी उतारकर अँगिया पहनेगी तो वह अपनी माँ को माँ बताना चाहता है। अपनी माँ और मामा के तंग करने पर इंदिरा से अपना घर आबाद करता है। वह वेश्या सुंदरी के आशिक होने के कारण, शादी

के दिन ही इंदिरा को ठुकराकर उसके घर जाता है। वह इतना पुत्र द्रोही है कि अपनी माँ, सुंदरी को राजरोगी पड़ने पर उसे थप्पड़ मारने केलिए हाथ उठाता है।

सुंदरी के माँगने पर उसके घर में पेरिस, प्रेस, रोम और नेपुल्स आदि की सुंदरता भर देने का वादा करता है। वह इतना उल्लू का पट्ठा है कि अपनी माँ की अंत्य क्रियाओं को हाजिर् होने के बिना, सुंदरी के घर में खूब पीकर सोजाता है। गोपाल की आँखें तभी खुलती हैं जब सुंदरी अपने की कोठी वान रामु से उसके लिए अलग सामान काम में लाने को कहती है। वह सुंदरी को आस्तीन का साँप तभी समझता है, जब वह धक्के मारकर, घर से बाहर निकालकर दरवाजा बंद कर देती है। वह अपनी पत्नी को ठुकराने के कारण अब वह न घर का बनता है न घाट का। सुंदरी की चलाई हुई अठखेलियों के फल से वह कोढी, अंधा, और लँगड़ा बन जाता है। वह इतना गोबरगणेश बन जाता है कि स्वयं उसकी पत्नी भी उसे नहीं पहचान सकती। अबकी कस्तूरी को याद करके खूब पछताता है। जब इंदिरा अपने निज-स्वरूप जानकर अपने लिए पलक बिछाती है, तब वह अपने को अयोग्य कहकर इंदिरा और रमण के हाथों को जोड़ना चाहता है।

गोपाल के चरित्र चित्रण के द्वारा हमें यह ज्ञात होता है कि पाश्चात्य सभ्यता में ही अपनी भलाई है, यों समझकर माँ, पत्नी और घरवालों को ठुकरानेवाले अक्ल के दुश्मनों केलिए गोपाल की तरह सत्यनाश होना सोलह आने सच है।

<u>रमण</u> :—

रमण गोपाल का दोस्त है और एक साधारण भारतीय युवक है। वह भारतीय रीति-रिवाज, वेष-भूषा, बोल-चाल आदि का पुजारी है। वह श्रमी लोगों के प्रति अधिक आस्था दिखाता है। इसलिए अपने दोस्त गोपाल से श्रमियों के बारे में बोलने

का अनुरोध करता है। मेहतरों का संघ स्थापित करके, उनका उद्धार करना चाहता है।

वह अपने दोस्त गोपाल को सुधारने केलिए अपनी शक्ति भर कोशिश करता है। जब इंदिरा सु फाँसी लगाकर मर जाना चाहती है, तब उसकी रक्षा करता है। वह प्राणिहिंसा को रोक कारुण्य संघ का सदस्य बन जाता है। गोपाल इंदिरा से हाथ जोड़ने केलिए तंग देने पर वह मना कर देता है। वह एक सच्चा दोस्त और समाज सुधारक है।

<u>राम</u> :—

राम सुंदरी के घर का नौकर और एक चतुर युवक है। दीन दुःखियों के प्रति वह दया दिखाता है। गोपाल को खाँसी का रोग बढ़ने पर उसे सिगरेट पीने से मना करता है। इंदिरा की दयनीय स्थिति देख उसका हृदय पिघल जाता है। सुंदरी गोपाल को ठुकराते देख, उसकी दयनीय स्थिति पर वह पिघल जाता है।

<u>पुन्नय्या</u> :—

पुन्नय्या इंदिरा का पिता और गोपाल का मामा है। गोपाल न मानने पर, उसे समझा बुझा कर अपनी बेटी और गोपाल का विवाह कर देता है। गोपाल अपनी बेटी को ठुकराते देख वह आँसू पीकर रह जाता है। ~~गोपाल अपनी~~ वह अपनी बेटी की दयनीय स्थिति को याद करते करते मर जाता है।

<u>गामा-टिप्-टाप</u> :—

'मामा' वरकालु का साथी है। गोपाल के यहाँ धन, व्यय सब कुछ भर पूर होते समय, उसे चुंगल में लाने केलिए सुंदरी को सलाह देता है। जब गोपाल दो कौड़ी का आदमी बन जाता है, तब वह गोपाल को घर से बाहर निकालने केलिए

सुंदरी को बार बार तंग करता है। वह तो बढ़ते हुए समाज के लिए कोढ़ा सा साबित होता है।

सुब्बाराव :—

वह तो सिनेमाओं का पुजारी है। वह एक गँवार का लड़का होने पर भी प्रोड्यूसर बनना चाहता है। वह अपने सिनेमा में सुंदरी को हीरोइन और 'मामा-टिप्-बाप्' को दर्शक बनाना चाहता है। लेकिन गोपाल के द्वारा उसका ही निज-स्वरूप जानकर उसको छोड़ देता है।

स्त्री-पात्र (सुंदरी) :—

सुंदरी एक वेश्या और गोपाल की प्रिया है। वह अपनी चमक दमक से गोपाल को चुंगल में लेकर उसे अपनी उंगली पर नचाती है। गोपाल को खाँसी का रोग बढ़ने पर उसे सिगरेट पीने से मना करती है, क्यों कि सुंदरी को उस से कुछ आशा है। गोपाल को जब कोढ़ी का रोग पड़ता है, तभी से वह उसके प्रति आस्तीन का साँप सी काम आती है। वह इतनी दूषित है कि पवित्र मूर्ति रमण और इंदिरा के सिर पर अजब यौन विष मढ़ देती है। जब उसे सिनेमा में हीरोइन का वेश मिलता है, तब वह गोपाल की आँखों में धूल झोंकना चाहती है, बल्कि आप ही हवाई-जहाज के प्रभाव में चल बसती है।

इंदिरा गोपाल की पत्नी और एक असामान्य भारतीय नारी है। वह प्राचीन भारतीय रीति-रिवाजों की पक्की पुजारिणी है। वह एक पतिव्रता नारी है। उसके पति उसे ठुकरा देने पर भी, वह अपने पति को दूसरों के सामने नीचा दिखाना नहीं चाहती। वह अपने पति के चरण कमलों के यहाँ मर मिटने में ही अपने को

धन्य समझती है। इसीलिए वह अपने पति को छोड़, पिता के साथ जाना नहीं चाहती।

सुंदरी के अपने सिर पर अफवाह मढ़ने पर अपने कर्मों पर आँसू भर लाती है। पड़ती हुई तकलीफों से तंग आकर वह फाँसी लगाकर मरना चाहती है। अपने पति को कोढ़ी का रोग चढ़ने पर भी वह उसके लिए पलक बिछाती है। जब गोपाल गोबर गणेश बनाकर भूख मिटाने केलिए गालियों में तड़पता फिरता है, तब उसके लिए वही आँख की लाठी बनती है। गोपाल जब रमण से उसका हाथ जोड़ना चाहता है, तब वह बिलकुल स्वीकार नहीं करती। वह एक आदर्श पवित्र भारतीय नारी है।

शांतम्मा :—

शांतम्मा गोपाल की माँ और प्राचीन भारतीय रीति रिवाजों की अनुगामिनी है। गोपाल न मानने पर भी शांतम्मा उसे अंकुश देकर अपने भैये की बेटी इंदिरा से उसका घर आबाद करती है। वह अपनी बहू की बुरी अवस्था पर दुःखित होती है। वह एक आदर्श माँ है जो मरते दम तक अपने बेटे को बुरे आदतों से बचाकर अपनी बहू का दुख दूर करना चाहती है।

वरहालु :—

वरहालु सुंदरी की माँ और एक दुष्ट नारी है। गोपाल गाँठ के पूरे होने पर उसे वश करने केलिए अपनी बेटी को सलाह देती है और वह दई का माला बनने पर उसे घर से निकालने केलिए सुंदरी को तंग करती है।

कथोपकथन :—

कथोपकथन नाटक का प्रमुख अंग है। इस नाटक के कथोपकथन अत्यंत मनोरम, दर्शनीय और प्रभावोत्पादक है।

अठ्ठोलियों में जब गोपाल एक योगी भिखमांगने वाले की गर्दन नाप देता है तो उस समय के राम का कथन गोपाल पर ही नहीं सारे पाठक गण पर भी उसका असर पड़ता है। उसका कथन है —— ''एप्पुडो बयलुलो उन्नाडु एल्लुन्डगा तैतिय-कुंआ कलादेवीनि कोलिचाडु गानीलु। इप्पुडु कालं काल बौव्विंदि, कल्लु पोयायि। ओल्लंता कुल्लि पोयिंदि।'' (कब में होते समय उसने अपने अस्तित्व को बेचकर कला देवी की आराधना की है। अब उसका समय बदल गया। आँखें फट गयीं। सारा शरीर बिगड़ गया।) अठ्ठोलियों में इस कथन का सत्य छिपा हुआ है और आगे चलकर गोपाल के जीवन में वही कथन सत्य निकलता है।

इंदिरा और उसकी आत्मा के बीच संघर्ष चलता है। उसकी आत्मा अपने सुहाग को तोड़ने केलिए बार-बार चेतावनी देने पर भी, वह उसकेलिए उद्युक्त नहीं होती। मांगल्य के महत्व के बारे में उसका कथन दर्शनीय है —— ''ना चल्लु-कल्लु वल्ल कादु। तर तरालुगा मेघावुलु नेलकोल्पिन धर्म मिदि। युग युगालुगा युवतुल शीला-निकि, सौभाग्यानिकि चिह्नंगा निलिचिन पवित्र मांगल्य मिदि। संसार जीवितानिकि संजीवनि ई तालि। दीपान्नी, प्रजलन्नी, सन्मार्गंगा, ब्रतुकुबाटलो नडिपिस्तुन्न दिव्य ज्योति।'' (मुझ से नहीं हो सकता। यह सौभाग्य का धर्म कई पीढ़ियों से ज्ञानी लोग अपनाते हुए आये हैं। युग युगों से स्त्रियों के सौभाग्य और शील संपत्ति के रूप में खड़ा हुआ पवित्र मांगल्य है यह। सांसारिक जीवन केलिए यह संजीवनी के समान है और यह एक ऐसी दिव्य ज्योति है जो लोगों को जीवन मार्ग में सीधे चला रही है।) इस कथन से विदित होता है कि भारतीय नारी वह महान दिव्य शक्ति है जो दुखों को भी अपने लिए सुख समझकर अपने मांगल्य की रक्षा करना ही अपना लक्ष्य समझती है। नारियों केलिए यह बड़ा प्रभावोत्पादक है। इस प्रकार नाटक में

वर्णित कथोपकथन बड़ा ही प्रभावोत्पादक और अनुपम है।

वातावरण (देश काल परिस्थितियाँ) :—

वातावरण के अंतर्गत देश काल परिस्थितियों का उल्लेख भी किया जाता है। हमारे देश में अंग्रेजों के आगमन के बाद भारत की रीति-रिवाजें कुछ बदल गयी हैं। आजकल कई भारतीय, पाश्चात्य देशों में पढ़कर उन्हीं आदतों का अनुकरण करने में अपनी उच्चता मानते हैं। इसलिए नाटककार अंग्रेजी शिक्षा व उनकी रीति-रिवाजों का और भारतीय रीति-रिवाजों के तुलना करता है। इंदिरा, पुल्लम्मा और शांतम्मा के द्वारा ग्रामीण वातावरण सूचित है। गोपाल के द्वारा पाश्चात्य सभ्यता की झलक सूचित है। उनके द्वारा पाश्चात्य लोगों की रीति-रिवाजों, बोल-चाल, वेशभूषा आदि स्पष्ट परिलक्षित हैं। इसके अलावा कई पीढ़ियों से आती हुई भारतीय ~~नारी~~ परंपरा का उल्लेख है। स्त्री जीवन की विशाद कहानी इस में वर्णित है। परंपराओं से आती हुई स्त्री की गंभीरता और पवित्रता इंदिरा के चरित्र-चित्रण से विदित होता है। गोपाल के चरित्र-चित्रण से आजकल बदलती हुई भारतीय सभ्यता का उल्लेख मिलता है।

उद्देश्य :—

पाश्चात्य सभ्यता के सामने भारतीय परंपरा का निरूपण करना ही इस नाटक के लिखने में नाटककार का मुख्योद्देश्य है। अपने पति को ही सर्वस्व समझकर आत्म समर्पण करनेवाली स्त्रियाँ विलायतों में कम दिखाई देती हैं। लेकिन भारतीय नारी कई पीढ़ियों से अपने पति के चरण कमलों के यहाँ मर मिटने में ही अपने जीवन को धन्य समझती आयी है। लेकिन पाश्चात्य लोगों के आगमन के कारण भारतीय नारी की रीति-रिवाज, वेशभूषा, बोल-चाल आदि में कुछ परिवर्तन आ गया है। इंदिरा के

चरित्र-चित्रण के द्वारा भारतीय नारी की पवित्रता को जगाना ही नाटककार का लक्ष्य है। विलायतों में पढ़कर वहाँ की आदतों का अनुकरण करके, उनको अपनाने में अपनी उच्चता समझने वाले भारतीय युवक भी हमारे समाज में दिखायी देते हैं। गोपाल के चरित्र-चित्रण के द्वारा ऐसे व्यक्तियों की आँखें खोलना ही इस नाटक के लिखने में नाटककार का ध्येय है। ''पराई स्त्री के अलावा अपनी पत्नी के सान्निध्य में ही पुरुष केलिए शाश्वत गौरव और सुख है और पराई स्त्री की चमक दमक में पुरुष का सत्यानाश होना सोलह आने सच है।'' इस सत्य को साबित करना ही इस नाटक का मुख्योद्देश्य है।

<u>भाषा-शैली</u> :—

यह नाटक ऐसे मनोहर शैली में लिखा गया है कि पाठकगण, दर्शकगण एक दम नाटक के प्रति आकृष्ट हो जाते हैं। गोपाल की कथनों की शैली इतना मनोहर है कि नट अपने पात्र के पोषण करने में सफल हो जाता है। इस नाटक में प्रयुक्त मुहावरें और कहावतें नाटक की शैली में आकर्षणीय सजीवता लायी है। जैसे ——

1) पैत्य रोगानिकि पँचदार चेदा? (पित्त रोगी केलिए शक्कर से नफरत क्या?)

2) पन्डुकोब्बिन पल्लनी पन्डमौब्बिन पडुचुनी मंचि कापु लेकपोते पाडवुतायट (पके हुए फल को, वय में हुई स्त्री को अच्छी तरह रखवाला नहीं हो तो बिगड जाते हैं।)

3) पेरुविव श्रीरंगनीतुलु चेसेवि बूतुलु (ऊँच निवास नीची करतूत)

4) पर्रेनु नीटिलो पेट्टि कोम्मुलु बेरमाडिनट्टु (पशु पानी में रहे उस के सींगों से सौदा करना)

5) ओडलु बल्लगुट, बल्लु ओडलगुट (जहाज गाडी बने और गाडी जहाज बने)

6) रौतु गुम्मिलकि मोई वाले, गुर्रै गौयुम रौट्टेलु कावालिट (मालिक केलिए सने

हो नहीं तो थोडा गेहूं की रोटी मांग)

भाषा सरल, सुबोधक, प्रभावोत्पादक और सजीव है। 'रक्त कन्नीरु' (रक्तिम-आँसू) नामक यह नाटक श्री पद्मराजु की अनुपम कृति है।

3·1·2 बिकारि रामुडु (भिखारी राम) :—

श्री पद्मराजु कृत यह नाटक सामाजिक दृष्टिकोण से सरस बन पडा है। श्री पद्मराजु सामाजिक नाटकों को लिखने में सिद्ध हस्त हैं। इनके नाटकों में सामाजिक कुरीतियों का खंडन-मंडन थे। ये नाटक सुधारात्मक दृष्टिकोण के हैं। भारतीयों में फैली हुई पाश्चात्य सभ्यता की तडक-भडक को मटियामेट करना ही इनके नाटकों का प्रधान लक्ष्य है। यह नाटक, धन से मदमत्त होकर अपने बाप को बाप न बतानेवाले और अपने बच्चे को बच्चा कहने में लज्जित होनेवाले, उल्लू के पट्ठों केलिए एक चेतावनी है।

आँखों में चरबी छा जाने के कारण भगवत्स्वरूपिणी माँ को मारनेवाले अक्ल के दुश्मनों का उल्लू सीधा करता है यह नाटक। नशे में चूर होकर अपनी पत्नी, और माँ-बाप पर मुंह चलानेवाले मूर्खों की आँखें खोलता है यह नाटक। इस नाटक की और एक विशेषता है कि 'सरसा' वेश्या होने पर भी धन केलिए अपना मान नहीं बेचती। वह एक अबोध, कुरूपी, व्यक्ति को दिलोजान से प्रेम करती है। वह तो एक आदर्श नारी है।

<u>कथावस्तु</u> :—

पूजामंदिर बिजली की बत्तियों से सजा होता है। धनवान कृष्णय्या अखंड ज्योति जगाता दिखायी देता है। कई सालों के बाद कृष्णय्या की पत्नी, कुमुदम्मा

के पाँव भारी होते हैं। सुब्बम्मा के प्रसूति का समय है। अपनी पत्नी की खैरियत केलिए वह भगवान गोपालकृष्ण से दयार्द्र भाव से प्रार्थना करता है।

डाक्टर से अपने घर में यमज पैदा होने की बात सुनकर कृष्णय्या अंग-अंग फूले नहीं समाता, बल्कि जब वह यमज को देखता है, तब हक्का बक्का रह जाता है। कारण यह है कि यमज में एक बच्चा तो बहुत सुंदर है और दूसरा कुरूपी। कृष्णय्या इस कुरूपी बच्चे को अपना बच्चा कहने से, अपने दोस्तों के बीच शान में फर्क समझता है। इसलिए उस बच्चे को माँ से अलग करने केलिए डाक्टर से अनुरोध करता है।

डाक्टर उस कुरूपी बच्चे को दयासागर स्वामीजी के हवाले करता है। स्वामीजी डाक्टर वेंकम से भविष्यवाणी करता है कि "इस कुरूपी बच्चा ही सकल गुण संपन्न बन सकता है और वह सुंदर बच्चा ठन ठन गोपाल हो सकता है।"

कृष्णय्या के कुरूपी बच्चा 'भिखारी राम' के नाम से स्वामीजी के यहाँ पलकर पच्चीस साल का युवक बनता है। वह शारीरिक रूप से स्वस्थ होने पर भी अक्लमंद नहीं निकलता। स्वामीजी जितनी कोशिश करते, पर भी वह पढा-लिखा नहीं बन सकता। वह बडा अबोध बन जाता है। ब्रह्म, विष्णु और शिव स्वामीजी के अन्य शिष्य अपनी माँ के मजाक उडाने पर राम उन्हें थप्पड मारता है। स्वामीजी अपनी माँ को रूपवती कहने पर वह बाग बाग हो जाता है।

मोहन कृष्णय्या और सुब्बम्मा के अँधेरे घर का उजाला है। वे बडे लाड प्यार से अपने बच्चे का पालन-पोषण करते हैं। स्वामीजी की भविष्यवाणी के अनुसार कृष्णय्या का रूपवान बच्चा बुरी आदतों में फँस जाता है। वह खूब पीकर अपने दोस्त राजन के साथ गलियों में साँड की तरह घूमता फिरता है। वह अपने घर

का आदर धूल में मिलाने लगता है। जिस बच्चे के ऊपर सुभम्मा ने मन के लड्डू खाया, वही बच्चा आज उसके शान में फर्क लगा रहा है।

स्वामीजी के गोलोक सिधारने का समय आसन्न हो जाने के कारण वे राम को बुलाकर अपनी खिचड़ी अलग पकाने की सलाह देते हैं। राम अपने प्रिय, पूज्य गुरुजी को छोड़ कहीं जाना नहीं चाहता। इसलिए गुरुजी की सलाह वह स्वीकार नहीं करता। स्वामीजी पाँच रुपये और डाक्टर वैदनम के नाम पर एक चिट्ठी देकर उसे अपनी माता की खोज में लग जाने का आदेश देते हैं और वे गोलोक सिधारते हैं। राम अपने गुरुजी के लिए आठ-आठ आँसू रोता है।

राम चिट्ठी लेकर डा० वैदनम के घर आता है और उनके मर जाने का समाचार सुनकर वह छाती थाम कर रह जाता है। वह वैदनम की बेटी वनजा को चिट्ठी दिखाता है। वनजा उसके परिचय, जन्मतिथि, आदि के बारे में पूछने पर वह कुछ जवाब नहीं दे सकता। बेचारा राम अपने गुरु के सिवा और कुछ नहीं जानता। राम वनजा से उसके घर में एक नौकर के रूप में अपने को रखने की याचना करता है। वनजा स्वीकार नहीं करती।

सुभम्मा अपने बेटे की खोज में बाहर निकलती है। राम को देखते ही उसमें पुत्र वात्सल्य पैदा होती है। राम भी उसे 'माँ' नाम से पुकारता है। सुभम्मा अपने बेटे की स्थिति बताती है तो राम, मोहन को खोजकर उसके हवाले करने का बीड़ा उठाता है। राजन और मोहन के चुंगल से अपनी रक्षा करने के लिए सरसा राम के सामने आँचल पसारती है तब वह उन मूर्खों को धक्का देकर उसकी रक्षा करता है।

सरसा राम के भोले भाले स्वभाव से आकृष्ट हो जाती है। इसलिए वह राम

को अपने घर ले जाकर पनाह देती है। राम अपनी माँ से मिलने केलिए उद्विग्न होता है। नरसा उसके सिर खपाने पर भी नहीं सुनता। वह नरसा के द्वारा मोहन का पता लगाता है, और वह न मानने पर उसे अपनी भुजाओं पर डालकर कुन्द्रम्मा के घर ले जाता है। राम स्वस्थ होने के कारण उसकेलिए ऐसा काम करना बायें हाथ का खेल है। राम अपनी माँ से इच्छा प्रकट करता है तो कुन्द्रम्मा आशीर्वाद देती है कि तुम्हारी माँ तुम से जल्दी मिलेगी।

राजन् नरसा के माँ नागम्मा की तलवे चाटता है। बात यह है कि उस से लल्लो पत्तो करके उसकी बेटी नरसा को अपने दोस्त मोहन के वश करना चाहता है। नरसा, वेश्या होने पर भी वह कभी अपनी आन नहीं खो बैठती। वह केवल निष्कलंक राम को ही अपने हृदय पटल पर स्थान देना चाहती है। वह बड़ी कोशिश करके नर्स मरियम्मा के द्वारा पता लगाती है कि कुन्द्रम्मा ही राम की माँ है। यह जानकर कि "कुन्द्रम्मा मेरी माँ है।" राम अँग-अँग फूले नहीं समाता। वह तुरंत अपनी माँ के यहाँ जाने केलिए उद्युक्त हो जाता है, बल्कि नरसा और मरियम्मा के सिर खपाने पर, अपने घर के नौकर के नाते अपने माँ-बाप की सेवा शुश्रूषा करना चाहता है। जैसे-तैसे वह अपने घर का एक नौकर बन जाता है। वह अपना पता गुप्त रूप में ही रखना चाहता है।

वह मोहन को बुरी आदतों से बचाने केलिए कृष्णय्या से अनुरोध करता है कि "आगे चलकर मोहन के हाथ में धन न पड़ जाय। जब उसके हाथ में धन नहीं, उसे शराब पीने का मौका ही नहीं मिलेगा। धन ही उसका सत्यनाश करता है।" कुन्द्रम्मा औरक कृष्णय्या उसकी सलाह स्वीकार करते हैं। राम अशिक्षित होने के कारण उसे पैसे की गिनती मालूम नहीं है।

मोहन और राजन बिल्लियों की तरह अंदर पहुँचते हैं, और लोहे की पेटी खोलकर गहनें और धन को कपड़े में गठरी बाँधने लगते हैं तो राम आँख चुराकर उन दोनों की चेष्टाओं को देखता रहता है। राम को देखकर दोनों भौंचक रह जाते हैं। निश्चिन्तलोग नहीं होने के कारण राजन गहनों और धन को फिर पेटी में रखकर ताला लगाता है। राम उन से ताला छीनकर कुप्पम्मा के यहाँ रखता है। राम उन से ताला छीनकर कुप्पम्मा के यहाँ रखता है और उन के पैर दबाते हुए वहीं सो जाता है।

मोहन अपने माँ-बाप को ही अपने सुख केलिए राड़ा समझता है और उन्हें पिशाच तक कह देता है। वह उन से आज की आज में एक हजार रुपये देने केलिए तंग करता है। कुप्पम्मा समझाती है, पर उसके कान पर जूँ न रेंगता। वे धन देने से इनकार करते हैं तो मोहन धमकी देता है कि "यदि आप एक हजार रुपये न दें तो मैं आत्महत्या कर डालूँगा।" कृष्णय्या और उसकी पत्नी, मोहन की धमकी से घबराकर, उसे हजार रुपये देने केलिए तैयार हो जाते हैं। इतने में मोहन आकर कृष्णय्या से ताला छीनकर, मोहन को रुपये देने नहीं देता। कृष्णय्या उस पर आँखें लाल करता है तो वह बीड़ा उठाता है कि "मोहन कहीं भी जाय, यदि मैं उस को तुम्हारे हवाले न कर सकूँ तो मेरा नाम राम ही नहीं।" मोहन उस पर दाँतों किटु किट्टाता चल जाता है।

नागरत्नं अपनी बेटी सरसा राम से काला मुँह करने का झूठी गवाही पुलिस इन्स्पेक्टर सरसा को गिरफ्तार करने आता है तो सरसा के आँचल पसारने पर राम पुलिस इन्स्पेक्टर से धमकी देकर कहता है कि "सरसा मेरी पत्नी है।" अपने को राम 'पत्नी(कहने से सरसा का दिल बाग-बाग हो जाता है। वह राम को

दिलोजान से प्रेम करती है।

राजन तो पत्नल में छेद करना चाहता है कि वह अपने दोस्त मोहन की पत्नी वनजा को अपने वश करना चाहता है। इसलिए वह वनजा की नर्स मरियम्मा से अपनी महानता का डींग मारता है। इतने में वनजा आकर, उसे खूब खरी खोटी सुनाती है। राम के आगमन से वह भीगी-बिल्ली बनकर भाग जाता है।

राम, कुमुदम्मा को दवा देने केलिए डा० कमला को घर लाता है। मरियम्मा के द्वारा वनजा मोहन की पत्नी जानकर राम डींग और फूलो नहीं समाता। जब भी मोहन अपनी पत्नी को घर ले आने की वजह से, मूर्ख बनकर, अपनी माँ को पिशाच कहकर थप्पड मारता है, तब राम आपे से बाहर हो कर उसे मारता है तो वह गश खाता है।

अपने बेटे को एक नौकर मारते गाँव के पूरे कृष्णय्या सह नहीं सकता। वह राम पर आँखें लाल करता है और बाहर जाने तक कह देता है। राम के मनुहार करने पर भी वह नहीं सुनता। आखिर राम ~~रोकर~~ रोता चला जाता है। राम जाते देख कुमुदम्मा आठ आठ आँसू रोती है। मरियम्मा के द्वारा, राम को बाहर निकालने का समाचार सुनकर नरसा कृष्णय्या के परदा फाश करती है। कुमुदम्मा बहुत अनुरोध करने पर मरियम्मा स्पष्टतः कह देती है कि "राम आप का बडा बेटा है। आप को अमर्ज पैदा हुए। बडे बेटे को गोबर गणेश समझकर कृष्णय्या जी ने उसे आश्रम ~~में~~ भेज दिया।" अपनी करतूतों पर ~~कर~~ कृष्णय्या अंगुली काटता है। कुमुदम्मा अपने बडे बेटे राम से मिलने केलिए बाहर निकलती है। कृष्णय्या और मरियम्मा उनका अनुसरण करते हैं।

इसी मुआवसर को पाकर राजन और मोहन चोरों की तरह अंदर घुसते हैं

और धन और गहनें लेकर भाग जाना चाहते हैं। कुब्बम्मा उन्हें पकड़ता है, लेकिन वे उसे धकेल कर भाग जाते हैं। कुब्बम्मा से यह समाचार जानकर राम उनका पीछा करता है।

रात का समय है। राजन मोहन के प्रति मौजी बुरी बन जाता है। वह तो पत्तल में छेद करना चाहता है। इसलिए वह मोहन को एक पेड से बाँधकर धमकी न गठरी हडप कर भाग जाने लगता है तो इतने में राम आकर उसका सामना करता है। राजन राम को धमकी देता है कि "यदि मेरे पास आओगे तो गोली चलाऊँगा।" राम नहीं सुनता और उस से धन की गठरी छीनना चाहता है तो वह गोली चलाता है। राम भी उसके पेट में धक्का देता है। दोनों गिर जाते हैं।

अपनी माँ के द्वारा मोहन का समझ पाता है कि राम अपना भैया है। वह उँगुली काटता है। राम मरणावस्था में अपने भैया और वनजा के हाथों को जोडता है। टिम टिमाता हुआ उसका जीवन दीपक बुझ जाता है। कुब्बम्मा और कृष्णय्या अपने बडे बेटे की मरणावस्था पर फूट फूट कर रोते हैं।

वनजा राम को दिलोजान से प्रेम करती है और उसकी मृत्यु पर आठ आठ आँसू रोती हुई कहती है — "राम। तुम भगवत्स्वरूप हो। हम तो क्षुद्रमानव हैं। हम को सुधारने केलिए तुम हमारे बीच में कभी कभी पैदा होते हो। हम तुम्हारे अस्तित्व को न पहचान कर, तुम को खो बैठते हैं। बाद हम अपनी करतूतों पर पछताते हैं। हम क्षुद्रमानव हैं, क्षुद्रमानव।"

<u>चरित्र-चित्रण (भिखारी राम)</u> :—

भिखारी राम कृष्णय्या और कुब्बम्मा का बडा बेटा है। वह कुरूप होने के

कारण आश्रम में सौंप दिया जाता है। दयासागर स्वामीजी के सान्निध्य में, वह पच्चीस साल का युवक बन जाता है। वह शारीरिक रूप से स्वस्थ होने पर भी अक्लमंद नहीं निकलता। वह बडा अबोध बन जाता है। स्वामीजी जितनी ही कोशिश करते हैं, पर वह पढा-लिखा नहीं बन सकता। वह बचपन से ही अपनी माँ के प्रति इतनी श्रद्धा रखता है कि यदि कोई अपनी माँ की सुंदरता के बारे में चुटकियाँ लें तो वह उसकी हड्डी पसली दुरुस्त कर देता है। वह अपने गुरुजी के प्रति इतनी आस्था रखता है कि वह गुरुजी के प्रति इतनी आस्था रखता है कि वह गुरुजी के मरते दम तक उनके चरण कमलों को नहीं छोडता।

वह इतना उदार है कि कुमुदम्मा अपने बेटे की हालत कहने पर वह उसे खोजकर उसके हवाले करने का बीडा उठाता है। मोहन और राजन सरसा के सीना जोरी करते देख वह उसकी आन बचाता है। वह अपनी माँ केलिए लालायित होता है। मरियम्मा के द्वारा कुमुदम्मा को अपनी माँ जानकर राम अंग-अंग फूले नहीं समाता। वह तुरंत माँ के यहाँ जाने केलिए तैयार हो जाता है, बल्कि सरसा और मरियम्मा के समझाने पर कुमुदम्मा के यहाँ एक नौकर के नाते रहने लगता है। सरसा आँचल पसारने पर राम उसे अपनी पत्नी कहकर पुलिस की हथकडियों से उसकी रक्षा करता है। वह अपने भाई को बुरी आदतों से बचाने केलिए अपनी शक्ति भर कोशिश करता है। आखिर उसको बचाने केलिए ही राजन की गोली खाकर गोलोक सिधारता है। वह एक आदर्शपुत्र, अबोध और निष्कलंक नौजवान है।

<u>मोहन</u> :—

मोहन कृष्णय्या और कुमुदम्मा का छोटा बेटा है। राम आश्रम में सौंप दिये

जाने के कारण वही कृष्णय्या और कुन्नम्मा के अँधेरे घर का उजाला बन जाता है। वह अपनी पत्नी की उठती जवानी पर धूल झोंककर अपनी अठखेलियों से अकड़ जाता है। वह नशे में चूर होकर अपने बुरे दोस्त राजन के साथ गलियों में साँड की तरह घूमता फिरता है। वह अपने घर का आबरू मटियामेट कर देता है। वह इतना ठन ठन गोपाल बन जाता है कि उस से कब में पच्चीस साल की बड़ी मरियम्मा से चुटकियाँ लेना चाहता है। वह नागरत्नं को मुँह मियाँ मिट्ठू बनाकर उसकी बेटी सरला को अपना वश करना चाहता है। वह नागरत्नं और राजन के साथ गाँठ-साँठ करके अपने घर से धन और गहनें लेकर भाग जाता है। जब राजन उसे पेड से बाँध कर धन की गठरी हड़प लेता है, तब उसकी आँखें खुलती हैं और वह अपनी करतूतों पर अँगुली काटता है।

<u>राजन</u> :—

राजन मोहन का बुरा दोस्त है। वह मोहन को अपनी कठपुतली बनाकर उसे अपनी उँगली पर नचाता है। उसकी बुद्धि पत्थल में छेद करने की है। वह मोहन के धन से गुल छर्रे उडाता हुआ, उसकी पत्नी वनजा को अपने वश करना चाहता है। नागरत्नं से चिकनी चुपडी बातें करके उसकी बेटी को अपने दोस्त के वश करना चाहता है। वह मोहन की उँगली पकडकर पहुँचा पकडना चाहता है। इसलिए वह विदेशी भ्रमण की आशा दिलाकर मोहन से चोरी करवाता है। वह मोहन के प्रति मीठी छुरी बन जाता है और उसे पेड से बाँध कर धन की गठरी हडपना चाहता है। राम उसका सामना करने पर उस पर गोली चलाता है और उसका धक्का खाकर गिर जाता है।

कृष्णय्या :— कृष्णय्या अपनी पत्नी के प्रसूति के अवसर पर फँस पडजाता है।

अपनी पत्नी के पेडा पार करने केलिए अलख ज्योति जगाता रहता है। वह अपने कुरूपी बच्चे को आश्रम में सौंपता है। क्यों कि पाँचों नगारों में उसका नाम लिखा हुआ है। वह अपने दोस्तों के बीच इस कुरूपी बच्चे को अपना बच्चा कहना अपने शान में फर्क समझता है। अपने लाडले और सुंदर बेटा अपने घर का आबरू चूल्हे में डालते देखकर, वह छाती पत्थर की करता है। जब सरला उसका परदा फाश कर देती है और मरियम्मा के द्वारा राम अपना कुरूप बच्चा जानता है, तब वह अपनी करतूतों पर पछताता है।

डा0 वंदना :—

डा0 वंदना वनजा के बाप और कृष्णय्या का दोस्त है। कृष्णय्या अपने कुरूप बच्चे को माँ से अलग करने केलिए तंग करने पर वह पहले मगर अगर करता है बल्कि अपनी बेटी को धनवान कृष्णय्या की बहू बनाने का वादा करने पर वह मंजूर करता है। वह दयासागर स्वामीजी के आश्रम में उस कुरूप बच्चे को सौंप देता है। वह मोहन से अपनी बेटी के घर बर आबाद करके स्वर्ग सिधारता है।

दयासागर स्वामीजी :—

दयासागर स्वामीजी बडे तपोधन हैं। कृष्णय्या के बच्चों के बारे में वे जो भविष्यवाणी करते हैं, वही अंत में सच निकलता है। उनके गोलोक सिधारने के अवसर पर वे राम को बुलाकर अपनी खिचडी अलग पकाने की सलाह देते हैं और अपनी माँ-बाप की खोज में लग जाने का अनुरोध करते हैं।

स्त्री-पात्र (सुब्बम्मा) :—

सुब्बम्मा धनवान कृष्णय्या की पत्नी और मोहन और राम की माता है। कई तीर्थ-यात्रा करने के पश्चात उसके पाँव भारी पडते हैं। उसकी प्रकृति उदार

पर ठेस जो बैठती है। राम आश्रम में सौंप दिये जाने के कारण, वह मोहन को ही अपना इकलौता बेटा, घर का आबरू चूल्हे में डालते देखकर, वह छाती थामकर रह जाती है। वह बड़े घर की मालकिन होने पर भी अपने बच्चे को खोजने केलिए इधर उधर घूमती है। राम याचना करने पर वह उसे अपना नौकर बना लेती है और अपने बच्चे के समान उसे प्यार करती है। जब सरला और मरियम्मा के द्वारा राम को अपना बड़ा बेटा जानती है तब उसकी खुशी का ठिकाना न रहा बल्कि अपने पति की करतूतों पर आह भरती है। जब राम राजन की गोली खाकर मर जाता है। तब वह फूट फूट कर रोती है। मातृ-हृदय का एक ज्वलंत उदाहरण है कुमुदम्मा। वह माँ है, गृहिणी है और दयार्द्र है।

डा0 वनजा :—

डा0 वनजा मोहन की पत्नी और डा0 वैदनम की बेटी है। उसकी उठती जवानी पर धूल झोंककर उसके पति गुल छर्रे उड़ाता है। यह देखकर वह छाती थाम कर रह जाती है। राजन अपने प्रति अंटसंट बकते देखकर उसे खरी खोटी सुनाती है। जब अपने पति घर से बाहर जाने केलिए कहता है, तब वह बहुत लज्जित बनती है। कुमुदम्मा और राम के अनुरोध करने पर भी वह वहाँ नहीं रह सकती। वह राम को मृत्यु मुख से बचाना चाहती है बल्कि उसके दवा देने के पहले ही राम के प्राण ~~क्या~~ पखेरू उड़ जाते हैं।

~~नर्स~~ :— मरियम्मा :—

~~—~~ मरियम्मा डा0 वैदनम और उसकी बेटी वनजा की नर्स है। मोहन और राजन अपने को चुटकियाँ लेते देख उनकी मूर्खता पर खूब खरी खोटी सुनाती है। जब राम अपनी माँ केलिए तरसता रहता है, तब उसकी माँ का नाम बताकर उसे संतुष्ट

बनाती है। राम की मृत्यु पर वह आँसू टपकती है।

सरला :—

सरला नागरत्नं की बेटी और एक वेश्या नारी है। वह वेश्या होने पर भी धनवान लोगों को अपने चुंगल में लेकर उनको नामोनिशान करना नहीं चाहती। उनकी माँ उसके सिर खपाने पर भी वह कान नहीं देती। राम की अबोधता, निष्कलंकता और निराडंबरता से वह आकृष्ट हो जाती है और उस से चार आँखें करती है। उनके सामने बड़े-बड़े करोड़ पतियों को भी न्योछावर समझती है। वह राम के माँ का पता लगाकर उसे अपनी ओर आकृष्ट कर लेती है। जब राम पुलिस इनस्पेक्टर के सामने उस से शादी करने केलिए मंजूर करता है, तब उसकी खुशी का ठिकाना न रहा। तभी से वह फूला फूला फिरती है। जब कृष्णय्या राम को घर से बाहर निकाल देता है, तब वह आपे से बाहर होकर, कृष्णय्या के मक परदा फाश कर देती है और अपने प्रिय की खोज में बाहर निकल जाती है। जब राम राजन की गोली खाकर मर जाता है तब वह उस से लिपटकर फूट-फूट कर रोती है।

नागरत्नं :—

नागरत्नं सरला की माँ है। वह तो धन केलिए ईमान बेचती है। जब सरला राम को घर लाती है, तब वह उसे दर्द का बाला समझकर उसका आदर नहीं करती। राजन और मोहन धन की आशा देने पर, प्रान्तल कानून के अनुसार अपनी बेटी को गिरफ्तार कराना चाहती है। वह मोहन और राजन से गाँठ-साँठ करके अपना पता बदलना चाहती है। वह वेश्या की सहज बुद्धि को मौलिक आने निभाती है।

<u>कथोपकथन</u> :—

कथोपकथन नाटक के मुख्य विधा है। इस नाटक के कथोपकथन सरस और प्रभावोत्पादक हैं। इस नाटक में कुछ ऐसे मनोहर कथोपकथन ~~न~~ हैं जिन्हें सुनने या पढ़ने मात्र से श्रोता या पाठक गण पिघल जाते हैं। राम के कथोपकथन उसकी अबोधता का दर्शन कराते हैं। जैसे — "मा अम्मकि नेनकर्लेकपोते पोनी, नाकु मा अम्म कावालिगा। नाकु अम्मनु चूडालनि वुंदि।" (यदि माँ मुझे नहीं चाहती तो भी मुझे माँ चाहिए। मैं अपनी माँ को देखना चाहता हूँ।") यह कथन इतना मनोहर है कि पाठकगण या श्रोता एक दम पिघल जाते हैं। अपनी माँ को ठुकराकर गुल छर्रे उडानेवाले आँखों ~~का~~ के अँधों का उल्लू सीधा करता है यह कथन।

कृष्णय्या अपने बेटे की बुरी आदतों से तंग आकर कहता है कि "रात और दिन इस प्रकार साँड की तरह ~~मलियों~~ गलियों में घूमनेवाले बेटे के होने से न होना ही सुख है।" तब कामाक्षम्मा का मातृहृदय जाग उठता है। इस समय ~~के~~ उसका कथन दर्शनीय है कि "गुड्डिवाडेना कुंटिवाडेना, गुणहीनुडेना, कुरूपिऐना कन्न तल्लिदंड्रुलकु, कट्टुकुन्न पेळ्ळानिकी तप्पदुकदा।" (यदि कोई चाहे अँधा हो, लँगडा हो, गुणहीन हो या कुरूप उस से उसकी पत्नी और माता-पिता नाता नहीं तोड सकते।) कामाक्षम्मा का यह कथन मातृवात्सल्य से पूर्ण है और समाज पर भी बडा प्रभाव डालता है। इस प्रकार इस नाटक ~~के~~ के कथोपकथन सरस, वात्सल्य-पूर्ण और प्रभावोत्पादक है।

<u>वातावरण</u> :—

भारतीय सामाजिक दृष्टिकोण से यह नाटक खरा उतरा है। भारतीय लोगों

का वातावरण इस नाटक में दृष्टिगोचर होता है। पाश्चात्य सभ्यता का असर पडने के कारण भारतीय समाज में परिवर्तन आये हैं, उनका उल्लेख भी इस नाटक में दर्शनीय है।

हाथों में खूब पैसे होने पर बिगड जाने वाले नौजवानों का वातावरण इस नाटक में उल्लेखनीय अंश है। भारतीय बच्चा अपनी माँ व मातृ भूमि को देखने केलिए लालायित हो जाता है। उसका वातावरण नाटककार ने भिखारी राम के चरित्र-चित्रण के द्वारा प्रस्तुत किया है।

पाश्चात्य सभ्यता के अनुगामी होकर आजकल कुछ भारतीय अपनी उच्चता को दिखाने केलिए टाट-बाट से रहते हैं। बच्चा कुरूपी या पियक्कड होने पर अपना बच्चा न कहनेवाले बाप और अपना पिता गरीब या ग्रामीण रीति-रिवाजों का पुजारी होने से अपना बाप न कहनेवाले नौजवान आजकल हमें यत्र-तत्र दिखायी देते हैं। नाटककार ने कृष्णय्या को ऐसे लोगों की कोटि में रखकर आधुनिक भारतीय सामाजिक वातावरण की झलक प्रस्तुत की है।

उद्देश्य :—

सामाजिक दृष्टिकोण से यह नाटक खरा निकला है। ""किसी बच्चा का पैदा होते ही उसके भविष्यत् का निर्धारण नहीं कर सकते। कुरूप बच्चा आगे चल कर आत्मसौंदर्य से सुशोभित हो सकता है और अपने शारीरिक सौंदर्य से आकृष्ट बनानेवाला बच्चा आगे चलकर निकृष्ट या नीच भी बन सकता है। शारीरिक सौंदर्य से किसी व्यक्ति का मूल्यांकन नहीं किया जाता।"" भिखारी राम और मोहन के द्वारा इस नग्न सत्य का परिचय कराना ही नाटककार का मुख्योद्देश्य है।

अपने बाप को बाप कहने में और बेटे को बेटे कहने में लज्जित होनेवाले

अता के दुश्मनों की आँखें खोलना ही नाटककार का लक्ष्य है। हाथों में खूब पैसे होने के कारण, अपनी अठ खेलियों में मस्त रह रहकर पत्नी की उठती जवानी पर धूल झोंकनेवाले नौजवानों का उल्लू सीधा करना नाटककार का उद्देश्य माना जाता है। भारतीय नारी की मातृत्व गरिमा का परिचय करने में भी नाटककार सफल हुए हैं।

शैली :—

इस नाटक की शैली अत्यंत मनोहर, सुबोधक और प्रभावोत्पादक है। बोल-चाल की भाषा है। इस नाटक के कथोपकथन शैली में विशेषता लाते हैं। जहाँ-तहाँ मुहावरें और कहावतों का प्रयोग होने के कारण शैली में मधुरता आयी है। इस नाटक की भाषा भी सुबोधक और सरस प्रतीत होती है। इस नाटक में प्रयुक्त कुछ मुहावरे और कहावतें दर्शनीय हैं :——

1) काकि पिल्ल काकिकि मुद्दु (कौवे की बच्ची कौवे के लिए प्यारी है)

2) ब्रेक इनस्पेक्टर (व्यंग्य के रूप में यह शब्द पशु केलिए प्रयुक्त करते हैं)

3) ईत ब्रतुकु ब्रतिकि ईटि वेनकाल चच्चिनट्लु (उच्च जीवन बिताकर एकदम निचले दर्जे का जीवन बिताना)

4) चच्चि सतमारिना मरीमिरा अनुट (मरते दमतक मारने पर भी न मानना)

5)पुट्टुकतो वच्चिन बुद्धि पुडकलतोने पोयेदि (जन्म से आयी हुई बुद्धि मरने तक नहीं छोड पाती।)

6) चदुवुकुन्नवाडिकन्न चाकलि मेलु (पढे-लिखे आदमी से धोबी ही भला है)

इस प्रकार इस नाटक में कई कहावतों का प्रयोग लक्षित होता है। इसके अलावा नाटककार ने राजन के चरित्र-चित्रण में तमिल भाषा संबंधी शब्दों का प्रयोग

किया है। उदाहरण केलिए :—

रेण्णा (दो आने), ओरूपाय (एक रुपया), सगार्य (गड़ायता), पूडुस्तुनु (जाता हूँ) मरुंद (दवा), आदि। इस प्रकार इस नाटक की भाषा सरल बन पड़ी है।

3·1·3 पापं पंडिंदि (पाप पक गया है) :—

परिचय :—

पापं पंडिंदि (पाप पक गया है) नामक श्री पद्मराजु कृत यह नाटक ~~श्री पद्मराजु कृत यह ना~~ सामाजिक दृष्टिकोण से खरा उतरता है। इस नाटक में समाज में प्रचलित सब कुरीतियों का दिग्दर्शन किया गया है। गाँव के पूरे आदमी अधिक धन की आशा में पड़कर जिस प्रकार गरीब लोगों की आशाओं पर पानी फेरने से नहीं हिचकते, उनका हूबहू चित्रण इस नाटक में मिलता है। धन-वान लोगों की करतूतों से तंग आकर गरीब लोगों में से जिस प्रकार क्रांतिकार पैदा होते हैं, उसका भी मनोहर वर्णन इस में मिलता है। आजकल का कानून धनवानों के पीछे पड़कर जिस प्रकार गरीबों को तंग देने से नहीं हिचकता, उसी का भी वर्णन इस में मिलता है। धनवान लोगों का सामना करने केलिए आदमी को मानव से दानव बनना पड़ता है या सच्चे आदमी से झूठा आदमी बनना पड़ता है।~~या सच्चे आदमी~~ इसका विस्तृत वर्णन इस नाटक में दृष्टिगोचर है।

कथावस्तु :—

इस नाटक का आरंभ शांति के नृत्य से होता है। आदिवराहं गोवशिवं आदि उसे टेढ़ी आँखों से देखते रहते हैं। आदिवराहं दस रुपये का नोट दिखाते हुए उसका हाथ पकड़ना चाहता है। शांति अपनी आन को बचाने केलिए मर

मिटना चाहती है। इसलिए उसको खूब खरी खोटी सुनाती है। इतने में राम आकर उसकी आन बचाता है। वह आदिवराई को छुरी दिखाकर भगा देता है। शांती राम के स्वभाव से आकृष्ट हो जाती है। वे दोनों एक दूसरे के प्रति आकृष्ट हो जाते हैं।

आदिवराई राम पर प्रतिशोध लेना चाहता है। वह अपने मित्र गोविंदस्वामी से अनुरोध करता है कि "राम को नौकरी से हटा दी जाय।" गोविंदस्वामी, आदिवराई और सांबशिवं राम से पिंड छुडाना चाहते हैं क्यों कि वह उनके हरेक बुरे काम में अडचन डालता रहता है। इसलिए वे तीनों मिलकर राम को जेल भेजने की योजना बनाते हैं। वे राम पर अफवाह डालते हैं।कि राम ने ही सांब-शिवं का गोडौन जला दिया है। वह अफवाह राम पर डालने का मुख्योद्देश्य राम को जेल भेजना ही नहीं बल्कि उस गोडौन पर किये हुई आजीविका सुरक्षा संबंधी लाख रूपये की रकम कमाना है। वे अपनी योजना में सफल होते हैं। फलतः राम को जेल जाना पडता है। राम जेल जाता है तो उसका भाई गोपी और शांति फूट फूट कर रोते हैं।

क्रोध से अभिभूत शांती सांबशिवं पर टूट पडती है। वह लस्ती पस्ते करके शांति को शांत कर देता है और उसके हाथ में एक सौ रूपये का नोट रखकर उस से शारीरिक सुख पाना चाहता है। उसकी पत्नी के आगमन से उसके व्यवहार में भंग पडजाता है। सांबशिवं की पत्नी लीला भी एक कुल बोदन है। वह जेल में राम को देखकर उस से शारीरिक सुख पाना चाहती है।

राम का जेल जीवन समाप्त हो जाता है। उसका स्वागत करने केलिए सारे मजदूर लोग इकट्ठे हो जाते हैं। ताता नामक एक आदमी उसके गले में माला

डालता है। राम यह ठाटबाट पसंद नहीं करता। इतने में गोपी आकर सूचना देता है कि "माँ का रोग अधिक हो गया है।" राम और शांती घबरा जाते हैं।

राम अपनी माँ को बचाने केलिए चित्रपट बेचकर धन कमाना चाहता है। इसलिए वह एक चित्रपट लेकर लीला के घर पहुँचता है। लीला तो कामुक प्रवृत्ति वाली होने के कारण वह राम के द्वारा अपनी काम तृष्णा बुझाना चाहती है। लेकिन राम तो कामुक नहीं है। इसलिए वह उसे ठुकरा देता है।

अब राम के सामने दो समस्याएँ उठ खडी होती हैं। एक तो अपनी माँ को मृत्यु मुख से बचाना है। इस केलिए पैसा कमाना है। दूसरी समस्या यह है कि सांबशिव के चुंगल से मजदूर लोगों को बचाना है।

राम हाथ में छुरी के साथ सांबशिव के घर में प्रवेश करता है। वह सांबशिव के गर्दन पर छुरी रखकर एक कागज पर दस्तखत करवाना चाहता है, बल्कि इतने में एस.ऐ. का आगमन होता है। राम चतुरता से एस.ऐ. के चुंगल से भाग निकलता है।

राम अपनी करतूत पर पछताता है। शांती उसे धीरज बाँधती है। इतने में शांती का पिता वहाँ आकर राम को पकड लेता है और पुलिस को बुलाता है। लेकिन राम चतुरता से पुलिस के हाथों से भाग निकलता है। राम अपनी माता को मृत्यु शय्या पर देखकर अचेत बन जाता है। बल्कि वह अपने आप ही धीरज बाँध कर सचेत हो जाता है और अपने भाई को हौसला अफजाई करता है। पुलिस से बचने केलिए वह अपने भाई को छोडकर भागना चाहता है तो इतने में आदिवराह अदालत के अमीना के साथ उपस्थित हो जाता है। आदिवराह राम की जायदाद को अपने काबू में रखना चाहता है तो राम उसे छुरी दिखाता है। पुलिस का

आगमन देखकर वहाँ उपस्थित लोगों की आँखों में धूल झोंककर बड़ी चतुरता के साथ वहाँ से गायब हो जाता है।

शांती राम की दयनीय स्थिति के बारे में कुछ दुःखित होती है और वह नृत्य करके पैसा कमाना भी नहीं चाहती। गोपी के अनुरोध पर 'जमुकुल कथा'' को गाकर पेट पालना चाहती है।

पुलिस लोगों से बचने केलिए राम जादूगर का वेषधारण करता है। वह एक 'सूट वाला' व्यक्ति को ज्योतिष बताते वक्त उसकी जेब में स्थित 'पर्स' को हड़प लेता है। राम अपनी करतूतों केलिए पछताता है बल्कि समाज ने ही उसे ऐसा बनाया है। राम धनवानों को लूटकर गरीबों के कष्ट दूर करना चाहता है। इसलिए वह शांती के साथ भूतों के वटवृक्ष के यहाँ जाता है जहाँ चोरी सोने का सौदा आधीरात में होने वाली है। राम और शांती मिलकर सोने के सौदागर को वेष धारण करता है और उस सौदा केलिए आये हुए आदिवराई और गोविंदस्वामी वनैरह के यहाँ ठग करके दो लाख रुपये लेकर, बदले में एक पेटी देकर भाग जाता है जिस में सोना नाम मात्र केलिए भी नहीं है। सौदागर, आदिवराई और गोविंद स्वामी अपने दुर्भाग्य पर रोते हैं।

राम स्त्री के वेष में और शांती पुरुष के वेष में आधी रात के समय में भूतों के वटवृक्ष के यहाँ मिलते हैं। राम शांती के यहाँ से सोने की पेटी लेकर वाल्टेर केलिए आना हो जाता है। राम के जाने के बाद एस॰ ऐ॰ पीछे से आकर शांती को गिरफ्तार कर लेता है और उस के द्वारा राम का पता लगाने केलिए उसे पुलिस स्टेशन ले जाता है।

राम एक स्त्री का वेष धारण करके कामुक सांबशिवं के साथ छायाचित्र

निकलवाता है जिस के द्वारा सांबशिवं को डराकर वह धन वसूल कर सकता है।

राम गांठ के द्वारा लोगों को धोखा देकर कमाए हुए धन को गरीबों को दान करने लगता है। वह एक भक्त का वेष धारण करके दान करता रहता है। राम एक साहेब का वेष धारण करके सांबशिवं का घर क पहुंचता है। उनका चित्रों को दिखाकर उसे बहुत डराता है और उसके यहाँ से धन वसूल करता है और सांबशिवं की पत्नी लीला को भी उसकी बुरी करतूतों की याद दिलाकर डराता है।

राम तो मजदूरों को घर बनाने केलिए हरेक को पाँच हजार रुपये देने का प्रबंधन निकालता है। इस से सभी मजदूरें गण राम को भगवान का अवतार ही मानते हैं।

राम तो पुलिस अधिकारियों को एक पत्र लिखता है कि "मुझे पकड़ने केलिए आप लोग बहुत प्रयत्न कर रहे हैं। लेकिन मैं तो आप के चुंगल में फंसकर आजीवन भर दुःख झेलना नहीं चाहता। इसलिए मैं टाइम बाम लगाकर आत्म-हत्या कर रहा हूं।" यह तो राम की युक्ति मात्र ही है। राम तो इतना मूर्ख नहीं है जो पुलिस लोगों से डरकर आत्महत्या कर ले। वह पुलिस लोगों को धोखा देना चाहता है। रामदास के नाम से व्यवहरित राम को दानशील समझकर गोविंद-स्वामी, आदिवराह, सांबशिवं और लीला अपने यहाँ स्विस सारे धन को अमा रामदास बैंक करते हैं। इन सब लोगों को धोखा देकर राम मजदूरों केलिए अस्पताल, पार्क और पाठशाला आदि बनाने की योजना करता है। लेकिन राम के निजस्वरूप जानकर लीला चौंक रह जाती है। इस रहस्य को खोलने केलिए घर को भाग जाती है। लीला के द्वारा राम को निजस्वरूप जानकर गोविंदस्वामी, आदिवराह और सांबशिवं छाती थाम कर रह जाते हैं। वे एक निर्णय पर आ जाते हैं कि "भिखारी बनकर

गलियों में घूमने के अलावा राम को मारें या उस से मार खाना ही भला है।

शांती की शादी का दिन है। वह राम की प्रतीक्षा में फूले नहीं समाती। वह उत्साह के साथ एक गीत गाने लगती है। इतने में उसके पिता के लाये हुए अखबार में प्रकाशित राम की मृत्यु का समाचार पढ़ लेती है। वह राम केलिए फूट-फूट कर रोती है। बिना राम के वह अपना जीवन शून्य समझती है। इसलिए पिस्तौल से निशाना लगाकर आत्महत्या कर डालती है। राम का पाप पक जाते हैं। वह तो जीवन में हार कर, धनवानों को लूटकर गरीबों के दुखों का दूर करना चाहता है। इस केलिए वह कई पाप करता है। विधि बलीयसी बन जाती है। अपने प्राण समान शांती की मृत्यु शय्या पर देखकर वह आठ आठ आँसू रोता है। अपनी इच्छा के अनुसार शांती के गले में मंगलसूत्र बाँधकर उसे अपनी पत्नी बनाता है। बाद अपनी पत्नी से मिलने केलिए वह उसी पिस्तौल से गोली मारकर आत्महत्या कर डालता है। टिम टिमाता हुआ राम का जीवन दीपक बुझ जाता है।

<u>चरित्रचित्रण</u> :— (राम)

राम नाटक का नायक है। वह आधुनिक सभ्यता में पला हुआ एक गरीब नवयुवक है। जब आदिवराई शांती का हाथ पकड़कर, उसका मजाक करना चाहता है, तब राम क्रोधाभिभूत होकर उसे थप्पड़ मारता है। भोलीभाली शांती की ओर राम का मन आकृष्ट हो जाता है। फलतः दोनों के बीच में चार आँखें हो जाते हैं।

राम तो समाज का शुभ चिंतक है। अपने साथी लोग दुःख झेलते वह देख नहीं सकता। इसलिए अपने मित्रों के कष्टों के कारक आदिवराई और नीबशियें पर वह टूट पड़ता है। फलतः उसे जेल जाना भी पड़ता है।

अपनी माता से वह इतना प्रेम करता है कि शांती के द्वारा अपनी माता की बीमारी का पता लगाकर वह अचेत बन जाता है और जेल से छुटकारा पाते ही अपनी माता की देखभाल में लग जाता है।

जब लीला राम से शारीरिक सुख पाना चाहती है, तब वह उसे 'डाइन' समझकर ठुकरा देता है। जब सांबशिवं अपने रास्ते में अडचन न लगाने केलिए एक हजार रुपये देना चाहता है, तब वह नहीं स्वीकार करता। वह इतना काठ का उल्लू नहीं है कि ''जो अपने स्वार्थ केलिए अपने मित्रों के घाव में नमक डाले।''

जब आदिवराई और सांबशिवं अपने मित्रों के झोंपडों को उजाड देते हैं, तब वह सह नहीं सकता। उस अत्याचार को दबाने केलिए छुरी के साथ सांबशिवं के घर में प्रवेश करता है। वह तो सांबशिवं के गर्दन पर छुरी रखकर एक कागज पर उस से दस्तखत करवाना चाहता है। इतने में पुलिस के आगमन से, उसे भाग जाना पडता है। उसी दिन से लेकर पुलिस लोग राम को पकडने केलिए तलाश करने लगते हैं। राम पुलिस के हाथों से बचने लगता है। आखिर वह समाज के बंधनों से ऊब जाता है। वह एक निर्णय पर आजाता है कि ''अपनी सुख सुविधा केलिए जो धनवान लोग गरीबों की आशाओं पर पानी फेरने लगते हैं, उनको लूटकर गरीबों के कष्ट को दूर करने का प्रबंध निकालना आधुनिक क्रांतिकार का लक्ष्य है।'' राम अपने निर्णय को सोलह आने पालन करता है।

जादूगर का वेष धारण करके चोरी सोने के सौदागर को ठग करके सोने की पेटी हडप लेता है और उसी सौदागर का वेष धारण करके गोविंदस्वामी और आदि-वराई के यहाँ दो लाख रुपये लेता है। इस के बदले में उन्हें एक पेटी देता है जिस में सोना नाम मात्र केलिए भी नहीं है। एक स्त्री का वेष धारण करके कामुक

तांत्रिकों के साथ छायाचित्र निकलवाता है। उसी चित्र को दिखाकर धमकाते हुए, वह उस से एक लाख रूपये वसूल करता है।

वह तो एक भक्त का वेष धारण करके, इस सारे धन से रामदास की स्थापना करता है जिस के द्वारा गरीबों लोगों को दान देता रहता है। मजदूर लोगों को घर बनाने केलिए हरेक को पाँच हजार रूपये देता है। इस के अलावा गरीब लोगों केलिए एक पार्क, अस्पताल और पाठशाला आदि निर्माण करने का प्रबंध करवाता है। इस प्रकार वह धनवान लोगों को लूटने पर भी अपने लिए एक कौडी भी पास नहीं रखता।

टाइम बाम लगाकर आत्महत्या करने की खबर पुलिस अधिकारियों को एक खत में लिखकर, वहाँ से निकलकर अपना वेष बदल देता है। इस प्रकार वह कानून को भी धोखा देना चाहता है।

अपनी मृत्यु की बात अखबार में देखकर जब शांती आत्महत्या कर डालती है, तब वह उस के गले में मंगल सूत्र ~~आत्महत्या कर डालती है, तब वह उसके गले में मंगल~~ बाँधकर स्वयं आत्महत्या कर डालता है।

इसके चरित्र चित्रण से यह सिद्ध ~~होता~~ होता है कि "जितनी मुसीबतें झेलना पडें, फिर भी आदमी सत्य को छोडना नहीं चाहिए। जब किसी व्यक्ति के आवेश में आकर कुछ कर बैठता है तो जरूर उसे उस पाप का ~~फ~~ फल भोगना पडता है।"

<u>गोपी</u> :—

गोपी राम का भाई है। वह अपनी माँ और भाई के प्रति अत्यंत प्रेम और आस्था रखता है। जब उसकी माँ कलेजे के रोग से पीडित होती है, तब वह उसकी बहुत सेवा-शुश्रूषा करता है। वह अपने भाई को छोडने केलिए एस. ऐ. के पैर

पकड़कर बहुत मनुहार करता है। उसकी माँ मर जाती है तो वह अपने भाई से लिपटकर छाती थाम थाम कर रोता है। वह 'पान' आदि बेचकर अपनी जीविका चलाने लगता है। वह एक अच्छा और अक्लमंद लड़का है।

गुड्डी (अंधा) :—

'गुड्डी' शांती का पिता है। वह शांती को गोद लेता है। वह अंधा होने के कारण अपनी बेटी से नृत्य कराकर भीख माँगने लगता है। वह तो अपनी बेटी ~~के नृ~~ की शान प्रधान नहीं समझता। केवल धन कमाना ही अपना लक्ष्य समझता है। वह तो धन का लोभी व्यक्ति है। इसलिए राम गरीब होने के कारण, उस से नफरत करने लगता है।

आदिवराई :—

आदिवराई एक धनवान व्यक्ति है जो वराई के समान नीच और समाज का कीड़ा है। वह तो एक कामुक व्यक्ति है। शांती का नृत्य देखकर दस रुपये का नोट देना चाहता है जिसके पीछे काम पिपासा निक्षिप्त है। वह राम पर प्रतिशोध लेना चाहता है जो उसके बुरे बर्ताव को रोकता है। आखिर वह अपनी कूटनीति के द्वारा राम को नौकरी से निकलवाता है और जेल भी भेज देता है। वह तो चोरी-सोने का व्यापार करके बड़ा धनवान बनता है। ~~व आखिर सोने-का व्यापार~~ आखिर वह राम के धोखे में पड़कर रुई का वाला बन जाता है। वह तो मजदूरों के झोंपड़ों को हटाकर उनके घाव में नमक डालना चाहता है, बल्कि स्वयं धोखे में पड़कर गरीब हो जाता है।

गोविंद स्वामी :—

गोविंदस्वामी भी आदिवराई के जैसे धनवान व्यक्ति है। वह इतना पाखंड है

कि उसका दोस्त आदिवराह के कहने मात्र से निर्दोष राम को नौकरी से हटा देता है। वह राम को कई प्रकार कष्ट देता है और उसी राम के धोखे में पड़कर अपने सारे धन को खोबैठता है।

सांबशिवं :—

सांबशिवं एक धनवान और बड़ा कामुक व्यक्ति है। जब शांति गली में नृत्य करती है, तब उसे देखकर वह पाँच रुपये का नोट देता है और उसे कोरी दृष्टि से देखता है। उस समय उसकी दानशीलता नहीं दिखायी देती। केवल उसके मन में निहित काम तृष्णा का ही दर्शन होता है। वह इतना उल्लू का पट्टा है कि स्त्री वेषधारण किये हुए राम को स्त्री समझकर उसके प्रेम में पड जाता है। राम के ~~बी~~ जेल जाने में उसका भी हाथ है। वह भी राम के ठगपना में पड़कर गरीब बन जाता है।

~~कुब्बास्वा~~ कुब्बन्ना :—

कुब्बन्ना एक मजदूर नवयुवक है। वह राम का बड़ा दोस्त है। जब राम अपने लिए जेल जाकर वापस लौटता है, तब वह फूले नहीं समाता और उसके गले में माला भी डालता है। जब राम धनवानों को लूटने का प्रण करता है, तब वह अपनी शक्ति भर उसकी सहायता करता है।

स्त्री-पात्र (शांति) :—

शांति गलियों में नृत्य करनेवाली, एक भोली भाली भिखमंगिनी है। वह अपनी आन को बचाने केलिए मर-मिटना चाहती है। आदिवराह और सांबशिवं अपने प्रति बुरा बर्ताव करते हैं तो वह एकदम उन पर आग बबूला होकर खरी-खोटी सुनाती है। अपनी आन को बचानेवाले राम के प्रति उसकी चार आँखें हो

जाती हैं।

वह हरेक विषय में राम का अनुगमन करती है। राम के आदेशानुसार पुरुष का वेष धारण करके आधी रात के समय में भूतों के वट वृक्ष के यहाँ पहुँचती है और दोनों मिलकर सोने के सौदागर को ठगाते हैं। राम केलिए वह सब कुछ करने को तैयार हो जाती है। वह गलियों में नृत्य करके जीवन बिताना नहीं चाहती। यह विषय वह अपने पिता से भी स्पष्ट कह देती है। जब राम का भाई अनाथ बन जाता है, तब वह उसे अपने पास रखकर बहुत आदर करती है। जब राम की मृत्यु का समाचार अखबार में देखती है, तब वह अचेत बन जाती है। बिना राम के अपना जीवन तुच्छ और शून्य समझती है। इसलिए वह स्वयं तुरंत गोली मारकर आत्महत्या कर लेती है। शाँती एक भोलीभाली और अपने पति केलिए सब कुछ न्योछावर करनेवाली एक आदर्श महिला है।

लीला :—

लीला एक पतिता नारी है जो विलासमय जीवन बिताने केलिए अपनी आन को खो बैठती है। वह इतनी धूर्त नारी है कि जब राम उसके घर चित्रपट बेचने आता है तो उस से शारीरिक सुख पाने केलिए तैयार हो जाती है। वह तो आधुनिक सभ्यता की पुजारिन और नवयुवती है। उसका पति सौबशिवें बूढा और कामुक होने के कारण उसके प्र ति वह आस्था नहीं रखती। वह मर्द के वेष गुलछर्रे उडाती फिरती है। उस से किये गये अपराध के कारण उसे कभी कभी जेल जाना भी पडता है। वह इतना मूर्खनारी है कि पार्वती को ही भगवती समझकर अपने सारे गहनों को और धन को रामदास बैंक में अदा करती है। जब यह रहस्य वह जानलेती है, तब वह बहुत चिल्लाती है। कभी कभी इस भारत में ऐसी स्त्रियों का जन्म होना

तो समाज का दुर्भाग्य मात्र ही है।

वासंती :—

वासंती सुब्बन्ना की साली है। वह एक चतुर लड़की है। वह राम के कहने के अनुसार उसकी योजना सफल करने में बहुत सहयोग देती है। अपनी ~~कार्य-कर्ता~~ आदि चातुरी से लीला को मुग्ध करके अपने को भागवती कहलाती है और उसके यहाँ निक्षिप्त सारी संपत्ति को रामदास बैंक में अदा करवाती है। वह सुब्बन्ना से शादी कर लेती है।

कथोपकथन :—

कथोपकथन किसी नाटक का प्रमुख अंग माना जाता है। कथोपकथनों की की विशिष्टता से ही नाटक की महानता लक्षित होती है। पद्मराजु जी अच्छे-अच्छे कथोपकथनों की सृष्टि करने में सिद्धहस्त हैं। उनके कथोपकथन पाठक व प्रेक्षकगण में तन्मयता की सृष्टि करते हैं। इस नाटक में निम्नलिखित कथोपकथन द्रष्टव्य है।

आधुनिक सभ्यता के पुजारी व्यक्ति किसी स्त्री पर आशिक होता है और अपनी कामतृष्णा को बुझाकर उसे यों ही छोड देता है। उस स्त्री का जीवन बरबाद होने पर भी उस में दया नहीं आती। यह तो उसका अन्याय है। इसी नग्न सत्य को एक भोली भाली स्त्री साँती के द्वारा ~~का~~ पद्मराजुजी प्रकट कराते हैं ——

""एमुंदि? एरंगा, बुरंगा, आडपिल्ल वलबडगाने रंटबट्टु, वल्ली पडुशाक, अन्निंदाला सेडगोट्टि नडीदिली ओगेय्यटं"" (क्या है? उसका आशिक होकर, उसका जीवन बरबाद करके उसे यों ही गली में छोड देते हैं)

आज तो सर्वत्र रिश्वत का ही आतंक है। ~~क~~ यदि कोई अफसर रिश्वत नहीं

लेगा तो यहाँ के बडे आदमी या व्यापारी लोग रिश्वत देकर उसे रिश्वतखोरी बना देते हैं। सर्वत्र रिश्वत का ही आतंक है। अफसर लोगों का ही नहीं, उस में जनता का भी हाथ है। इसी सत्य को पद्मराजुजी गोविंदस्वामी के कथन द्वारा यों व्यक्त करते हैं —— "लंचालेना पुच्चुकोवडं चेतकानि ववर्टाल्नि उद्योगस्तुलुगा चेसि — ओयि — मन प्राणालु तीस्तोंदि प्रभुत्वं। ईत न्याय मैन चोटिकडुटे, ओयि — ईऊ नूरेल्ला बागु पडुतुंदंडि?" (रिश्वत को लेना भी न जाननेवाले मूर्खों को काम देकर —— होय —— हमारे प्राणों को तोड रही है सरकार। इतना न्याय-शील यहाँ हो तो यह गाँव कैसे सुधर जाएगी?)

इस आधुनिक संसार में न्याय केलिए स्थान नहीं है। सर्वत्र धन का आतंक जमा हुआ है। सरकारी नौकर भी उन्हीं धनवान लोगों से डरकर उनके कहने के अनुसार ही चलते हैं। यदि वे उनकी बात ही न माने तो उन्हें कई मुसीबतों को झेलना पडता है। गाँठ के पूरे लोग जो कुछ कहें, वही वेद बन जा रहा है। इसी सत्य को पद्मराजुजी राम के कथन के द्वारा इस प्रकार व्यक्त करते हैं —— "मा बोंटि वाल्लकालु मंचिमिटो चेप्पंडि, इनस्पेक्टरगारू? स्वतंत्र भारत देशं लो प्रतिवूरिलो यिलांटि पेद्दमनुषुले स्तुतुन्नारु। प्रभुत्वानिकोदि अंता वल्ल अत्याचारालकु आसरागा वुंटोंदि। मीरु वाल्ल अधिकारान्नि व्यतिरेकिस्ते मिम्मल्नि शंकर गिरि मन्यालु पट्टिस्तारु। पापं मीरु पिल्ला-जेल्ला कलवारु। एंदुक्गलरु? वाल्ल्के नायंडुकुन्नि बतकाल्सिंदि।" (इनस्पेक्टरजी, हमारे जैसे गरीब लोगों केलिए अच्छाई तो क्या है? इस स्वतंत्र भारत देश में हरेक गाँव व शहर में ऐसे बडे आदमी का ही सिक्का चल रहा है। सरकारी ~~नौकरी~~ नौकर भी उनके अत्याचारों को सहायता पहुँच रहे हैं। यदि आप उनके अत्याचारों के तिरस्कृत कर देंगे तो ~~क~~ आप को 'शंकर गिरि मन्यं'

जहाँ जंगली जीव जंतु रहते हैं, जाना पड़ता है। बेचारा आप तो बाल-बच्चों वाले हैं। क्या कर सकेंगे? उनके आश्रय में रहकर ही आप को जीना पड़ता है।

इस प्रकार इस नाटक के कथोपकथन प्रभावोत्पादक मनोरम और सार्थक बन पड़े हैं।

वातावरण :—

वातावरण किसी नाटक व उपन्यास का प्रधान अंग है। सफल नाटक लिखने केलिए नाटककार को उचित वातावरण का प्रदर्शन करना चाहिए। धनवान लोगों की धूर्तता की चाल होकर सच्चे आदमी भी बुरे बन जाते हैं। इसी सत्य का प्रदर्शन करना ही नाटककार का लक्ष्य है। अपने उद्देश्य की पूर्ति केलिए नाटककार ने उचित वातावरण का प्रदर्शन किया है।

धनवान लोगों से डरकर भयभीत होनेवाले व्यक्ति को जीवन भर हारना पड़ता है। उसे कभी भी जीत नहीं मिलती। इस दुनिया में उसका अस्तित्व ही नहीं रह जाता। जब वह इन अत्याचारों से तंग आता है और उन से प्रतिशोध लेने केलिए धोखे को धोखे से ही जीतने का प्रयत्न करता है तभी उसके सामने सब लोग नतमस्तक हो जाते हैं। इस प्रकार धनवान व सेठ साहुकारों से प्रतिशोध लेने केलिए किसी गरीब व्यक्ति को उत्तम राजनीति व कूटनीति को अपनाना चाहिए।" श्री पद्मराजु ने राम के पात्र द्वारा उचित राजनीति व कूटनीति का प्रदर्शन किया है। आधुनिक सभ्यता की पुजारिन लीला के चरित्र चित्रण के द्वारा, पाश्चात्य सभ्यता के कारण पवित्र भारत नारियों में जिस प्रकार का वातावरण आच्छादित है, उसका विस्तृत वर्णन नाटककार ने इस नाटक में किया है।

उद्देश्य :—

हमारी सरकारों ने हमारे लिए कानून बनाया है। वह कानून तो सब केलिए

समान रूप से अमल में ले आना उस कानून को बनाने में राजनीतिज्ञों का ध्येय है। लेकिन आजकल तो यह कानून धनवान लोगों की भलाई केलिए ही काम आता है। आजकल के कानून को आँखें नहीं, केवल कान मात्र ही हैं। गरीब व्यक्ति कानून से बिलकुल लाभ नहीं उठाता। केवल धनवान लोग ही उसे अपने काबू में रखते हैं। निरपराधी व्यक्तियों को बलि होना पड़ता है। राम के पात्र के द्वारा क्रांतिकारी विचारों के माध्यम से, गाँव के पूरे लोगों को एक सबक सिखाना ही इस नाटक जैसे लिखने में नाटककार का मुख्योद्देश्य है।

आधुनिक सभ्यता में पली हुई स्त्रियों के अलावा प्राचीन सभ्यता की पुजारिन में ही प्रेम की उत्तम भावना निक्षिप्त रहती है। इसी सत्य का उद्घाटन लीला और शांति के द्वारा करना ही नाटककार का और एक उद्देश्य है।

धनवान लोग अधिक धन की लालसा में पड़कर जनता को हानि पहुँचाने में जरा भी नहीं हिचकते और उन्हें सताने में ही आनंद पाते हैं। ऐसे उल्लू के पट्ठे एक न एक दिन जरूर पाप कूप में डूब जाते हैं और फकीर भी बन जाते हैं। आदि वराह, शांबशिवं और गोविंदस्वामी के द्वारा इस नग्न सत्य का निरूपण करना ही नाटककार का लक्ष्य रहा है।

<u>शैली</u> :—

इस नाटक में ओजपूर्ण शैली अपनायी गयी है। गाँव के पूरे लोग मजदूर व गरीबों को दबाकर अपना अस्तित्व जमाना चाहते हैं। इसलिए मजदूर लोगों को भी क्रांतिकारी बनना पड़ता है। फलतः उन से प्रयुक्त ओजपूर्ण कथोपकथनों से भाषा और ~~शैली~~ शैली में नूतनता लक्षित होती है। भाषा सरल और सुबोधक है। इस नाटक में प्रयुक्त मुहावरों और कहावतों में भी विशिष्टता है। निम्नलिखित

कहावतें और मुहावरें उल्लेखित हैं ——

1) उद्दिटकेगर लेनम्म स्वर्गानिकोगिरिदंट (अन होनी बातें कहना)

2) इल्लागाने पंडगकादु (घर के तेपने से ही पर्व नहीं होता)

3) तन्निते वेम्ब्बि वूरेल वुद्दलो पड्डाबु (लाल खाने से जाकर पूर्यों की टोकरी में गिर गया हो)

4) मोरिगे कुक्क करवदु (भूँकनेवाला कुत्ता नहीं काटेगा)

5) पेळ्ळिकि वेळुतु पिल्लिनि चंक पेट्टुकुन्नट्टु (शादी में शामिल होते होते बिल्ली को गोद में ले जाना)

6) आलु चूलु लेदु अल्लुडिपेरु सोमलिंगे अन्नट्टु (न पत्नी है न उसके पेर भारी हुए, मानो दामाद का नाम सोमलिंगे कहा हो)

इस नाटक में ग्रामीण शब्दों की भरमार है। जैसे :— वोगेय्यीड (छोड़ दें) चेय्यि तडिचेयुट (पैसा देना)

इस प्रकार यह नाटक भाषा और शैली की दृष्टि से अनुपम है।

3·2·0 उपन्यास साहित्य :—

3·2·1 नल्लरेगडि (काली मिट्टी) :—

परिचय :— श्री पद्मराजु कृत नल्लरेगडि (कालीमिट्टी) नामक यह उपन्यास, ग्रामीण वातावरण के अनुकूल खरा उतरा है। इस उपन्यास के द्वारा हमें यह प्रतीत होता है कि "दो गाँवों के पूरे किसान मैत्री भावना से नहीं रह सके। उनके बीच में प्रचलित द्वेष के कारण अबोध प्राणी बलि हो जाते हैं।" इस उपन्यास में दर्शनीय अंश यह है कि लेखक ने इस उपन्यास में देहात वासियों के रीति-रिवाज, वेषभूषा, आचार-व्यवहार आदि का खूब उल्लेख किया है।

इस उपन्यास के द्वारा दो व्यक्तियों के बीच आग जलाकर संतुष्ट होनेवाले दुश्मनों को चेतावनी मिलती है कि दूसरों का नाश चिंतन में अपने हाथों अपनी कब्र खोदनी ही है।" इस उपन्यास के द्वारा हमें यह विदित होता है कि "प्रेम चिरंतन और सत्य है। तात्कालिक परिस्थितियों की बलि वेदी पर दो प्रेमी अलग हो जाय, तो भी अवसर मिलने पर उन में प्रेम की उत्सुकता बढ़ जाती है।" इस उपन्यास में वर्णित राजु और लक्ष्मी के चरित्र-चित्रण के द्वारा उपर्युक्त बात सिद्ध होती है।

इस में स्वाधीनता प्राप्ति के बाद के टूटते हुए गाँव की कहानी है। इस न टूटते हुए गाँव में अभी भी कुछ टूटने को बाकी है। यह टूटना वास्तव में जड़ता मूर्खता अज्ञान का टूटना नहीं है, मूल्यों और संबंधों का भी टूटना है। विवेक और संवेदनाओं का टूटना है। विधि की विडंबना यह है कि बुरी चीज टूटकर भी नहीं टूटी और अच्छी चीज टूटनेलगी तो टूटती ही रह गयी है। एक चीज टूटती है तो उसके खाली स्थान पर हवा बवंडर सा चक्कर काटती दौड आती है जिस में अंधा-

धुंध, अच्छा-बुरा, आपस में उलझ जाता है। यही परिस्थिति और गाँवों की है। गाँवों में लोग भयंकर स्पर्धा के कारण आपस में टकराते रहते हैं। छोटे-बडे अपनी धुरी से अलग होते हैं। पहियों की भाँति कुछ डगमगाते हुए एक दूसरे से टकराने लगते हैं। जिसे वास्तव में टूटना है, वह नहीं टूटी है। जाति का अहंकार नहीं टूटी है, आर्थिक विषमता नहीं टूटी है, धार्मिक रुढता नहीं टूटी है। यों गाँव गुंडों के अड्डे बन गये हैं। इस का यथार्थ चित्रण इस उपन्यास में अंकित है।

<u>कथावस्तु</u> :—

रामय्या और सुब्बय्या किसी एक गाँव के किसान हैं। रामय्या तो उस गाँव के ग्रामाधिकारी और सुब्बय्या तो पंचायत अध्यक्ष हैं। राजु सुब्बय्या का बेटा है। उस को मशीनों से बहुत शौक है। ट्राक्टर चलाना उसकेलिए बायें हाथ का खेल है। वह तो ट्राक्टर ~~चलाना उसकेलिए~~ के आसन पर राजा के जैसे बैठता है। ट्राक्टर देहातियों केलिए नयी चीज है। ~~इसके~~ इसलिए ट्राक्टर जमीन को जोतते ~~देखक~~ देख कर रामय्या, सुब्बय्या, धर्मराज और मजदूर आदि अचरज में पड जाते हैं।

धर्मराज गाँव का पटेल नारदमहर्षि के जैसे दो व्यक्तियों के बीच में आग जला कर खुशी से रहने लगता है। उसका लक्ष्य है कि रामय्या और सुबय्या के बीच में झगडा पैदा करके उनको अलग किया करें। इसलिए वह रामय्या के जमीन आँकते समय सुब्बय्या और रामय्या के बीच झगडा पैदा करना चाहता है, बल्कि उसे राजु से खरी खोटी सुनना पडता है। तभी से वह किसी न किसी तरह राजु पर प्रतिशोध लेना चाहता है।

लक्ष्मी रामय्या की बेटी, राजु से दिलोजान से प्रेम करती है। राजु का आगमन गंगय्या के द्वारा सुनकर वह फूले नहीं समाती और आँख गाडकर राजु की

निहारती है। राजु को देखने की चाह से वह अक्सर अपने खेत के तालाब के किनारे आती रहती है और राजु भी मौका मिलने पर लक्ष्मी को तुरन्त देखकर खुशी में फूला रहता है।

गंगय्या और मल्ली कृष्णय्या की पत्नी शेषम्मा के भाई के सन्तान हैं। ये दोनों अपने बचपन में ही अपने माँ-बाप को खो बैठने के कारण कृष्णय्या के घर में पले हैं। मल्ली राजु को दिलोजान से प्रेम करती है। लेकिन लक्ष्मी का स्थान वह हड़प लेना नहीं चाहती। वह मरते दम तक अपने प्रेम को निगूढ रखती है। लक्ष्मी के प्रति उसे जुगुप्सा भी नहीं है। राजु उसे अनपढ़ी कहता है तो वह अथक परिश्रम करके पढ़ती है और अपने फुफेरे भाई के नाम, खत लिखने लगती है। वह उन खतों को अपने यहाँ ही सँजोकर रखती है ताकि किसी की नजर में पडने नहीं देती।

रँगडु ~~एक~~ रामय्या की पत्नी की बहन का बेटा है। वह तो एक पाखंड है कि उस गाँव के तालाब के किनारे हमेशा जाता रहता है और वहाँ पानी केलिए ~~आ~~ आनेवाली स्त्रियों को टेढी-आँखों से देखता है। लिंगय्या उसका बुरा दोस्त है। एक बार वह पद्दालु की बेटी रानी का हाथ पकडकर दबाने लगता है तो वह आपे से बाहर होकर उस पर टूट पडती है। वह चेतावनी भी देती है कि "यदि मेरे यहाँ आओगे तो तेरा गला कट जाएगा।" रानी की चेतावनी से ~~लिं~~ लिंगय्या और रँगडु भीगी बिल्ली बनकर भाग जाते हैं। रानी अपने को तिरस्कार करने के कारण रँगडु उस पर प्रतिशोध लेना चाहता है।

माघ बहुल पँचमी का दिन है। उस समय ~~सभी~~ ग्रामवाले तरह तरह से 'मल्लमदेवी' का त्योहार मनाते हैं। राजु और लक्ष्मी की शादी तय होने के कारण वे दोनों नवधान से कुछ ~~को~~ बालों को मल्लमदेवी को चढाते हैं। मेले के समय में

अछूतगण आदि रंग-बिरंगे भेष धारण करके नाचने और कूदने लगते हैं। इसी अवसर पर अक्ल का दुश्मन रंगडु रावी के चोले को आग लगा देता है। यह जानकर पद्दालु उस पर आग उगलता है कि "शाम होते तक तेरी हड्डी-पसली दुरुस्त कर दूँगा।" रंगडु, धर्मराज और वेंकन्ना आदि रामय्या और कुब्बय्या के अनजान में ही पद्दालु का कचमूर निकालना चाहते हैं।

त्योहार के समय में ग्रामवासी नवधान से कुल वालों को मंदिर के ऊपर जाते हैं। इसलिए नवधान की बालों को लेकर कुब्बय्या की तरफ से पद्दालु और रामय्या की तरफ से रंगडु ऊपर चढ़ते हैं। रंगडु पद्दालु के हाथ में से नवधान की बालों को उड़ा देता है। फलतः दोनों एक दूसरे पर हाथ चलाते हैं। राजु और कुब्बय्या इस प्रकार रंगडु अपने बालों को उड़ा देना अपनी शान में फर्क समझते हैं। इसलिए दोनों पक्षों के लोग झगड़ने लगते हैं। यह खेल एक रण-सा हो जाता है। पुलिस आगमन से झगड़ा कुछ शांत हो जाता है।

इस झगड़े के कारण राजु और लक्ष्मी की शादी रुक जाती है। रंगडु और वेंकन्ना मिलकर अपने नौकर पेंटय्या और वेंकटेशु से, कुब्बय्या के धान के ढेर लुटवाते हैं। यह जानकर कुब्बय्या के घरवाले समझते हैं कि "इस में जरूर रामय्या का प्रोत्साहन हुआ होगा। फलतः राजु और लक्ष्मी के बीच में दीवार खड़ी हो जाती है।

राजु और लक्ष्मी दोनों एक दूसरे को मिलने के लिए लालायित होते हैं। एक दिन वे दोनों अपने अपने घरवालों की आँख चुराकर, राजु के खेत में मिलते हैं। राजु लक्ष्मी के घरवालों का ताना मारता है तो वह सह नहीं सकती। वह कुप्पा-सा मुँह करके अपनी खेत की ओर भाग जाती है। वह मल्लमदेवी के सामने खड़े होकर

आठ आठ आँसू रोती है। गंगाधारी उसे आश्वासन देता है।

खेतों की सरहद के बारे में रामय्या और कुब्बय्या के दलालों के बीच बड़ा झगड़ा होता है। फलतः कई पैर टूट जाते हैं और कई सिर फट जाते हैं। दिन और रात में झोंपड़े में जलाये जाते हैं। शहर के वकीलों और पुलिसों के हाथ-भर में काम है।

जब रंगडू रावी को डुबोकर मारना चाहता है, तब राजु आफिस से बाहर होकर, उसे थप्पड़ मारकर उसे रावी को बचाता है। रंगडू रावी और राजु को धमकी देता हुआ भाग जाता है। रंगडू वह राजु पर प्रतिशोध लेना चाहता है। इसलिए वह और वेंकन्ना मिलकर राजु के प्रिय चीज ट्राक्टर जला देते हैं। ट्रक्टर के जल जाने पर राजु की आँखों के आगे अँधेरा छा जाता है। वह स्कोल में बैठकर फूट-फूट कर रोता है। कुब्बय्या उसे आश्वासन देता है।

पंचायत के चुनाव जाग उठे हैं। धर्मराजु केलिए ऐसे का हाथ भर में काम मौजूद रहता है। अध्यक्ष पद केलिए कुब्बय्या और रामय्या खड़े होते हैं। चुनाव की ठाठ-बाट बड़े जोर से चलने लगी है। एक ~~क~~ पक्ष वाले दूसरे पक्ष वाले के विरुद्ध-प्रचार करने लगते हैं। गाँव भर में इतना हलचल मच जाता है कि पुलिस अधिकारी 144 सेक्शन अमल में लाते हैं। चुनाव तो तीन दिनों में होने वाला है। इस हलचल को रोकने केलिए कलेक्टर का आगमन भी होता है। राजु स्वावेदिका पर चढ़कर कहता है कि "इस प्रकार आपस में झगड़ा करना कुत्ते हड्डियों केलिए लड़ने के समान हो जाता है। अब तो चुनाव की तारीख बदलनी जरूरी है। यदि चाहे तो चुनाव होने तक पंचायत अध्यक्ष के रूप में रामय्या रह सकता है।" राजु के इस निर्णय सुनकर वहाँ उपस्थित दोनों दलवाले भौंचक रह जाते हैं। उसके निर्णय

पर धर्मराज, वेंकन्ना, रंगडु आदि बुढ़ों का [illegible] रोते हैं, बल्कि रामय्या में उनके प्रति अनुराग जाग उठता है।

धर्मराजु लक्ष्मी केलिए और एक घर को देखना चाहता है। अपने घरवालों के अनुरोध पर रामय्या यह बात स्वीकार करता है। इधर कृष्णय्या अपने परिवार की आबरू बचाने केलिए और एक लड़के से अपने बेटे का घर आबाद करना चाहता है। अपने घरवाले शादी करने केलिए तंग करने पर राजु मल्ली से शादी करने की इच्छा प्रकट करता है। राजु का निर्णय सुनकर सब सन्नाटे में आ जाते हैं। मल्ली की खुशी का ठिकाना न रहा है। लेकिन वह समझती है कि ""अपनी शादी राजु से होने वाली नहीं है और उस ने ~~अब~~ आवेश में आकर कहा होगा।"" मल्ली लक्ष्मी का स्थान छीन लेना भी नहीं चाहती। वह किसी न किसी तरह राजु और लक्ष्मी की शादी करवाना ही चाहती है। इसलिए वह राजु ~~और लक्ष्मी की शादी करवाना ही चाहती है।~~ ~~इसलिए वह~~ से शादी करने केलिए इनकार कर देती है। राधे के द्वारा यह सब जानकर गंगप्पा राजु पर टूट पड़ता है और उसके कान खड़ा करता है कि ""यदि तुम्हारे शरीर में कहीं न कहीं साहस के चिह्न हो तो सीधे रामय्या के घर जाकर शादी का विषय पूछो।""

गंगप्पा की बातें सुनकर वह बड़े धीरज के साथ रामय्या के घर जाता है। वहाँ का वातावरण उसे अनुकूल नहीं होता। आखिर उसे रंगडु से थप्पड़ खाना भी पड़ता है। वह किसी पर हाथ नहीं चलाता और अपने दलवालों को भी मना कर देता है;क्यों कि ""वह संधि की बातें करने केलिए वहाँ गया है।""

धर्मराज, वेंकन्ना और रंगडु मिलकर राजु को मारने की योजना बनाते हैं। रात का समय है। राजु और पड्डालु दोनों अपने खेत में हैं। राजु तो सोफे

के बाहर है। पद्दालु तो चौपड़े में ... ही भी जाता है। पद्दालु को राजु समझकर रंगडु उसे मारना चाहता है बल्कि विधिन्यतोच भी होने के कारण वही मर जाता है।

इधर धर्मराज, वैकन्ना और लिंगय्या आदि रामय्या से बचने केलिए योजना बनाते हैं। वे पद्दालु के बेटा 'बुज्जडु' को चुरा ले जाते हैं और बुज्जडु का भय दिखाकर पद्दालु को भी अपने वश कर लेते हैं।

पद्दालु न आते देखकर राजु उसे खोजते हुए उसके घर पहुँचता है। पद्दालु की बेटी सारी कहानी कह सुनाती है। वहाँ की हालत अपने माँ-बाप से बताने केलिए राजु घर जाने लगता है तो घर के सामने पुलिस का 'जीप' दिखायी देता है। इतने में मल्ली आकर उसे अंदर जाने से मना कर देती है और अपने साथ मल्लमदेवी के मंदिर ले जाती है। मल्ली और गणाचारी मिलकर राजु को मूर्ति के पीछे छिपा देते हैं। राजु अपने को निर्दोष बताने पर भी वे कान नहीं देते। पुलिस के आगमन से कुबय्या के घर में, और रंगडु के मरण से रामय्या के घर में हल चल मच जाती है। पुलिस लोग मंदिर का तलाश करने पर भी राजु का पता नहीं लगा सके।

राजु के अनुरोध पर मल्ली लक्ष्मी को मल्लमदेवी के मंदिर ले आती है। राजु और लक्ष्मी एक दूसरे को देखकर सन्नाटे में आजाते हैं। एक क्षण केलिए उन में बात-चीत भी नहीं होती, बल्कि दूसरे क्षण में दोनों के शरीर आलिंगन में आबद्ध हो जाते हैं। राजु लक्ष्मी से अपने को निर्दोष बताता है। लक्ष्मी भी विश्वास करती है। लक्ष्मी गणाचारी से अनुरोध करती है कि ''माँ जी के समक्ष में हम दोनों का घर आबाद हो जाय।'' पहले गणाचारी और राजु स्वीकार नहीं करते, बल्कि मल्ली के तंग

करने पर वे मंजूर करते हैं। मल्लमदेवी के समक्ष में राजु लल्ली के गले में मंगल सूत्र बाँधता है। लल्ली और राजु माई के चरण कमलों पर पड़ते हैं। गणाचारी उनको आशीर्वाद देता है। मल्ली की खुशी का ठिकाना न रहा है। वह आनंद से प्रफुल्लित हो आँसू डबडबाती है।

मल्ली और राजु अपनी निश्चित योजना के अनुसार बाहर निकलते हैं। लल्ली राजु के निर्णीत स्थान मंदिर में रहती है। इधर धर्मराज, वैकन्ना आदि "पुल्ली" को दिखाने केलिए बुड्डम्मु को ले आते हैं। पद्दालु तो एक बेड में बंदी बनाया गया है, इसलिए उसे छुड़ाने केलिए राजु, गंगप्पा और कुछ अनुचरों के साथ वहाँ पहुँचता है।

अपने बेटे को देखते ही पुल्ली मेरे लाल कहती हुई टंगे के पास दौड़ती है। बेड के रखवाले लोग उसे पकड़ने चलते हैं तो इतने में राजु ताला फोड़कर अंदर घुसकर, पद्दालु को मुक्त कर देता है। दोनों दलों के बीच लड़ाई चलने लगता है। इधर राखी मिर्च के चूर्ण धर्मराज और उसके अनुचरों की आँखों में झोंकती है और गंगप्पा भी अपनी शक्ति भर उनका सामना करता है। आखिर धर्मराज के दलवाले हार जाते हैं और भाग निकलते हैं।

राजु, मल्ली और गंगप्पा आदि मंदिर आते हैं। वैकन्ना दस आदमियों के साथ मंदिर में घुसता है। वे गणाचारी को ध्वजस्तंभ से बाँध देते हैं। वैकन्ना अपनी बहन पर मुँह चलाता है। मल्ली आकर गणाचारी को बंधनों से मुक्त कर देती है। वैकन्ना के दस आदमी राजु पर टूट पड़ते हैं। वह अकेला उनका सामना करता है। वैकन्ना दीवार पर खड़े होकर राजु पर एक पत्थर गिराता है। इतने में मल्ली आकर उसे टाल देती है और स्वयं उस पत्थर की आहुति होकर

गिर जाती है। मल्ली के गिर पड़ते देखकर कैल्ना और उसके अनुचर भाग जाते हैं।

मल्ली के गिर जाने पर राजु, लक्ष्मी और गंगप्पा आदि फूट फूट कर रोते हैं। वह मरणशय्या पर रहकर दबी हुई आवाज से रामय्या से कहती है कि "चाचाजी! कल रात को माई के समक्ष मैं राजु और लक्ष्मी की शादी हुई है। आशा है उस बात को तुम स्वीकार करोगे।" मल्ली की बातें सुनकर वहाँ स्थित सब लोग आठ आठ आँसू रोते हैं। माई के सामने मल्ली का टिम टिमाता हुआ जीवन दीपक बुझ जाता है। वहाँ उपस्थित सब लोगों का दुःख का कोई पार नहीं रहता।

चरित्र-चित्रण :— राजु :

राजु एक सुंदर नौजवान है। वह सुब्बय्या और सेषम्मा का लाड़ला बेटा है। उसे बचपन से ही मशीनों से बहुत शौक है। ट्रक्टर चलाना उसके लिए बायें हाथ का खेल है। वह तो एक ईमानदार और समाज सेवी सेवक है। रामय्या की बेटी लक्ष्मी से उसका प्यार आँखें हो जाती हैं। वह दहेज प्रथा का कट्टर विरोधी है। जब उसके भाभी दहेज का उल्लेख करती है, तब वह स्पष्ट रूप से कहता है कि "बाप! यदि आप दहेज के रूप में एक कौड़ी भी लेंगे तो मैं विवाह करना नहीं चाहता। वह लक्ष्मी से दिलोजान से प्रेम करता है। इसलिए जब कभी वह उसका दर्शन पाता है, तब वह आँखों में सरसों फूलता है।

वह दूसरों की भलाई केलिए अपना सर्वस्व ~~अर्पण~~ अर्पण करने केलिए तैयार हो जाता है। अचानक झरना उमड़ने केकारण लोग उसका पार नहीं कर सकते। तब वह बड़े धीरज के साथ सब लोगों को पार कराता है। ट्रक्टर उसको प्रिय वस्तु है। इसलिए जब ट्रक्टर जल जाता है, तब वह बच्चे की तरह फूट फूट कर रोता है।

वह आत्म सम्मान केलिए मर मिटना चाहता है। जब अपने घर की आबरू का सवाल आता है तब वह अपने प्रेम को त्याग करके मल्ली से विवाह करने की इच्छा प्रकट करता है। आपस में मिलजुल कर रहना ही वह दिव्य जीवन समझता है। इसलिए पँचायत चुनाव के समय में रामय्या के पक्षवाले और अपने पिता के पक्षवालों के बीच में वैषम्य मिटाने केलिए अपनी शक्ति भर कोशिश करता है।

जब रँगडु की हत्या करने का आरोप रामय्या के पक्षवाले उसके ऊपर मढ़ते हैं, तब वह भौंचक रह जाता है और भरसक प्रयत्न करके अपने को निर्दोष साबित करता है। अपनी रक्षा के लिए जब मल्ली बलिवेदी पर चढ़ती है, तब वह फूट फूट कर रोता है। वह एक आदर्श नौजवान है।

गँगप्पा :—

गँगप्पा सुब्बय्या की पत्नी शेषम्मा के भाई का बेटा है। वह तो बचपन में ही अपनी माँ-बाप को खो बैठने के कारण, सुब्बय्या के घर में ही पलता है। वह तो एक स्थूल काय का है। उसकी आँखें विशाल हैं। उसकी आँखों में मुस्कुराहट का अचरज और चौक आदि गुण भरे रहते हैं। लेकिन उसकी अक्ल तो मंद है। उसका कलेजा विशाल है मानो उसकी सारी स्थूलता कलेजा ही हो। उसकी चाल दौड़ने की जैसी होती है। पद्मालु की बेटी राधी से उसकी आँखें खुल जाती हैं।

वह अपनी बहन मल्ली को अपने जीवन की ज्योति समझता है। जब राजु उसकी बहन से शादी करने की इच्छा प्रकट करता है तब वह फूले नहीं समाता। बल्कि जब राधी के द्वारा यह जानता है कि राजु का निर्णय अनमनी है, तब वह राजु पर टूट पड़ता है। वह आवेश में आकर राजु को खरी खोटी सुनाने पर भी उसके प्रति गँगप्पा को अधिक गौरव, प्रेम और आस्था है। इसलिए राजु को रँगडु की

मारने की अफवाह से बचाने के लिए अपनी शक्ति भर कोशिश करता है। जब उसकी बहन कैंकन्ना का गिराया हुआ पत्थर का वार खाकर गोलोक सिधारती है, तब उसकी आँखों के सामने अँधेरा छा जाता है और वह अपने सिर को जमीं से फाड़ना चाहता है। वह एक अबोध, अपनी बहन को सिर आँखों पर रखकर पालनेवाला और अपने को पालनेवाले के सौभाग्य चाहनेवाला आदर्श युवक है।

रामय्या :—

रामय्या गाँव के पूरे किसान और ~~अमीर~~ ग्रामाधिकारी है। वह तो प्राचीन खेती-बारी की पद्धतियों का समर्थक है। नवीन खेतीबारी की पद्धतियों को अपना कर मजदूर लोगों के मुँह में मिट्टी डालना नहीं चाहता।

राजु के स्वभाव, सुंदरता और अच्छी आदतों से आकृष्ट होकर वह उस से अपनी बेटी की शादी करना चाहता है। बल्कि रंगडु के कारण अपने और सुब्बय्या के परिवारों के बीच झगडा फूट निकलता है तो वह सह नहीं सकता। मरण शय्या पर स्थित मल्ली के द्वारा अपनी बेटी की शादी मल्लमदेवी के समक्ष में राजु के साथ हुआ है, यह जानकर बडी खुशी के साथ अपनी इच्छा और स्वीकार प्रकट करता है। मल्ली के स्वर्ग सिधारने पर वह आँसू पीकर रह जाता है।

धर्मराजु :—

धर्मराज पटेल और इस उपन्यास का खलनायक है। दो संपन्न परिवार मिल-जुलकर रहे, वह सहन नहीं सकता। उन दो परिवारों के बीच में आग बोना चाहता है। रामय्या और सुब्बय्या के परिवारों के बीच में आग बोकर वह संतुष्ट होता रहता है।

असत्य जानकर भी वह मंगम्मा के मुँह काला करता है। वह जानता है कि अपना बेटा भी उसके पास आता जाता रहता है। वह इतना काठ का उल्लू है कि

राजु और लक्ष्मी का विवाह होना पसंद नहीं करता। कैम्ब्या और रँगडु से मिल कर वह राजु को मारने की योजना बनाता है। जब रँगडु मर जाता है, तब उसको मारने की अफ्वाह राजु पर पड़ता है। वह समाज का विद्रोही और दूसरों के दुख को अपने लिए सुख समझनेवाला उल्लू का पट्ठा है। वह साधारण मानव है जिस में स्वार्थ की पराकाष्ठ परिलक्षित है।

सुब्बय्या :—

सुब्बय्या एक धनवान किसान और राजु का पिता है। वह तो आधुनिक खेती बारी की पद्धतियों का पुजारी ही नहीं बल्कि अपने को ग्रामटर होने के कारण आकाश पर दिया जलाता है। जब रामय्या के परिवार वाले लक्ष्मी केलिए अलग संबंध तय करते हैं तो वह अपनी घर की आबरू बचाने केलिए अपने बेटे केलिए अलग संबंध तय करना चाहता है।

पुन्नय्या :—

पुन्नय्या सुब्बय्या का बड़ा बेटा है। अपने को ग्रामटर होने के कारण, रामय्या के परिवार से अपने परिवार को उच्च समझता है। पंचायत चुनाव के समय अपने पक्ष की जीत केलिए अधिक कोशिश करता है।

रँगडु :—

रँगडु रामय्या की पत्नी सूरालु की बहिन का बेटा है। वह इतना पाखंड है कि राजु और लक्ष्मी के बीच दीवार खड़ा करना चाहता है। वह राधी का हाथ पकड़कर उसका सोना चोरी करना चाहता है। राधी प्रतिकूल होती है तो उस पर प्रतिशोध लेना चाहता है। वह राधी को नदी में डुबोकर मारना चाहता है तो राजु से थप्पड मार खाता है।

एक दिन रंगडु राजु को मारने केलिए उसके खेत के झोपड़ी में बुलाता है लेकिन विधि प्रतिकूल होने के कारण वही मर जाता है।

वैकन्ना :—

वैकन्ना राजु का बेटा है। वह हरेक विषय में रंगडु, लिंगय्या और धर्मराजु से हाथ मिलाकर उनके बुरे कामों में सहयोग देता है। धर्मराज की बातों में पड़कर अपनी बहन की शादी राजु से कराना नहीं चाहता। वह राजु को मारने केलिए रंगडु को प्रोत्साहन भी देता है। राजु के ऊपर उसके पत्थर गिराने के फलस्वरूप मल्ली बलिवेदी पर चढ़ती है।

लिंगय्या :—

लिंगय्या धर्मराज का बेटा है और अच्छे समाज केलिए कोड़े के समान है। वह अकृत्य और पाप जानकर भी अपने पिता की आँख चुराकर अपने पिता की प्रिया मंगम्मा के पास जाता रहता है। वह रंगडु को बुरी आदतों में फँसाकर उसका जीवन बरबाद कर देता है।

गणाचारी :—

गणाचारी मल्लमदेवी का पुजारी है। वह समाज का शुभ चिंतक है। वह हमेशा यह चाहता है कि रामय्या और सुब्बय्या के परिवार के लोग मिलजुलकर रहें। जब राजु पर रंगडु को मारने की अफवाह फैलती है, तब उसे मल्लमदेवी के मंदिर में छिपाकर पुलिस की नजर से उसे बचाता है। जब मल्ली का टिम टिमाता हुआ जीवन दीपक बुझ जाता है तब उसके दुख का कोई पार न रहता।

स्त्री पात्र (मल्ली) :—

मल्ली रामय्या की बेटी और इस उपन्यास की नायिका है। वह राजु को जीजान से प्रेम करती है। जब कभी उसे मौका मिल जाता है तो वह पैजिस्लू के

किनारे आकर अपने प्रिय राजु के रूप-सौंदर्य को निहारने में लग जाती है। राजु से उसकी शादी तय होता है तो उसकी खुशी का ठिकाना न रहा है। जब मल्लम-देवी को राजु के नाक-नक्शान वालों को समर्पित करती है, तब वह अपना सा मुँह लेकर रह जाती है।

जब अपने और राजु के बीच दीवार खड़ा हो जाता है, तब वह आँसू पीकर रह जाती है। वह अपने माँ-बाप की आँख चुराकर राजु से मिलने के लिए अपने खेत की ओर आती है। जब राजु अपने परिवार वालों को ताना मारता है, तब वह कुम्हला-सा मुँह करके वहाँ से भाग निकलती है। जब अपने घरवाले अपने लिए अलग संबंध तय करना चाहते हैं तब वह छाती थामकर रह जाती है। राजु रँगद् को मारने का समाचार सुनकर वह हक्का बक्का रह जाती है बल्कि वह समझती है कि मेरा प्रिय ऐसा आदमी नहीं है।

अपने प्रिय को निर्दोष जानकर उस से गले चाड़ियाँ डालती है और गणाचारी से अनुरोध करती है कि इसी रात को मल्लमदेवी के समक्ष में राजु से मेरा घर आबाद हो जाय। वह राजु से मंगल सूत्र बँधवालेती है। जब अपने भाई का गिराया हुआ पत्थर का वार खाकर मल्ली गिर जाती है, तब वह आठ आठ आँसू रोती हुई अपने पिता से कहती है कि "हमारे घरवालों के कारण ही अबोध नारी मल्ली बलि वेदी पर चढ़ चुकी है।

<u>मल्ली</u> :—

मल्ली गंगय्या की बहन और सुब्बय्या के साले की बेटी है। वह एक अबोध और त्यागशीला नारी है। वह दिलोजान से राजु से प्रेम करती है बल्कि लक्ष्मी का स्थान वह कभी छीन लेना नहीं चाहती। जब रँगद् को मारने की अफवाह राजु पर

पडती है तब उसे बचाने केलिए वह गणाचारी से मनुहार करके मंदिर में छिपा देती है। मल्लमदेवी के समक्ष में वह राजु और लक्ष्मी का विवाह कराती है। वह इतनी त्यागशीला है कि कैकन्ना के गिराए हुए पत्थर के वार से राजु को बचाने केलिए स्वयं उस पत्थर का वार खाकर गिर पडती है। वह दूसरों की भलाई केलिए ही अपने प्राण पखेरू खो बैठती है।

मंगम्मा :—

मंगम्मा सुब्बय्या की नौकरानी है। उसकी आँखें टेढी हैं और मुँह छोटा-सा है। वह तो हमेशा भौंहें चढाकर पलकों के ~~के~~ नीचे से देखती रहती है। उसके पास धर्मराज और लिंगय्या एक से आँख चुराकर दूसरा आता रहता है। वह दोनों को ~~अ~~ उकसाकर दोनों के यहाँ से पैसा चूसती है।

रावी :—

रावी पद्मलु की बेटी है। वह जाति से नीच है तो भी आत्म सम्मान के लिए मर मिटनेवाली है। जब रंगडु उसका सोना चोरी करना चाहता है, तब वह उस पर टूट ~~पडते~~ पडती है। वह गंगप्पा से प्रेम करती है बल्कि अपने और गंगप्पा के बीच जाति-पाँति में बडा अंतर होने के कारण वह कभी अपना प्रेम प्रकट नहीं करती। वह गुप्त रूप में ही अपने प्रेम को रखती है। जब रामय्या और सुब्बय्या के बीच झगडा शुरू होता है तब वह रामय्या के पक्षवालों की आँखों में मिर्च का चूर्ण झोंककर उन्हें भगा देती है।

कथोपकथन :—

कथोपकथन नाटक व उपन्यास के प्रधान अंग माने जाते हैं। 'काली मिट्टी-' नामक 'इस उपन्यास में उपन्यासकार श्री पद्मराजु ने बडे प्रभावोत्पादक कथोपकथनों क

का प्रणयन करके उपन्यास को उज्वल बनाया है। इस उपन्यास के निम्नलिखित कथोपकथन का प्रमाण दर्शनीय है ——

आजकल भारत देश में दहेज की प्रथा पराकाष्ठा तक पहुँची है। इस प्रथा के कारण कई लडकियों के माँ-बाप दई के घाले बन रहे हैं। वे अपनी बेटियों को दहेज देकर शादी न कर सकने के कारण यों ही छोड देते हैं। अपनी उठती जवानी को दबाकर कई स्त्रियाँ पढ़ने लिखने या उद्योग धंधों में अपने जीवन को व्यतीत कर रही हैं। अपनी जवानी को गाबू में न रख सकनेवाली लडकियाँ अपनी आन को खो बैठकर आत्महत्या भी कर रही हैं। इस प्रथा को मिटाने केलिए सरकार ने कानून बनाया है। लेकिन जहाँ-तहाँ यह प्रथा चलती ही है। इस प्रथा के कट्टर विरोधी हैं श्री पद्मराजु। इनकी राय में दहेज लेना बच्चे को पशु बाजार में बेचना ही है। राजु के कथन द्वारा वे अपने भावों को यों व्यक्त करते हैं ——

''कोडुकुनु गोडल संतलो येट्टि अम्म सूपटवां गौरवं? सट्टमेट्टारु सरकारू तेलुसा? कट्नंवुच्चुकुंटे इच्चिनोल्लकी पुच्चुकुन्नोल्लकी पिच्च।'' (बच्चे को पशु बाजार में रखकर बेचना क्या गौरव की बात है? क्या तुम जानते हो कि सरकार ने कानून बनाया? दहेज लेना या देना पागलपन की बात है) राजु का यह कथन समाज पर अत्यंत प्रभाव डालता है।

श्री पद्मराजु प्राचीनकाल में और आधुनिककाल में जनता में प्रचलित आचार व्यवहारों को तुलना राजु के कथन द्वारा इस प्रकार करते हैं —— ''आरोजुलुएरु इद्दरु बिड्डल तल्लय्येदाका, अम्म अय्यतो माट्टाडेरगदंट। इप्पुडु पेल्लिकाक मुंदु नुंचि उत्तरालु रासु कुंटुन्नारु पेल्लि कोडुकू पेल्लिकूतुरु।'' (वे दिन अलग थे। लेकिन दो बच्चों की माँ होते तक माँ पिता से बात चीत करने में शरमाती थी। लेकिन

अब शादी के पहले ही दूल्हा और दुलिहन व्रत लिखवा करते हैं।)

यह तो एक लोक विश्वास है कि माँई या भगवान हमारे बीच में ही पैदा होते हैं। वे हमारी गलतियों को सुधारकर हमारी भलाई के लिए ही मर मिटते हैं। जनता की इस धारणा को श्री पद्मराजु गणाचारी के स्वकथन के द्वारा व्यक्त करते हैं। मल्ली को मल्लमदेवी का अवतार मानकर उसके मरने के बाद वह कहता है —— ''अम्मोरु अम्मोरुलो कलिसि पोयिंदि। मनमध्यने अम्मोरु पुट्टुतुंदादि। मन कळ्ळलिकि आतल्लिनि बलि चेसुकुंटा बुद्धि लेनोल्लंगनक। एनाटिकन्ना ई पल्लि अम्मोरु बतकटानिकि वीलुगा मारुतुंदा? अम्मोरिनि गुर्ति गुर्तु पट्टगल तेलिवि जनानिकि अब्बुतादा?'' (माँई माँई में मिल गयी है। हमारे बीच में ही माँई अवतार लेती है। हम सब बुद्धि-विहीन होने के कारण हमारे लिए बलिवेदी पर चढा देते हैं। कभी न कभी यह देहात माँई जीवित रहने के अनुकूल बदलती है? क्या माँई को देखकर पहचानने की अकल भी जनता में होती है?) इस प्रकार श्री पद्मराजु बडे प्रभावोत्पादक उपकथनों का आविष्कार करके पाठकगण को पुलकित किया है।

वातावरण :——

काली मिट्टी नामक इस उपन्यास में ग्रामीण वातावरण का भरपूर वर्णन हुआ है। ग्रामवासियों की बोल चाल आचार-व्यवहार आदि दर्शनीय भी है। आजकल माँई के नाम पर बकरियों की बलि देने की प्रथा कई गाँवों में प्रचलित है। इसके अलावा माँई के त्योहार के समय लोग रंग-बिरंगी वेष धारण करके नाचने और कूदने लगते हैं। इस प्रकार ग्रामीण वातावरण का भरपूर वर्णन इस उपन्यास में द्रष्टव्य है।

समाज में तरह-तरह के प्रवृत्तिवाले आदमी और औरतें रहते हैं। उन में समाज सुधारक भी होते हैं और समाज को नाश करनेवाले भी। पद्मराजुजी

इस उपन्यास में राजु, मल्ली और गणाचारी को समाज सुधारक के रूप में और धर्म-राज, लिंगय्या और रंगडु आदि को समाज का नाश करनेवालों के रूप में वर्णन करके पाठकों के सामने समाज का यथार्थ वातावरण प्रस्तुत करते हैं।

पंचायत चुनाव के समय में लोग तरह तरह के साधनों के द्वारा प्रचार में लग जाते हैं। एक पक्षवाले दूसरे पक्षवालों पर निंदा का आरोप करते रहते हैं और अपने पक्ष की जीत केलिए भरसक प्रयत्न करते हैं। इस प्रकार पंचायत चुनाव की देश काल परिस्थितियों का चित्रण श्री पद्मराजु ने इस उपन्यास में प्रस्तुत किया है।

उद्देश्य :—

गाँव भर के किसान आपस में मिलजुल कर नहीं रह सकते। उनके आत्माभिमान और अहंकार आदि अधिक प्रज्वलित है। उनके अहंकार लोगों को विभाजित करती है। मनों को विच्छेदित करती है। इस नग्न सत्य को रामय्या और सुब्बय्या के चरित्र-चित्रण के द्वारा प्रस्तुत करना ही उपन्यास कार का मुख्योद्देश्य माना जाता है।

मानव हृदय मुख्यतः देहात वासियों का हृदय कालीमिट्टी के समान है। अनावृष्टि के कारण सूख जाने पर भी बीज को जीवनाधार प्रदान करने की शक्ति काली मिट्टी नहीं खो बैठती। इसी प्रकार मानव हृदय जितना ही सूख जाँय पर भी प्रेम बीज को फिर कभी न कभी जीवन प्रदान करता है। इस सत्य को राजु और लक्ष्मी के चरित्र-चित्रण और उपन्यास के कथानक के द्वारा प्रदर्शित करना ही उपन्यास कार का लक्ष्य है।

टूटे हुए समाज को संगठित करने में कई निरीह प्राणियों की बलि हो जाती है। दूसरों की बलि के लिए कुछ लोग पैदा होते हैं। ऐसे महानुभावों के जन्म से ही हमारे देश की महानता बन पडी है। मल्ली की त्यागशीलता के द्वारा इसका

इसका निरूपण करना ही उपन्यासकार का उद्देश्य है।

देहात वासियों की रीति-रिवाज, बोल-चाल आचार-व्यवहार, अंध विश्वास आदि की एक झाँकी प्रदर्शित करने में पद्मराजु जी सफल बने हैं।

<u>शैली</u> :—

'काली मिट्टी' नामक इस उपन्यास में ग्रामीण वातावरण की शैली भरी पड़ी है। इस उपन्यास का सारा कथानक बोल-चाल भाषा में ही चलता दिखाई देता है। इस उपन्यास के पात्रों के कथन आदि ग्रामीणभाषा शैली में सोने में सुगंधहोने के बराबर है। उदाहरण केलिए रावि और पद्दालु के कुछ कथन दर्शनीय हैं।

रावी गंगप्पा को संबोधित करके कहती है कि ''दूदि वत्ताला तवर्स्टि किर्देतुक्कु पडता कालु जारिते'' (कपास की बोरी जैसे आप हैं तो पैर फिसल कर क्यों नीचे गिर पडती।)

पद्दालु का एक क्रोध पूर्ण कथन है जो ग्रामीण वातावरण की शैली में नवीनता लाता है। जैसे — ''सैग्गि मेकुकोपोते अतगाडि पक्कलो तोंगोमंटावा?'' (क्या तू कहती कि वह उस पर हाथ चलाने केबिना उसके बगल में सोजाय)

मुहावरों और कहावतों का प्रणयन भी उपन्यास को उज्वल बनाया है। जैसे —

1) एड्डेमंटे तेड्डेमनुटा (विपरीत बातें कहना)

2) तेगिंचिन वाडिकि तेड्डे लिंगं। (अपनी बात ही पक्का व सच कहना)

3) तनमुड्डि काकपोते ताडिपट्टिकि एदर देकमन्नाडट। (अपनी चीज नहीं हो तो ...

ग्रामीण लोगों लोगों से प्रयुक्त छोटी मोटी गालियों का प्रयोग भी इस में मिलता है। जैसे — 1) पारिपोयारूरा ना कोडुकुलु (भाग गये रे मेरे बेटे)

2) मोपगलू मोरू काटिकेल्ला (क्से तेरे ये वैभव श्मशान तक जाय)

3) अम्म नायालो (अरो मेरो ~~मेरो~~ जोरु - बापुरे)

4) ओसि लंजा एंत पोगरे नोकु (अरो डाइन। कितनो चरबो छा गयो है तुझे)

इसके अलावा इस उपन्यास में पग-पग पर ग्रामीण शब्द जैसे 'एंबर्य नेदु (कुछ डर नहीं है), डब्बुचेपडु (धन नहीं देता) आदि दिखायो देते हैं। इस प्रकार ग्रामीण शब्दों, मुहावरों और कहावतों, कथोपकथन आदि के कारण ग्रामीण भाषा-शैली में विशिष्टता आ गयी है।

3 · 2 · 2 ब्रतिकिन कालेजो (चलतो-फिरतो पुतलियाँ)

परिचय :—

श्री पद्मराजु कृत 'ब्रतिकिन कालेजो' नामक यह उपन्यास हास्य रस की दृष्टि से सर्वोत्तम माना जाता है। पग-पग पर हास्य रस पूर्ण बातों का आविष्कार करके लेखक ने पाठकगण को मुग्ध किया है। इसके अलावा लेखक ने ~~फक~~ इस उपन्यास में एक सामान्य परिवार में घटित सभी घटनाओं को हास्य रस की योजना के द्वारा व्यक्त करके, उपन्यास को उज्वल बनाया है। इस में प्राचन भारतीय सभ्यता और आधुनिक सभ्यता का सर्वांगीण चित्रण मिलता है। ज्योतिशशास्त्र के पीछे पागल होनेवाले व्यक्तियों को कडी चेतावनी भी इस में मिलती है।

कथावस्तु :—

श्री पद्मराजु कृत इस उपन्यास में हास्य रस का प्राधान्य होने के कारण कथा-वस्तु का स्थान गौण हो गया है। इस उपन्यास को कथावस्तु संक्षिप्त रूप में निम्न प्रकार है।

इस उपन्यास के आरंभ में लेखक तो शंकरय्या के घर के विचित्र वातावरण का

वर्णन प्रस्तुत करते हैं। इस वर्णन से हमें यह सिद्ध होता है कि शंकरय्या का घर बहुत पुरातन है जो घर का अवशिष्ट रूप मात्र सा है। उस घर के सदस्यों को परखें तो पहले शंकरय्या की पत्नी शांतम्मा को ले सकते हैं। वह तो एक स्थूलकाय की है जिसे देखने मात्र से 'शक्ति का रूप' याद आता है। उसका नाम तो शांतम्मा है बल्कि उसकी करतूतें तो बिलकुल उसके नाम के विरुद्ध हैं। कामय्या भी उसी घर का सदस्य है जो शंकरय्या का बेटा है। वह तो योगासनाओं के पीछे पागल हो जाता है। उसका दैनिक कार्यक्रम है खूब खाना, योगासन लगाना, और सोना। उस घर की और एक सदस्यनी राधा है जो शंकरय्या की छोटी बेटी है। वह तो उपन्यास और कहानियों को पढने में अपना समय खर्च करती रहती है।

इधर पट्टू (पट्टाभिरामाराव) अपने माँ-बाप और पेरय्या के साथ शंकरय्या की बेटी कल्याणी को देखने आता है। वह तो पहले देखता है राधा को जो उपन्यास की कथावस्तु में तल्लीन होकर नाचने लगती है। वह तो राधा को ही कल्याणी समझता है। पट्टू आदि निश्चित दिन के अगले दिन ही शंकरय्या के घर आते हैं। इसका कारण शंकरय्या पूछता है तो पट्टू के पिता रामय्या कारण बताता है कि निश्चित दिन का ग्रह-बल अच्छा नहीं है। इस से ज्योतिशास्त्र के पुजारी शंकरय्या आग बबूल होकर रामय्या के ऊँपर टूट पडता है। दोनों के बीच वाग्युद्ध चलता है। एक दूसरे को मुँह ~~जोरे~~ जोरी करते हैं। पेरय्या उन दोनों को जितना मनुहार करें तो भी उनके कानों पर जूँन रेंगता। फलतः इन दोनों के कारण पट्टू और कल्याणी की आशाओं पर पानी फेर जाता है।

मि० चिंता पट्टू का मित्र है। वह तो एक घनवान होने पर भी अपने भव को एक सुचारू ढंग से अलंकृत कर लेता है। पट्टू चिंता के पास जाकर अपनी सारी

हालत सुनकर पिघल जाता है। इसलिए वह पट्टू को साथ लेकर पेरय्या के पास जाता है। वह पेरय्या को समझा बुझाकर पट्टू की शादी करवाने का अनुरोध करता है। जैसे बने पेरय्या दूल्हा और दुल्हिन के माता-पिताओं को समझा-बुझाकर फिर सगाई तय करता है। पट्टू बताता है कि वह दुल्हिन को देखने की आवश्यकता नहीं है। इसलिए जब वह शादी के समय में अपने बगल में कल्याणी को देखता है तब हक्का बक्का रह जाता है। वह तो प्यार करता है राधा को बल्कि अपने बगल में देखता है कल्याणी को। उसकी आँखों के आगे अँधेरा छा जाता है। इसलिए वह वहाँ से कार लेकर भाग निकलता है। वहाँ स्थित सब लोगों के दुख का कोई पार नहीं रहता। सब लोग अचरज में पड जाते हैं।

इधर शंकरय्या के घर में तूफान मच जाता है। पहिलवान कामन्ना पट्टू की हड्डी पसली दुरुस्त करके अपनी बहन के गले में मंगलसूत्र बंधवाना चाहता है। कल्याणी इस केलिए मंजूर नहीं करती। इस अनमनी संबंध करके अपनी उठती जवानी पर अपने हाथों धूल झोंकना नहीं चाहती। वह तो नौकरी करके अपना जीवन व्यतीत करना चाहती है। लेकिन उसकी बहन राधा 'नृत्य' के प्रोग्राम देकर, अपनी चमक दमक से आदमी को पागल बनाकर पैरों के नीचे कुचलना चाहती है जिस से अपनी बहन पर किये हुए अत्याचार का पाप शांत हो जाय।

अपनी बहन और घरवालों के अनुरोध पर कल्याणी नृत्य सीखने केलिए मंजूर करती है। राधा और कल्याणी अत्यंत आस्था से शर्मा के यहाँ नृत्य सीखती हैं। फलतः वे उत्तम नर्तकियाँ बन जाती हैं।

कल्याणी को 'सोप कंपनी' में नौकरी मिलती है। लेकिन पहले वह जाना नहीं चाहती बल्कि जब पेरय्या अपनी शादी होने के अलावा अपनी छोटी बहन की

शादी का प्रस्तावना लाता है तब वह लज्जित बनती है। इसलिए वह घर छोड नौकरी में भर्ती होना चाहती है। राधा पेरय्या को खूब खरी खोटी सुनाती है, क्यों कि अपनी बहन की शादी के पहले ही अपनी शादी हो, यह नहीं चाहती। राजमहेन्द्री में प्रोग्राम देने केलिए राम लिंगय्या, शेशय्या आदि कल्याणी से अनुरोध करते हैं तो कल्याणी उनकी बातों को टाल नहीं सकती।

इधर पट्टू की स्थिति बडी दयनीय बन जाती है। उस में हड्डियाँ और माँस ही अवशिष्ट है। उस में जीवन का सार नहीं है। वह मूर्तिवत रहता है। उस में न चेतनता है न चंचलता। एक स्त्री की उठती जवानी पर धूल झोंकने के कारण वह दूसरी लडकी केलिए अयोग्य हो जाता है। वह अपने पिता के सारे यत्नों का विरोध करता रहता है। चिंता के अनुरोध पर वह नृत्य देखने आता है।

कल्याणी और राधा अपने नामों को बदलकर वाणी और राणी नाम रखती हैं क्यों कि रंगमंच पर असली नामों का अस्तित्व गौण रहता है। उनको नृत्य करते देखकर पट्टू 'चिंता' से कह उठता है कि 'अरे वे ही कन्याएँ हैं।'' चिंता उसका मुँह बंद करता है।

नृत्य समाप्त होने के बाद फूलों की गुच्छा लेकर पट्टु 'ग्रीन रूम' को आता है। वह तो राधा की फूलों का गुच्छा देकर अभिनंदन करना चाहता है, बल्कि राधा उसे पहचान कर खूब खरी खोटी सुनाती है —— ''जा यहाँ से। मेरी बहन के जीवन पर धूल झोंक चुके हो। क्या इन फूलों को लेकर अब तुम जले पर नमक छिडकने केलिए आये हो?''

जब कामन्ना पट्टू को देखता है तब वह आपे से बाहर होकर उसकी हड्डी पसली दुरुस्त कर देता है। इतने में मि0 चिंता वहाँ आकर पट्टू को धीरज बाँधता है।

पट्टू अपनी शक्ति भर कोशिश करके कामन्ना का सामना करता है। एक दूसरे को खूब मारते हैं। आखिर मि0 चिंता उन्हें मना करके अपने घर ले जाता है।

मि0 चिंता रामलिंगय्या के द्वारा कल्याणी और राधा का परिचय प्राप्त करता है। वह रामलिंगय्या और कामन्ना को अपने घर ले जाकर पट्टू की सारी हालत कह सुनाता है। राधा, कल्याणी और पट्टू की आत्म कहानी के बारे में एक एकांकी को लिखकर वह पट्टू के निर्दोषत्व को साबित करना चाहता है। कल्याणी अपनी आत्म कहानी को रंगमंच पर खेलना नहीं चाहती। राधा और रामलिंगय्या के अनुरोध पर मंजूर करती है।

नाटक खेलने का दिन समीप हो जाता है, बल्कि कलकत्ता से एक नट नहीं आता। इसलिए 'चिंता' उसके स्थान में पट्टू को रखना चाहता है। यह रहस्य किसी को मालूम न होने देता। नाटक का आरंभ हो जाता है। कल्याणी और राधा नृत्य करने लगती है। रंगमंच पर कलकत्ता नट के स्थान पर पट्टू को देखकर कल्याणी और राधा हक्का बक्का रह जाती हैं। वे दोनों उस पर आँखें लाल करने लगती हैं। पट्टू उनके निगाहों को न सह सकने के कारण पीछे की ओर मुडता है। यह दृश्य प्रेक्षकों को सहज मालूम पडता है। राधा और कल्याणी रंगमंच से निकल जाना चाहती हैं। लेकिन चिंता और पट्टू उनको जाने नहीं देते। पट्टू अपनी आत्मकहानी राधा को सुनाता है बल्कि वह कान नहीं देती। राधा के आँसू उमड आते हैं। फिर वह अपने निजी अस्तित्व को जानकर फिर पू पट्टू पर क्रुद्ध हो जाती है। यह सब प्रेक्षकों को सहज जैसी दिखायी देती है। प्रेक्षकगण तालियाँ बजाते हैं। इतने में राम-लिंगय्या कृष्ण वेष धारण करके प्रत्यक्ष होता है और युवती युवकों को हित बोध करता है।

पट्टू कल्याणी और राधा के 'विश्रांति भवन' को पहुँचता है। वह राधा के

कमरे में जाकर दरवाजा बंद कर देता है। कल्याणी के पूछने पर भी वह दरवाजा नहीं खोलता। राधा अपनी बहन से पुलिस को बुलाने को कहती है। तब पट्टू वादा करता है कि ''यदि पुलिस को बुलाना चाहें तो बुलायें, बल्कि मैं वादा करता हूँ कि आप की बहन पर हाथ न डालूंगा।

कल्याणी पुलिस को बुलाने केलिए कार पर जाती है। लेकिन उसका कार तो एक बंगला के पास जाकर रुक जाता है। उसको ले जानेवाला ड्राइवर मि0 चिंता जानकर कल्याणी उसको खूब खरी-खोटी सुनाती है। बल्कि चिंता शांति पूर्वक पट्टू को सारा कहानी सुनाता है। वह यह भी कहता है कि ''आप की समस्या ही नहीं तो अब तक राधा ने पट्टू से शादी की होगी क्यों कि पट्टू और राधा एक दूसरे से प्रेम करते हैं। मि0 चिंता की बातों में उसे सत्य मालूम पडता है।

मि0 चिंता कल्याणी से अपना प्रेम प्रकट करता है तो वह कुछ नहीं बोलती। वह एक दम सन्नाटे में आ जाती है। आँखों से ही वह अपनी सम्मति प्रकट करती है। पट्टू और राधा के बीच में भी वैषम्य मिट ~~का~~ जाते हैं। दोनों में चार आँखें हो जाती हैं। सब लोग कार पर बैठकर मि0 चिंता के घर जाते हैं। उपन्यास की कथावस्तु का अंत सुखांत बनता है।

चरित्र-चित्रण :— (पट्टू)

पट्टू रामय्या का बेटा है। वह दुल्हिन को देखने शंकरय्या के घर जाता है तो पहले पहल राधा को देखता है जो उपन्यास को पढती हुई विविध भंगिमाओं में लेटती हुई मस्त है। पट्टू उसकी और टक टकी बाँधता है। वह उसी को ही कल्याणी समझकर अपने हृदय स्थल में स्थान देता है। इसी कारण से शादी के समय में जब वह अपने बगल में कल्याणी को देखता है तब हक्का-बक्का रह जाता है। उसको

आँखों के आगे अँधेरा छा जाता है। वह तुरंत वहाँ से कार लेकर भाग निकलता है। वह तो राधा के प्रेम में पड़कर हमेशा उसका नाम रटने लगता है। वह दाढ़ी-मूँछ बढ़ा करके पागल-सा बन जाता है। जब वह राधा को रंगमंच पर देखता है तब वह चौंक उठता है। अपनी राम कहानी को सुनकर राधा अपने साथ शादी करने - की इच्छा प्रकट करती है तो वह आँखों में सरसों फूलता है।

मि० चिंता :—

मि० चिंता पद्‌दू का दोस्त है। उसके यौवन प्राप्त में पदार्पण करते ही उसके माँ बाप सारी जायदाद को छोड़कर चल बसते हैं। उसके जीवन निर्वाह में माता पिताओं का आतंक न होने के कारण विलासमय जीवन बिताने लगता है। पद्‌दू आकर मनुहार करने पर वह उस के माँ-बाप को समझाकर पद्‌दू की शादी कल्याणी से करने केलिए मंजूर करवाता है। कल्याणी से से शादी करने के अलावा जब पद्‌दू वहाँ से भाग आता है, तब वह उसकी मूर्खता पर खूब दुत्कारता है।

पद्‌दू मनुहार करने पर वह किसी न किसी तरह राधा से अपने मित्र की शादी करने का निश्चय टाल देता है। वह कल्याणी कामन्ना और रामलिंगय्या आदि को पद्‌दू की राम कहानी सुनाता है और अपना मित्र का विवाह राधा से कर डालता है। वह कल्याणी से शादी करके सुखी बनता है।

रामय्या :—

रामय्या पद्‌दू का पिता है। वह शंकरय्या से ज्योतिशास्त्र के बारे में लड़ाई ठान लेता है। वह शंकरय्या से लड़ाई ठान लेने के कारण पहले उसकी बेटी से अपने बेटे की शादी करना नहीं चाहता, बल्कि मि० चिंता और पेरय्या अनुरोध करने पर - मान लेता है।

शंकरय्या :—

शंकरय्या कल्याणी और राधा के पिता और ज्योतिशास्त्र के वितंडवादी है। वह पट्टू के पिता रामय्या से ज्योतिशास्त्र के बारे में लड़ाई ठानकर अपनी बेटी की सगाई अपने हाथों निश्चित न होने देता। जब पट्टू शादी के स्थान से निकल भाग जाता है तब वह आग बबूल होकर रामय्या पर टूट पड़ता है। अपनी बेटी की दुस्थिति को देखकर वह छाती थाम कर रह जाता है।

कामन्ना :—

कामन्ना शंकरय्या का बेटा है। वह योगासनाओं के पीछे पागल बन जाता है। उसका दैनिक कार्यक्रम है खूब खाना, योगासन लगाना, और सोना। जब पट्टू शादी के स्थान से भाग जाता है तब वह उसकी हड्डी पसली दुरुस्त करना चाहता है। जब अपनी बहनों की शादी मि0 चिंता और पट्टू से निश्चित होती हैं, तब वह फूले नहीं समाता।

सेरय्या :—

सेरय्या सगाइयों को तय करने में अभिरुचि दिखाता है। रामय्या और शंकरय्या के झगड़े के कारण जब कल्याणी और पट्टू की शादी रुक जाती है तब वह शंकरय्या की मूर्खता पर खूब खरी खोटी सुनाता है। आखिर वह रामय्या और शंकरय्या को समझा बुझाकर फिर सगाई तय करता है। पट्टू शादी के स्थान से भाग निकलता है तो उस की मूर्खता पर वह बहुत कुपित होता है।

स्त्री पात्र :— (कल्याणी)

कल्याणी शंकरय्या की बेटी है जो बहुत साधु स्वभाव की है। अपने पिता के वितंडवाद के कारण जब दूल्हा और उसके माँ बाप अपने घर से निकल जाते हैं तब

वह बहुत दुखी बनती है। जब अपने को बगल में देखकर शादी के स्थान से दूल्हा भाग निकलता है, तब वह बहुत लज्जित बनती है और आठ आठ आँसू रोती है। वह इस अपमान से बचने केलिए किसी न किसी नौकरी में भर्ती होना चाहती है। अपनी बहन और रामलिंगय्या के अनुरोध से वह नृत्य सीखना चाहती है और नृत्य करने में प्रवीण बन जाती है। रंगमंच पर नृत्य करना अपने परिवार की शान में फर्क लगाती है। राधा रोशय्या और रामलिंगय्या के मनुहार करने के कारण वह एक 'प्रोग्राम' देती है जिस में वह प्रेक्षकों को मुग्ध करती है। पद्दू को राम कहानी सुनाकर, जब चिंता प्रेम प्रकट करता है तब वह पहले आँखें लाल करने पर भी, बाद आँखों से ही सम्मति प्रकट करती है।

राधा :—

राधा कल्याणी की बहन और शंकरय्या की बेटी है। घर के काम काजों में वह कभी संबंध नहीं रखती। वह तो दो ही काम केलिए पैदा होती है। एक तो रंग-बिरंगे मुख चित्रवाले उपन्यासों को पढ़ना और दूसरा नृत्य करना। नृत्य तो उसको जन्मतः आयी हुई विद्या है। वह तो मानो नृत्य करती ही पैदा हुई होगी। वह जो भी काम करे नृत्य भंगिमाओं में ही खड़ी होती है। इसके अलावा वह बहुत खूब सूरत भी है। वह उपन्यास को पढ़ते समय भी नायक नायिकाओं के अनुभवों में तल्लीन हो कर नृत्य करती रहती है। पद्दू तो उपन्यास पढ़ते समय उसकी नृत्य भंगिमाओं को देखकर ही उसके मोह में पड़ जाता है।

जब पद्दू शादी के स्थान से भाग निकलता है तब वह उसे खूब गालियाँ देती है। कल्याणी नौकरी में शामिल होने केलिए जाना चाहती है तो वह आँसू बहाती है। वह अपनी चमक दमक से मर्दों को पागल बनाकर पैरों से कुचल देना चाहती है जिसके

द्वारा अपनी बहन पर किये हुए अत्याचार का शांत हो। वह नृत्यप्रोग्राम में अद्भुत रूप से नृत्य करके प्रेक्षकों को मंत्रमुग्ध कर देती है। वह पद्दू की राम कहानी सुनकर पिघल जाती है। फलतः उस से शादी करने की – इच्छा प्रगट करती है।

शांतम्मा :—

शांतम्मा एक स्थूलकाय की है। उसका नाम तो है शांतम्मा, बल्कि उसकी करतूतें तो उसके नाम के बिलकुल विरुद्ध हैं। उसके लिए तो दो ही ऐश्वर्य हैं। एक तो चारपाई और दूसरा कमर का दर्द। वह चारपाई कभी नहीं छोडती। कापी भोजन आदि चारपाई के वहाँ ही मँगवाती है। जब कभी उसे क्रोध पडती है, तब वह कमर का दर्द भूलकर चारपाई को छोड आतीन है। उसे कभी कभी मुख्य घटनाओं में मूर्छा भी आती है। उसको मूर्छा के समय में उसे खय मट्ठा पिलाना है। वह तो दीवान वंशज होने के कारण अपनी परिवार की उच्चता का अनुभव करती रहती है। जब राधा और कल्याणी नृत्य सीखना चाहती है, तब वह बिलकुल मंजूर नहीं करती। जब पद्दू शादी के स्थान छोडकर भाग जाता है, तब वह उसे खूब गालियाँ देती है।

सुब्बम्मा :—

सुब्बम्मा पद्दू को माता और रामय्या की पत्नी है। वह अपने बच्चे को बहुत लाड-प्यार करती है। जब कल्याणी उसके पाँव पडती है, तब उसके विनय-स्वभाव से मुग्ध होती है। पद्दू शंकरय्या की बेटी से फिर शादी करने केलिए तरस जाता है तो वह अपने पति को समझाती है। जब पद्दू शंकरय्या के घर से शादी के स्थान छोडकर भाग निकलता है तब वह अपने बेटे को पागल समझकर आँसू पीकर रह जाती है। अपने बच्चे को भूत चढा हुआ समझकर भूतवैद्या को भी लिवा लाती है। वह एक पवित्र मातृमूर्ती है।

<u>कथोपकथन</u> :—

कथोपकथन भावपक्ष के अंतर्गत आता है जिस केलिए उपन्यास साहित्य में एक विशिष्ट स्थान है। इस उपन्यास में उपन्यासकार ने हास्य रसपूर्ण कथोपकथनों के साथ साथ बडे प्रभावोत्पादक कथोप कथनों का भी आविष्कार किया है। इस उपन्यास में हास्यरस का पुट है। जैसे ''पेद्दमनिषि —— चूशारु। उन्न पेची एमिटि ना पेल्ली सत्य'' —— (क्या देखे हैं? असल में विवाद का विषय क यह है कि मेरी पत्नी सत्य - - - -)

मि०चिंता :— ''सत्यवरमैना। तमलपाकुलकु महा प्रसिद्दि।'' (क्या सत्यवरम है। पान के पत्तों केलिए बहुत प्रसिद्ध है।)

युवती और युवक दोनों में प्रेम पनपता है तो उन दोनों के बीच में फैली हुई कुल, मत उच्च और नीच आदि का भेद भाव विस्मरण कर देते हैं। लेकिन उनके माँ बाप के कारण उनका प्रेम रूक रूक जाता है। माता-पिता तो अपने बाल-बच्चों को एक उच्चस्तर पर बिठाना चाहते हैं तो युवती युवक अपने प्रेम भाव के सामने सब कुछ न्योछावर करने केलिए तैयार हैं। यदि माता-पिता अपने बाल बच्चों के अनुकूल बर्ताव करें तो विवाद का कोई = प्रश्न ही नहीं रहता। पेरय्या पात्र के द्वारा श्री पद्मराजु इस भाव को यों व्यक्त करते हैं —— ''मनं मुसलाल्लं। कुर्रात्ल व्यामोहालु वेरु। मनके अन्नी तेलुसु ननुकुंटां मनं। मन अभिप्रायालन्नी वाल्लमीद रूद्दडानिकि प्रयत्निस्तां। अयिते कोन्निविषयाल्लो वाल्ले रैटु। अंचेत वाल्ल इष्ट प्रकारमें न नड पेचीये उंडदु।'' (हम तो बूढे हैं। युवक के व्यामोह हम से भिन्न होते हैं। हम समझते हैं कि हम ही सब जानते हैं। हम कोशिशकरते हैं कि हमारे विचारों का असर उन पर पडे। कुछ बातों में उनके विचार ही अच्छे सिद्ध होते हैं। इसलिए

यदि हम उनके इच्छानुसार चलेंगे तो कोई झगडे का प्रश्न ही नहीं रहता।)

प्राचीन काल से हमारे देश में यह प्रथा चलती आ रही है कि पुरुष स्त्री से अधिक है। स्त्री के सुख-संतोष आदि पुरुष के दया पर ही निर्भर है। लेकिन आजकल पाश्चात्य सभ्यता से अभिभूत कुछ भारतीय नारियाँ अपने सुख-संतोष केलिए अपने पति पर निर्भर नहीं रहतीं। बल्कि इस तरह की स्त्रियों केलिए समाज में पुनीत स्थान नहीं रहता। प्राचीन भारतीय सभ्यता से ओत प्रोत नारियों की स्थिति का उल्लेख पद्मराजुजी इस प्रकार करते हैं —- "स्त्री सुखं, आनंदं पुरुषुनि दया-दाक्षिण्यालपैनाधारपतिड युन्नवि। स्त्री भिक्षुकि पुरुषुडु दाता। धनवंतुडु पेदकु निर्लक्ष्यंगा गव्वा पैसा वेसिरि नट्टुगाने, पुरुषुडु स्त्रीकि तन अनुरागलेशान्नि दानं चेयुनु। आदानं स्त्रीनि कृतज्ञता संकेललो बंधिंचि, आमेनु पुरुषुनिकि शाश्वत बंदीगा चेयुनु।" (स्त्री के सुख और संतोष पुरुष की दया पर ही निर्भर है। स्त्री नामक भिखु केलिए पुरुष दाता के समान है। धनवान आदमी भिखारी को एक कौडी फेंकने के समान पुरुष भी स्त्री को अपने अनुराग का अंश प्रदान करता है। वह दान स्त्री को कृतज्ञता के श्रृंखलाओं में बाँधकर उसे पुरुष केलिए शाश्वत गुलाम बना देता है।) इस प्रकार इस उपन्यास के कथोपकथन हास्यरस पूर्ण और प्रभावोत्पादक बन पडे हैं।

वातावरण :—

इस उपन्यास के लिखने में पद्मराजुजी का ध्येय है कि इसे हास्य रस का उच्चतम शिखर पर पहुँचाना। इस ध्येय की पूर्ति केलिए लेखक ने उचित वातावरण को प्रस्तुत किया है। शंकरय्या का घरेलू वातावरण मनोरम और हास्यरस से पूर्ण है। कल्याणी के चरित्र चित्रण के द्वारा आदर्श भारतीय नारी की झलक दिखायी देती है। पद्दू

के चरित्र चित्रण के द्वारा लेखक ने आधुनिक युवक का मानसिक विश्लेषण अंकित किया है।

आजकल के युवक किसी लड़की से प्रेम करके अपनी प्रेम भावना को निभाने के लिए सब कुछ त्यागकर बैठते हैं और पागल भी बन जाते हैं। पद्दू के चरित्र-चित्रण में यह वातावरण दर्शनीय है। इसके अलावा आधुनिक युवती में जिस प्रकार की आकांक्षाएँ निक्षिप्त रहती है, उसका मनोरम वातावरण कल्याणी के चरित्र-चित्रण में परिलक्षित होता है। इस उपन्यास की सारी कहानी एक सामान्य परिवार में ~~घटित~~ घटित सभी घटनाओं का सार मात्र है।

उद्देश्य :—

हास्य रस को पराकाष्ठा तक पहुँचाना ही इस उपन्यास के लिखने में उपन्यासकार का मुख्योद्देश्य रहा है। उन्होंने प्राक्कथन में निम्न प्रकार लिखा है कि ''मन जातीय जीवनं लोनु, सामाजिक जीवनं लोनू हास्यं पालु तक्कुव। औसरमैन हास्यं ~~नै~~ संस्कृत सांप्रदायं लो उन्ना, मन साहित्यं लो हास्य रचनलनि चेप्पुकोदग्गवि इंचुमिंचु लेवने चेप्पालि। अंदित ओक कथनि कुलासागा चेप्पालनि बुद्धिपुट्टिंदि। प्रयत्नं चेसानु।'' इसका भावार्थ यह है कि हमारे जातीय जीवन में हास्य रस का स्थान कम है। एक तरह का हास्य संस्कृत नाटक सम्प्रदाय में होने पर भी हमारे साहित्य में उल्लेखनीय हास्य रचनाएँ बिलकुल नहीं के बराबर हैं। इसलिए एक हास्य रसपूर्ण कहानी लिखने की इच्छा हुई। इसलिए कोशिश की।

एक सामान्य परिवार में घटित सभी घटनाओं को हास्यरसपूर्ण पद्धति में अंकित करने में लेखक सफल बने हैं। प्राचीन भारतीय नारी की मनोभावनाएँ और आधुनिक सभ्यता में पली हुई नारियों की मनोभावनाओं का सर्वांगीण चित्रण इस उपन्यास में दर्शनीय है।

शैली :—

यह उपन्यास हास्य रस प्रधान होने के कारण शैली भी हास्य रस से पूर्ण है। यह उपन्यास हास्य रस की मनोहर शैली में लिखा गया है कि पाठकगण एक समय उपन्यास के प्रति आकृष्ट हो जाते हैं। भाषा भी सरल और सुबोधक है। हास्यरस की पराकाष्ठा दिखाने केलिए लेखक ने जिस शैली को अपनाया है, वह अनुपम और प्रशंसनीय है। जहाँ तहाँ लेखक से प्रयुक्त मुहावरें और कहावतें उपन्यास की भाषा शैली में सजीवता लायी है। जैसे ——

1) चेतुलु कालेका आकुलु पट्टुकुनिएँ लाभं (चिडिया चुग गयी खेत)
2) ब्रह्मचारि मुंदिरिना बेंडकाय मुदिरिना (ब्रह्मचारि पक जाय या भिंडी पक जाय)
3) तद्दिनं पेट्टेवाडि तम्मुडिला (पिंड चढानेवाले के भाई के जैसे)
4) पानकं लो पुडकलाग (पानक में तिनके का सा)
5) ताडु तेगिन गालिपटंलाग (धागा टूटे हुए पतंग के समान)
6) पुंडुमीद कारं चल्लिनट्टु (जले पर नमक ~~छिड़ने~~ छिडकने के जैसे)

इस प्रकार भाषा शैली की दृष्टि से यह उपन्यास अत्यंत सुंदर बन पडा है।

3·2·3 ''रेंडव अशोकुनि मूण्णाळ्ळ पालना'' (दूसरे अशोक के तीन दिनों का शासन :—

परिचय :—

श्री पद्मराजु कृत ''रेंडव अशोकुनि मूण्णाळ्ळ पालना'' नामक यह उपन्यास आजकल की राजनीतिक दृष्टि से खरा उतरा है। आजकल के राजनैतिक नेताओं में जो कुरीतियाँ विद्यमान हैं, उनका दिग्दर्शन करता है, यह उपन्यास। इस उपन्यास के द्वारा लेखक ने यह सिद्ध किया है कि लोकतंत्र से राजाशाही उत्तम है। आजकल की राजनीतिक कुरीतियों को दृष्टि में रखकर भविष्य में अर्थात् सन् 197- के अनंतर

भारत देश के संविधान में आनेवाले परिणामों का अंदाजा लगाया है। लोकतंत्र के नाम पर राजनीतिज्ञ अपनी कूटनीति के द्वारा जिस प्रकार जनता पर अत्याचार करने से नहीं हिचकते, उनका विस्तृत वर्णन इस में मिलता है। ऊँचे पद पाने के लिए लोक सभा के सदस्य जिस प्रकार झगडा करते हैं, उसका हूबहू चित्रण इस उपन्यास में मिलता है। 'पेवीलि' नामक गाँव की विशिष्टता भी इस में मिलती है।

कथावस्तु :—

प्रस्तुत राजनीति की समस्याओं को दृष्टि में रखकर लेखक पद्नराजुजी ने भविष्य में राजनीति के रंगमंच पर होनेवाली घटनाओं का एक कल्पनात्मक वर्णन "रैंडव अशोकुनि मूण्णाल पालना" नामक इस उपन्यास में प्रस्तुत किया है। मं. पं. मौरि अशोक वर्धन राज जी सन् 198-मार्च उन्नीसवीं तारीख को भारत देश की गद्दी पर बैठकर तीन दिनों केलिए भारत देश का शासन करके सन् 198 मार्च बाईसवीं तारीख को अपने पद को त्याग देते हैं। पैशाची भाषा में लिखित शिलालेखों का अनुसंधान करना ही अपना लक्ष्य समझनेवाले वर्धनराजजी ने भारत सम्राट का पद क्यों और कैसे स्वीकार किया है? इस का विवरण देने के पहले उसके पूर्व तीन दशाब्दियों से देश में फैली हुई विषम परिस्थितियों का वर्णन करना आवश्यक है।

सन् 197-जनवरी में हर्यांना राष्ट्र में जो चुनाव हुए उन में पैंद्रह राजनीति के दल भाग ले चुके हैं। चुनाव के फल प्रकट होते ही अत्यधिक संख्या बलवाले पक्ष शुद्ध-हर्यांनी, स्वतंत्र हर्यांनी और कांग्रेस, अल्प संख्यावाले पक्षों से मिलकर अपनी अपनी सत्ता अलग जमाना चाहते हैं। वे तीन पक्ष अपने अपने दल का नाम यों रखे ——

1) शुद्ध-हर्यांनी पक्ष —— —— हर्यांना संयुक्त विधायक दल

2) स्वतंत्र हर्यांना पक्ष —— समीकृत विधायक दल

3) काँग्रेस —— संगठित विधायक दल

पहले यह हर्याना संयुक्त विधायक दल के नायक कृष्णशर्मा आकर यह मंतव्य प्रकट करता है कि "हमारे दल को असेंब्ली में अधिक बल है। इसलिए गवर्नर रामचरण ने हमारे दल में से मंत्रि मंडली के सदस्यों को निकालने की अनुमति दी है।" इसके सत्रह मिनिटों के बाद समीकृत विधायक दल के नायक कमलकांत, गवर्नरजी की अनुमति पत्र लाकर प्रकट करता है कि "हमारे दल में से ही मंत्रि मंडली के सदस्यों को चुनने की अनुमति गवर्नर ने दी है। इसके एक घंटे के बाद गवर्नरजी के हस्ताक्षर सहित और एक कागज निकला जिसके द्वारा संगठित विधायक दलवाले अपने दल में से ही मंत्रि मंडली चुनने का अनुरोध करने लगा। इस प्रकार तीनों दल आपस में झगडने लगे।

आखिर वे एक निर्णय पर आ जाते हैं कि एक एक दल में से चौबीस सदस्यों को लेकर उन्हें मंत्रि पद देना है और इसी प्रकार तीनों दलों में से सदस्यों को लेना है तो कुल मिलाकर 72 होंगे। तब तो एक मंत्रिपद तीन मंत्रियों के हाथ में रहेगा। मुख्यमंत्री के रूप में रमाकांत को चुनलेते हैं। इसी प्रकार हरेक राष्ट्र में चुनाव होने लगा। हरेक राष्ट्र में इसी प्रकार झगडे भी होने लगे। आखिर 197-फरवरी में देशभर में साधारण चुनाव समाप्त हो जाते हैं।

अब लोक सभा की समस्या उठ खडी होती है। अधिक संख्या बलवाले काँग्रेस पक्ष की अधीनता में प्रधान मंत्री का चुनाव चलता है। हर्याना राष्ट्र के काँग्रेस सदस्य श्री ज्ञान चंद्रशर्मा के अनुरोध करने पर प्रधान मंत्री का पद स्वीकार करते हैं। इनके पक्ष और विपक्ष में कई दल काम करने लगे बल्कि ज्ञान चंद्रशर्माजी के वाक्पटुता, वाक्चातुर्य और निस्वार्थ भावना के सामने सब लोग नतमस्तक हो जाते हैं।

इधर ज्ञान चंद्रशर्माजी की शासन सत्ता लोक सभा में कुछ प्रदान करती है। इनकी शासन-सत्ता के अनुसार एक एक मंत्री केलिए निर्णीत काल स्‍ साल ही है। इसलिए कोई भी मंत्री रचनात्मक कार्य करना चाहें, तो भी अवकाश नहीं मिलता। लेकिन देशभर में जिन सदस्यों की हार होती है, उनका कार्य कलाप यथा तथा चलता रहा है। जहाँ तहाँ रेल गाडियों की आपत्ति होने लगी और 'चारों' की आहुति होने लगी है। कुछ नयी दूकार नाश होती जा रही हैं। कई मशीनघर ताला लगाये जाते हैं। हम को तो यह जरूर मान लेना चाहिए कि चंद्रशर्मा, जिनके के शासनकाल में उतनी अराजकता नहीं है, जितना इसके पहले होती थी।

प्रधान मंत्री श्रीज्ञान चंद्रशर्मा की मृत्यु से फिर लोक सभा में हल चल मच जाता है। इसके अलावा हरेक राज्य-सरकार में आंदोलन मच जाने लगा है। प्रधानमंत्री के पद केलिए हरेक सदस्य तैयार होने लगा है। चुनाव के बारे में हरेक सदस्य अपनी राय बताने लगते हैं। सर्वत्र शासनहीनता फैल जाती है। लोक सभा के सदस्य इतने मूर्ख बन जाते हैं कि वे वाक्युद्ध ही नहीं, बल्कि एक दूसरे को मारने भी लगते हैं।

प्रजा प्रतिनिधियों के बुरी बर्ताव को रोकने केलिए तीस हजार बालक और बालिकाएँ वहाँ उपस्थित हो जाते हैं। वे सब मिलकर लोक सभा के सदस्यों को एक पत्र समर्पित करते हैं। उस पत्र का सारांश यह है कि "हल्ला मचाना हमारा हक है। हमारे हक को हडपने का हक आप को नहीं है। जब तक आप गडबडी को छोडकर सही रास्ते पर नहीं आएँगे, तब तक आप लोगों को इस राज भवन से बाहर आने नहीं देंगे। आप सब मिल जुलकर मुक्त कंठ से प्रधान मंत्री को चुन लेना चाहिए। आप के झगडों के कारण ही देश भर में अशांति फैलती जा रही है। इसी कारण से हमारे स्कूल भी बंद किए जा रहे हैं। हमारी पढाई की व्यवस्था भी नहीं है। इसलिए

जब तक आप प्रधान मंत्री की समस्या हल नहीं करेंगे, तब तक आप लोगों को हम बालक और बालिकाएँ घेरा करके ही रहते हैं।''

सब बालक और बालिकाएँ अपने निर्णय पर डटे रहते हैं। कुछ सदस्य ~~नहीं मानते। आखिर~~ गिरिजा शंकर लाल को प्रधानमंत्री के रूप में चुनना चाहते हैं तो और कुछ सदस्य नहीं मानते। आखिर लोक सभा के सदस्य ~~नहीं मानते।~~ किसी निर्णय पर नहीं आ सकते। वे आपस में लड़ते रहते हैं। मुँह का ही नहीं बल्कि वे हाथों और पैरों से भी परस्पर प्रहार करने लगते हैं।

इनके वर्ताव से सारे बालक और बालिकाएँ तंग आ जाते हैं और लोक सभा के सदस्यों को घेर लेते हैं। लोक सभा के एक सदस्य भी बाल-बालिकाओं के सामने आकर भाषण नहीं दे सकता। आखिर कनकराव एकदमकंठ से बोलने लगता है कि ''आदरणीय भाइयो, आदरणीय चंद्रशर्माजी बताते हैं कि लोक सभा को ही संविधान सभा समझकर एक निर्णय को प्रस्तुत करता हूँ। लोक सत्ता हमारी संस्कृति और प्रतिभा के विरुद्ध है। इस देश को प्रभुसत्ता के रूप में बदलना ही इस स्थिति में लाभदायक है। यही मेरी कामना भी है। आशा है सब लोग मेरी इच्छा के अनुकूल होंगे।

लोक सभा के सभी सदस्य कनकाराव के प्रस्तावना पर जोर देते हैं। एक दो सदस्य विरोध करने पर भी उनकी बात नहीं चलती। आखिर सब सदस्य बाल-बालिकाओं के सामने यह बात स्वीकार करते हैं कि लोकसत्ता को प्रभु सत्ता के रूप में बदलाएँ, यही अंतिम निर्णय है। भारत के सिंहासन पर अधिष्ठित करने केलिए अशोक के वंशज पेर्वाली के निवासी मं. पं. मौरि अशोक वर्धनराव को चुनते हैं। लोक सभा के सभी सदस्य बड़ी धूम धाम के साथ पेर्वाली पहुँचते हैं। पहले वर्धनराव नहीं मानते

चाहिए सब लोगों के अनुरोध पर स्वीकार करते हैं। यह समाचार दुनिया भर की सब पत्रिकाओं में प्रकाशित किया जाता है। दुनिया भर के सब प्रतिनिधि आकर श्री वर्धनराज का स्वागत करते हैं। बड़ी धूम धाम के साथ राज्याभिषेक हो हो जाता है। राज मर्यादाओं के साथ श्रीवर्धन राजा की देख-रेख होने लगता है।

दूसरे अशोक के तीन दिनों के शासन में पहले दिन का शासन शुरू होता है। वर्धनराज अपने प्रथम सभा में अपनी मातृभाषा तेलुगु में अमूल्य भाषण देते हैं। जब लोक सभा के सदस्यों के बीच में राष्ट्रभाषा की समस्या उठ खड़ी होती है तो वर्धन-राज 'पैशाची भाषा' को राष्ट्र भाषा बना देते हैं। वर्धन राज का निर्णय सुनकर सब सदस्य दंग रह जाते हैं। वे सब मिलकर वर्धनराज को घेर लेना चाहते हैं चाहिए सैनिक लोग उनकी रक्षा करते हैं।

रात के समय में वर्धनराज जब आराम ले रहे हैं तब एक नौकर आकर कहता है कि रानीजी दाँत के रोग से पीड़ित है। राजा अचानक कह देते हैं कि सभी दाँतों को निकाल दें। वह नौकर दाँतों को 'कर' समझकर लोक सभा के सदस्यों को बताता है कि ""राजा साहब ने तो सारे करों को निकालने का आर्डर दिया है।"" राजा के निर्णय सुनकर सब लोग दाँतों तले उँगली दबाते हैं।

श्रीवर्धन राज के दूसरे दिन का पालन शुरू होता है। राजा के सामने रिश्वत खोरियों के नाम प्रस्तुत किए जाते हैं। उनके नाम पैशाची भाषा में न होने के कारण तिरस्कार कर देते हैं और हुकम जारी करते हैं कि ""रिश्वत लेना शासन के अनुकूल है। पुराने शासन के अनुसार जो लोग सजा कर रहे हैं वे छोड़ दिए जाते हैं।"" रात के समय पोशाक बदल कर वर्धनराज अपने अंतरंग सखा 'बालू' के साथ जनमत जानने जाते हैं। रिश्वत लेना शासन के अनुकूल होने के कारण उसका मूल्य ही कम

जब देश भर के सब लोग लोकसत्ता से तंग आकर उन्हें राजगद्दी पर बैठने की याचना करते हैं, तब पहले वे स्वीकार नहीं करते। उन में निस्वार्थ भावना गोचर होती है। लेकिन लोक सभा के सदस्यों के अनुरोध पर वे उनकी बात नहीं टाल सकते।

वे राजमर्यादाओं से ऊब जाते हैं और अपने अंतरंग सखा 'बालू' के साथ आराम लेने के लिए वेष बदलकर बगीचे में आ जाते हैं। उनके प्रथम भाषण से दुनिया भर के सब प्रतिनिधि उनके प्रति आकृष्ट हो जाते हैं। राष्ट्रभाषा समस्या के कारण देश भर में अशांति फैल जाती है तो वे पैशाची भाषा को राष्ट्रभाषा बना देते हैं, क्यों कि इस भाषा को कई लोग समझ नहीं सकने के कारण वाग्युद्ध नहीं कर सकते।
जब उनके पास एक नौकर आकर रानी के दाँत के रोग के बारे में कहता है तब वे हुकुम जारी करते हैं कि सब दाँतों को निकाल दिया जाय।'' तेलुगु भाषा में दाँत माने 'पन्नु' और 'कर' माने 'पन्नु' होने के कारण वह समझता है कि सभी कर निकालने का आज्ञा है। फलतः देश भर में कर का प्रश्न ही नहीं रहता। वे अन-मनी से जो बात बोले वह और एक रूप में बदलकर उन्हें प्रशंसा की बात बना देती है। वे रिश्वतखोरी को शासन सम्मत बना देते हैं। फलतः रिश्वत का मूल्य ही कम हो जाता है। रिश्वत का प्रश्न ही दिखायी नहीं देता।

जब लोक सभा के सदस्य उनके शासन से तंग आकर उन्हें घात करना चाहते हैं, तब वे बालू के साथ वेष बदलकर राजभवन से मुक्त हो जाते हैं। वे राजपद को छोडकर अपने गाँव पेर्वाली पहुँचकर ग्रामवासियों में प्रचलित वद्दम्मराजु नामक नाम को ही सार्थक बना लेते हैं। वे एक उत्तम राजवैद्य माने जेते हैं।

बालू :—

'बालू' बन्बई का लड़का है। एक बहन और एक भाई केलिए वही रक्षक है। उसकी माँ पागल बन जाने के कारण अस्पताल में रहती है। उसका पिता तो जेल में है। वह तो देशसेवानी है। जब '...' के दलवाले उसके ऊपर टूट पड़ते हैं, तब वह अपनी वाक्चातुरी से सब बालकों को अपनी और आकृष्ट कर लेता है। तभी से वही बाल-बालिकाओं का नेता बन जाता है।

जब लोक सभा में अशांति फैल जाती है, तब वह तीन हजार बाल-बालिकाओं के साथ लोक सभा के सदस्यों को घेर लेता है और बलपूर्वक लोक सभा के सब सदस्यों को एक निर्णय पर लाता है।

अपनी प्रतिभा के कारण वह श्रीअशोकवर्धन राजा के अंतर्गत सखा बन जाता है। उसकी प्रतिभा को देखकर श्रीवर्धनराजा सोचते रहते हैं कि ''यह छोटा बालक प्रधान मंत्री के पद पर हो तो कितना अच्छा होगा।'' लेकिन जनता उस बालक को अपने अधिकारी के रूप में नहीं मानती। जब वर्धनराजा राजकाजों से ऊब जाते हैं, तब वह राजा का वेष बदलकर आराम केलिए बगीचे में ~~लेजा~~ ले जाता है। इसके अलावा जब राजा खतरे में हैं, तब वह उन्हें राजभवन से मुक्त करके उनकी जान से बचाता है। बालू छोटा बालक होने पर भी उसके कार्य तो महान हैं। वह एक अक्लमंद और होशियार लड़का है।

ज्ञान चंद्रशर्मा :—

श्री ज्ञान चंद्रशर्माजी हर्याना राष्ट्र के कांग्रेस सदस्य हैं। वे गाँधीजी के पद-चिह्नों पर चलनेवाले एक उत्तम अनुचर हैं। इसलिए जब कांग्रेस पक्षवाले अपने निर्णय के विरुद्ध जब अन्य पक्षों से मिलना चाहते हैं तो सच्चा कांग्रेस भक्त श्रीज्ञान

चंद्रशर्मा कांग्रेस सदस्यों के विरुद्ध सत्याग्रह करते हैं। प्रधान मंत्री के पद स्वीकार करने केलिए जब सारे सदस्य उन्हें अनुरोध करते हैं तब वे अपनी असम्मति प्रकटकर देते हैं। लेकिन जनता की भलाई को दृष्टि में रखकर वे स्वीकार करते हैं। अपनी शासन सत्ता के द्वारा जनता में फैली हुई अशांति को वे कुछ हद तक दूर कर लेते हैं बल्कि अपने आशय को सिद्ध करने के पहले ही वे गोलोक सिधारते हैं।

गिरिजा शंकरलाल :-

गिरिजा शंकरलाल एक कम्युनिस्ट धनवान है। वह कम्युनिस्ट होकर भी ~~कोटीश्वर~~ करोडपति होना उसकी विशिष्टता की बात है। अपनी बातों से दूसरों को मुग्ध करने की चतुरता उस में विद्यमान है। लेकिन भारत के प्रधानमंत्री के पद ~~+~~ केलिए कोशिश करने भारत आता है तो उसकी वाक्चातुरी बाल-बालिकाओं के सामने नहीं चलती। बाल-बालिकाओं की बातों में वह सत्य को पहचानता है, फलतः उस में राजनीति का मोह नष्ट हो जाता है।

कनकाराव :-

कनकाराव तो पेर्वाली का निवासी और श्री वर्धनराज का पडोसी आदमी है। वह कांग्रेस का प्रमुख सदस्य भी है। वह तो वर्धनराजा के पुत्र सुब्बतातराजु को कभी कभी कुछ धन देकर, कई एकड भूमि उससे लिखवा डालता है। जोसेतेसे वह धनवान हो जाता है। प्रजा सत्ता से लोक सभा के सारे सदस्य और जनता तंग आ जाते हैं तो वह प्रजा सत्ता को प्रभुसत्ता बनाने का प्रस्ताव लोक सभा में प्रवेश करता है। वह तो अपने पडोसी मौर्यवंशज वाले श्रीवर्धनराजा को राजगद्दी पर बिठाने का प्रस्ताव रखता है। वह अपनी वाक्चातुरी और प्रतिभा से एक नामी राजनीतिज्ञ बन जाता है।

<u>कथोपकथन</u> :—

कथोपकथन उपन्यास के प्रमुख अंग है। लेखक श्रीपद्मराजु बडे-बडे प्रभावोत्पादक कथोपकथनों का प्रणयन करते हैं। अपने अनुभव के आधार पर कथोपकथनों की सृष्टि करते हैं। निम्न लिखित कथोपकथन उनके राजनीतिक अनुभव का परिचायक है। भारत में क्रांति कैसे उठती है और उनका विवरण चौन प्रतिकूल नायक के द्वारा लेखक यों व्यक्त करते हैं ——

''ई देशं लो विप्लवं लेव दीयालंटे पलुकुबडि कावालि। पलुकुबडि कावालंटे प्रभुत्वं तो संबंधमुंडालि। व्यतिरेकपक्षं वारु विप्लवं पेरुन रैल्लु पडगोट्टिना, बस्सुलु तगलबेट्टिना प्रभुत्वं गट्टि चर्य तीसुकुंटुंदि। अदे प्रभुत्वानुकूल विप्लवकारुलु चेस्ते, प्रभुत्वं शिक्षिंच्यडानिकैना वेनुदीस्तुंदि। अंदुवल्ल विप्लवं वर्धिल्लालंटे विप्लवकारुलु प्रभुत्वं तो संबंधमेर्परचुकोवालि।'' (यदि इस देश में क्रांति मचाना चाहें तो नामी क्रांतिकार होनाचाहिए। नामी होना है तो सरकार से अपना संबंध जोडना चाहिए। सरकार के प्रतिकूल पक्षवाले क्रांति के नाम पर रेलगाडियों के गिरानेपर, कारों को जलाने पर सरकार उनपर कठोर कार्यवाही कर लेती है। वही करतूत सरकार के अनुकूल पक्षवाले करें तो सरकार उन्हें सजा देने केलिए पीछे हटती है। इसलिए क्रांति सफल होना हो तो सरकार से अपना संबंध जरूर जोडना चाहिए।)

आजकल लोग राष्ट्रभाषा के पीछे पडने के कारण देश भर में कई आंदोलन मच रहे हैं। ऐसा जान पडता है कि देश की एकता के लिए ये लोग एक ही राष्ट्रभाषा को नहीं चाहते, बल्कि किसी न किसी तरह अपनी भाषा के द्वारा अपना अस्तित्व जमाना ही उन लोगों का लक्ष्य जान पडता है। इसलिए राष्ट्रभाषा के बारे में उपन्यासकार वर्धनराज के कथन द्वारा अपने विचार इस प्रकार व्यक्त करते हैं :—

""मन देशेली पदुनारु मुख्य भाषलुन्नायि। वानिलो एवोवोकटि राष्ट्रभाषगा नंगीकरिंचिनचो तक्किन भाषलवारिकि अभ्यंतर मुंडुट सहजमु। हिन्दी भाषकु व्यतिरेक मुगानेंत अलजडुलु तेचिनवो मीकंदरकु तेलियुनु। अंदुवलन राष्ट्रभाषयोकटि उंडुट अनवसरमु कादोन मा निर्णयमु।"" (हमारे देश में सोलह भाषाएँ प्रमुख हैं। इन में से किसी एक भाषा को राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार करें तो बाकी भाषावालों को खटकना सहज है। आप सब लोग जानते हैं कि हिन्दी भाषा के विरोध में कितने आंदोलन चल रहे हैं। इसलिए हमारा निर्णय यह है कि राष्ट्रभाषा की ही जरूरत नहीं है।)

इस प्रकार इस उपन्यास के सभी कथोपकथन राजनीति की दृष्टि से खरे उतरते हैं। और कई समस्याओं को सुलझाते भी हैं।

वातावरण :—

राजनीतिक वातावरण की दृष्टि से यह उपन्यास सोलह आने उत्तम बन पडा है। यह उपन्यास पग-पग पर राजनीतिक वातावरण की सृष्टि करता है। उपन्यास के आरंभ में ही लेखक ने चुनावों का वातावरण प्रस्तुत किया है। जैसे —

""चुनावों के समय में देश भर में कई दल उठ खडे होते हैं। हरेक पक्षवाले अपने अपने पक्ष की जीत केलिए अधिक कोशिश करते हैं। अधिक संख्या बलवाले पक्ष निम्न संख्या बलवाले पक्ष से मिलकर अपने दल की विशिष्टता प्रकट करते हैं और यही दल जो बलवान है, लोक सभा का अधिकारी बनता है।"" इस प्रकार हरेक दलवाले जनता में से अधिक मत प्राप्त करने केलिए जिस प्रकार कोशिश करते हैं, उस वातावरण का वर्णन इस उपन्यास में लक्षित होता है।

चुनावों के बाद अधिक संख्या बलवाले ही मंत्रि पद स्वीकार करते हैं। जो पक्षवाले हार जाते हैं, वे सब जीते हुए पक्षवालों को सताना चाहते हैं। यह वातावरण भी

इस उपन्यास में लक्षित है।

प्रजासत्ता से तंग आकर सारे प्रतिनिधि और लोग प्रभुसत्ता की ओर झुक जाते हैं। इस निर्णय के कई कारण होते हैं। प्रभुसत्ता होने पर राजनीतिक शक्तियों का अस्तित्व कम हो जाता है। इसका विवरण भी इस उपन्यास में मिलता है।

लोक सभा के सदस्य प्रधान मंत्री के पद के लिए शोर गुल मचाने पर तीन हजार बाल-बालिकाएँ लोक सभा के सभी सदस्यों को चेतावनी देते हैं कि "जब तक आप लोग एक मत से प्रधान मंत्री को नहीं चुनेंगे तब तक हम आप को घेरना नहीं छोडते।" आखिर इन बच्चों के कारण ही प्रजासत्ता प्रभुसत्ता बन जाती है। यह मनोहर वातावरण भी इस उपन्यास में दृष्टिगोचर होता है। इस प्रकार इस उपन्यास में राजनीतिक वातावरण ओतप्रोत है।

उद्देश्य :—

आजकल प्रभुसत्ता के नाम पर कई राजनीतिक शक्तियाँ काम कर रही हैं। वास्तव में जनता की भलाई कम ही पहुँचाते हैं बल्कि अपनी कूटनीति से कई सदस्य धन कमा रहे हैं। ऐसी प्रजा सत्ता से प्रभुसत्ता ही भला सिद्ध करना इस उपन्यास के लिखने में उपन्यासकार का प्रधान लक्ष्य माना जाता है। जिस प्रकार लोक सभा में पक्ष और विपक्षवाले वाक्युद्ध करते हैं और कभी कभी हाथों और पैरों से भी परस्पर प्रहार करते हैं, उसका विस्तृत वर्णन करके राजनीतिज्ञों के मनोदौर्बल्य का वर्णन करना ही लेखक का उद्देश्य है।

बड़े-बड़े राजनीतिज्ञों के द्वारा जैसे महान कार्य सुलझा नहीं जा सकता, ऐसा महान कार्य छोटे-छोटे बालक और बालिकाओं के द्वारा हल कराना उपन्यासकार का ध्येय है। इसके द्वारा हमें यह प्रतीत होता है कि राजनीतिज्ञ तो अपने स्वार्थ के अनुकूल काम करते हैं, बल्कि छोटे-छोटे बाल-बालिकाओं के मन में ऐसी स्वार्थता लेश

मान को भी नहीं मिलती। एक सुस्थिर प्रफुल्लता होना ही उनका ... रहता है। कूटनीति से वे परिचित नहीं होते।

शैली :—

किसी उपन्यास व नाटक की सफलता केलिए उत्तमशैली को अपनाना चाहिए। लेखक पद्मराजुजी उत्तम शैली को अपनाने में कुशल हैं। उनकी सारी रचनाओं की शैली सरल सुबोधक और प्रभावोत्पादक होती है। जहाँ तहाँ लेखक मुहावरों और कहावतों की और व्यंग्य पूर्ण बातों की सृष्टि भी करते हैं। जैसे :—

1) ग्रान्पडि पोवुट (हताश होना)

2) गंगिगोवुवंटि (पवित्र)

3) परशुराम प्रीतियगुट (नामो निशान मिट जाना)

4) किंकर्तव्य विमूढुडगुट (हताश होना)

5) इस उपन्यास में उपन्यासकार ने जहाँ तहा तमिल शब्दों का प्रयोग भी किया है। जैसे :— कोन्नुट्टिये (मार दियारे)

निम्नलिखित कथन लेखक की व्यंग्यपूर्ण शैली का उत्तम उदाहरण है। जैसे :— "लोक सभा चर्चललो प्रधानोगंगा उपयोगं लोकि वच्चिन चेप्पुलु डिल्लो पट्टणं लो चाला प्रियमैपोयायि।" इस कथन का मतलब यह है कि लोक सभा में सदस्य अपने जूतों से एक दूसरे को मारने लगते हैं। जब कभी कोई सदस्य अपने जूते को काम में लाता हैं तो वह उसे को बेचता है। इसलिए उसे फिर जूते को खरीदना पडता है। इस प्रकार जूतों को खरीदने लगते हैं तो जूतों के महँगे हो जाने के बिना क्या होगा? अर्थात लोक सभा की चर्चाओं में झगडे अत्यधिक होते हैं।

उपर्युक्त उदाहरण से यह स्पष्ट होता है कि पद्मराजुजी की शैली व्यंग्यपूर्ण भी है।

3·3·0 कहानी साहित्य

3·3·1 गालिवाना (तूफान)

कथावस्तु :–

तूफान का समय था। बडे जोर से पानी बरस रहा था। घरे अँधकार चारों ओर फैल गया। पता नहीं चला कि सूर्यास्त कब हुआ। शम्भू दुपट्टे ओढे सामने के कंगूरे से टपकनेवाली बूँदों को अपलक देख रहा था। उसे उस समय अपने पडोसी ~~बक्ज~~ वाले के घर में एक दृश्य दिखाई दिया। उसे बिखरी हुई तीन आवाजें सुनायी पड रही थीं। एक तो भर्राई आवाज जो उस घर के मालिक की सी लग रही थी। दूसरी आवाज थी बारीक जो उस घर की मालकिन की थी। और तीसरी शहनाई की तरह मधुर स्वर था। जो उस घर की मालकिन की सहेली का था। मालकिन की सहेली तो उस समय अपने गाँव जगन्नाथपुरम जाना चाहती थी, बल्कि उस मूसलाधार वर्षा में उसे कौन गाडी वाला ले जाता। आखिर शम्भू पडोसी ने एक बैल गाडीवाले को पूछा बल्कि उसने इनकार कर दिया। वह जाने केलिए तंग करने लगी। बेचारा सारे मकान में पानी टपकने के कारण रात भर सोने केलिए भी उन्हें जगह नहीं मिली।

इधर शम्भू को महसूस हुआ कि उसके चबूतरे पर दो व्यक्ति चल रहे थे। उनकी बात-चीत से शम्भू को ऐसा महसूस हुआ कि वे दोनों ~~भिखारि~~ भिखारी और भिखारिन हैं। बेचारा उनको एक ओर भूख लग रही थी तो दूसरी ओर ठंड लग रही थी। वह भिखारिन तो बहुत खूब सूरत थी। उसके पति को कभी कभी संदेह होता था कि उसकी सूरत देखकर सब लोग अधिक दान देते थे।

शम्भू को भूख का महसूस तब हुआ जब उसने भिखारिन के बात सुनी कि "पेट भरा हो तो ठंडा भी नहीं लगती। शम्भू ने दरवाजे को ताला लगाया और छतरी लेकर होटल की ओर गया। होटल में खाना खाकर घर लौटा तो उसका पडौसी घर के सामने दिखायी पडा। उसके सविनय अनुरोध पर, शम्भू ने रात को बिताने केलिए उनको अपने घर में पनाह दी। वह पडौसी व्यक्ति शम्भू को बार बार बुलाता हुआ कुछ अंट-संट बकने लगा जिसके कारण उसके नींद में भंग पडने लगा। आखिर वह कुछ बोलते-बोलते शम्भू के पहले ही सो गया। अब शम्भू को किसी का आतंक नहीं था। उसको कभी कभी शहनाई जैसी मधुर आवाज की उद्विग्नता और बाहर चबूतरे के दलिये में लेटी हुई स्त्री की हँसी सुनाई दी जाती थी। शम्भू के मन में लालसा जाग उठी कि उस सुंदर भिखारिन को देख आये। कल्पना ने उसकी आँखों के आगे एक चित्र अंकित कर दिया कि वह अपनी पत्नी के साथ रेल गाडी पर सफर कर रहा था। शहनाई आवाजवाली स्त्री ही उसकी पत्नी थी और उनके डिब्बे में उस खूबसूरत भिखारिन चढ गयी है जो बाहर चबूतरे पर सो रही थी। उसे देखकर उसकी पत्नी परेशान हो गयी मानो उन दोनों ~~में बात बर के~~ के बीच में कोई संबंध हो। कल्पना चल रही थी। इतने में गाल पर थप्पड सा लगा। वह चौंककर बैठ गया। उसने देखा कि उसके कमरे में न पडौसिनी की सहेली थी न बाहर उसकी कल्पनामूर्ति वह खूबसूरत भिखारिन। पूर्ववत् मूसलाधार वर्षा बरस रही थी।

<u>चरित्र-चित्रण</u> :—

यह कहानी चरित्र-चित्रण प्रधान नहीं है। लेकिन शम्भू का चरित्र-चित्रण कुछ उभर आता है। शम्भू गाँठ के पूरे आदमी था जिसको अच्छा मकान था। वह एक

उदार आदमी था। उसके पडोसी आकर मनुहार करने पर अपने घर में रात काटने केलिए उसको उसकी पत्नी और पत्नी की सहेली को स्थान दिया। बल्कि उसकी प्रवृत्ति वासना प्रधान थी क्यों कि बाहर चबूतरे में लेटी हुई खूब सूरत भिखारिन और अपने घर में सोनेवाली शहनाई आवाज वाली स्त्री के ऊपर उसने कल्पना की कि शहनाई आवाजवाली उसकी पत्नी हो और सुंदर भिखारिन उसकी प्रिया हो जिसको रेल गाडी चलती देखकर अपनी पत्नी परेशान हुई हो, मानो दोनों के बीच में कोई संबंध हो।

कथोपकथन :—

कथोपकथन किसी कहानी या उपन्यास के प्रधान अंग माना जाता है। यह कहानी घटना प्रधान होने के कारण प्रभावोत्पादक कथोपकथनों का आविष्कार नहीं किया गया है।

आजकल किराये को देनेवाली मकान की मालकिन की जोर जबरदस्ती का वर्णन पद्मराजुजी ने भर्राई हुई आवाजवाले के द्वारा प्रस्तुत किया कि ""रसोई की छत तो टपकती है। जहाँ देखो वहाँ पानी। सारा मकान टपक रहा है। मकान की मालकिन हर महीने की पहलीतारीख को किराया लेने केलिए आ धमकती है, किंतु मकान की मरम्मत कराने का नाम नहीं लेती। डाइन है डाइन।""

वातावरण :—

तूफान का वातावरण विस्तृत एवं सुंदर रूप में वर्णित किया गया है। तूफान का भय भीत वातावरण द्रष्टव्य है। इन कहानी के द्वारा आजकल के कुछ नौजवानों का पता चलता है कि कोई सुंदर स्त्री चाहे वह भिखारिन हो तो भी उसकी ओर आँख गाडकर देखते हैं और कुछ दान देते हैं। उन में दानशीलता अंश मात्र भी नहीं होती। केवल उन में कामतृष्णा भरी रहती है।""

उद्देश्य :—

उद्देश्य :—

तूफान के भयभीत वातावरण को प्रस्तुत करके, उस समय में बिना घरवाले भिखारों और गरीबों की दयनीय स्थिति का वर्णन करके, उनके प्रति गाँव के पूरे लोगों में सहानुभूति व उदारता पैदा करना कहानीकार का लक्ष्य सा होता है।

शैली :—

कहानी की शैली सरल, सुबोधक और बोलचाल भाषा की है। तूफान का वातावरण प्रस्तुत करने के लिए लेखक ने जिस मनोहर शैली को अपनाया है, वह द्रष्टव्य है।

3 · 3 · 2 पडव प्रयाणमु (नौका यात्रा) :—

कथावस्तु :—

सूर्यास्त हो जाने के कारण सारा जगत ऐसा प्रतीत होता है कि मानो चिंता में डूब गया हो। निबिड अँधकार फैल जा रहा है। उस अँधकार को चीरकर मंद गति से नाव पानी पर सरकता जा रहा है। इतने में कोई पुकारता है —

"ए नाव वाले! नाव को इस किनारे पर लाओ। इस किनारे पर।" नाव के रुक जाने पर दो व्यक्ति चढते हैं। उन में एक तो मर्द है जिसका नाम 'पडाल है। दूसरी स्त्री है जिसका नाम है 'रँगी'। रँगी तो मल्लाहों और गुमाश्ता से बहुत परिचित है। उस पर मल्लाहों को विश्वास है कि वह अच्छी है न कि चोरनी। वह मल्लाहों से चिकनी चुपडी बातें करने लगती है।

पडाल तो छत पर अस्तव्यस्त लेटा रहता है। वह तो खूब पीने के कारण अपनी सुध्-बुध खो बैठता है। जब गुमाश्ता उस बेहोश आदमी को देखकर जोर से

चिल्लाकर पूछता है — ''ए रंगी। यह कौन है?''तो रंगी जवाब देती है — ''बाबूजी। पडाल है, मेरा आदमी।' पडाल चोर होने के कारण गुमाश्ता उस से डरता है क्यों कि कहीं यह चोर नौका का माल न उतारे। इसलिए वह रंगी और मल्लाहों पर टूट पडता है।

कुछ देर में नाव में सन्नाटा छा जाता है। नाव सन्नाटे को चीरती चली जा रही है। मल्लाह ~~क~~ यात्रियों को साफ करते बातें कर रहे हैं। उस नाव में एक पथिक है जिसे उस अनंत अंधकार को उस असहाय स्थिति में अपने शरीर को समर्पित करने में डर लग रहा है। उसे चिरकाल की घटनाएँ याद आती हैं। अनादिकाल से पुरुष का लालन पालन करनेवाले नारीत्व की कथाएँ याद आती हैं। उसे नीं चढने लगी है। नाव में सभी झपकियाँ ले रहे हैं। इधर रंगी पतवार सँभालनेवाले के पास जाती है और उसका मुँह मिया मिट्‌टू बनाती है। पतवार सँभालनेवाले को भी नींद चढजाने के कारण वह काम रंगी को सौंप देता है। रंगी अपने ठंडे स्वर में गाना शुरू करती है। रंगी के कंठ में मर्द जैसा संगीत है। उस गीत से वहाँ लेटे सभी प्राणी ऊँघने लगे हैं। उस पथिक को भी नींद चढ जाती है। सर्वथा अन जान एक स्वप्न जगत् उसके सामने खुल जाता है। उस में रंगी और पडाल कई रूपों में घूम रहे हैं।

नाव में थोडा सा हलचल होता है। पथिक उठ बैठता है। वह जान लेता है कि चोर तो दो गुड के बोरे और तीन इमली के बोरे चुराकर ले गया है और वह सिवा पडाल के और कोई नहीं है। इधर रंगी मल्लाहों के हाथों में फँस जाती है। रंगी पर खूब मार पडी है। आखिर रंगी को पुलिस के हवाले ~~करके~~ करने उसे फिर नाव चढाते हैं।

पथिक को उस स्त्री पर दया आती है। इसलिए वह उससे उसके पति के बारे में पूछने लगता है। रंगी अपनी राम कहानी सुनाने लगती है — "मैं तो एक अभागिन नारी हूँ। बचपन में ही पडाल मुझे भगा ले आया है। वह तो पियक्कड है। हम दोनों ने बहुत कोशिश की कि कोई काम ठीक जमा ले। लेकिन कई धंधों करके असफल ही रहे। आखिर इस तरह चोरी करने पर मजबूर हुए। मेरा पति तो इतना पाखंड है कि मेरा होते वह और एक स्त्री से व्यवहार करने लगता है। मैं तो सह नहीं सकी। उस ने झगडा मोल लिया है। एक बार उसने मुझे घर में डालकर जलाना भी चाहा। फिर भी उस से मुझे बहुत प्रेम है। कारण यह है कि वह मेरे बिना नहीं रह सकता। जब वह पिये बिना नहीं रहता, एक दम मक्खन की तरह कोमल रहता है। मेरे बिना उसका दिल टूट जाएगा। उसके लिए मैं सब कुछ करने केलिए तैयार हो जाऊँगी।" इस प्रकार वह अपनी राम क कहानी सुनाने लगी है। इतने में भोर हो जाता है। उसकी दयनीय स्थिति पर पथिक पिघल जाता है और उसके हाथ में एक रुपया रखकर अपना रास्ता पकड लेता है। न जाने बाद उस स्त्री की हालत क्या हुई।

चरित्र-चित्रण :-

इस कहानी में दो ही मुख्य पात्र हैं। एक तो पडाल और दूसरा रंगी।

पडाल :-

पडाल एक चोर है जिसकी मूँछें अटपटी हैं। उसका चेहरा लंबा है और छाती चौडी। उसकी छाती हमेशा फूलती रहती है। उसकी रीढ की हड्डी तो धनुष की भाँति झुककर फिर फिर खडी हो जाती है। संक्षेप में उसका परिचय दें तो वह दुबला पतला और बेहद लापरवाह मालूम होता है।

वह तो पियक्कड है। बचपन में ही वह रंगी को भगा ले आता है। वह अपनी जीविका निर्वाह केलिए कई धंधों करके भी असफल रहता है। आखिर वह मजबूर होकर चोर बनता है। वह इतना आँखों का अंधा है कि अपनी पत्नी रंगी को झोंपडे में रखकर झोंपडे को जलाना चाहता है। वह अपनी स्त्री होते, दूसरी दूसरी स्त्री से मुँह काला करता है। वह एक नौका पर चढ़कर आधीरात के के समय में नाव के सब लोग झपकियाँ लेते समय दो गुड और तीन इमली के बोरे चुरा ले जाता है।

रंगी :—

रंगी पडाल की पत्नी है। विधि बलीय होने के कारण चोरनी भी बनती है। वह बचपन में ही अपने माँ बाप से दूर हो जाती है। आखिर उसे ही अपना आदमी समझकर उसकी अनुगामिनी बनती है। उसके हरेक बुरे काम में भाग लेती है। नौका का एक पथिक उससे अपने पति के बारे में पूछने पर अपनेपति की महानता और हृदय कोमलता का डींग मारती है। वह अपना पति जो भी हो दूसरों के सामने उसे नीचा कर दिखाना नहीं चाहती।

कथोपकथन :—

कथोपकथन नाटक, उपन्यास व कहानी को सफल बनाने में काम आते हैं। पद्मराजुजी प्रभावोत्पादक कथोपकथनों की सृष्टि करने में सिद्ध हस्त है। भारतीय नारी चिरकाल से अपनी पति की अनुगामिनी बनती आ रही है। वह महान है तो वह भी महती बनती है। अपना पति तपोधन हो तो वह भी तपोधन बनती है। यदि पति चोर है तो उसे भी चोरनी बनती बननी पडती है। जो भी हो वह अपने पति के साथ मिलजुलकर, अपने पति को जीवन पथ में सहयोग देने में ही, वह

आनंद पाती है। इस नग्न सत्य को हम रँगी के एक कथन द्वारा जानते हैं जिसमें पति चोर और चमड़ा उधेड़नेवाला होने पर भी अपने पति की महानता का डींग मारती है। देखिए उस में कितनी सहनशीलता है। जैसे — "उस समय मुझे नहीं मालूम था कि वह पियक्कड़ है। वह पी कर मेरी चमड़ा उधेड़ देता है। इसी का मुझे दुख है। मार पड़ने पर यही सोचती हूँ कि उसे छोड़कर कहीं जाय।" लेकिन वैसा आदमी दूसरा नहीं। आप नहीं जानते। जब वह पिए बिना रहता है एक दम मक्खन की तरह कोमल रहता है। मेरे बिना उसका दिल टूट जाएगा। वह मेरा है। जहाँ कहीं भी क्यों न घूमे वह मेरे पास आये नहीं रह सकता।" इस कथन में स्त्री की सहनशीलता का कितना सुंदर मार्मिक वर्णन है।

<u>वातावरण</u> :—

एक स्त्री के मनोवैज्ञानिक वातावरण का उल्लेख है। पियक्कड़ व्यक्ति का वातावरण लक्षित है। पड़ाल और रँगी के द्वारा ग्रामीण वातावरण सूचित है।

<u>उद्देश्य</u> :—

स्त्री कितनी भी अच्छी हो या कितनी भी उत्तम गुण सम्पन्ना हो तो भी उसे विधि बलीय से होने पर किसी पियक्कड़ व चोरी से उसका आशिक हो जाय तो उसे जरूर अपने पति की अनुगामिनी बननी पड़ती है। उस में ही उस केलिए आनंद व सुख है। ~~लेकिन~~ पति के बिना उसका सारा जीवन रेत में इत्र डालने के समान हो जाता है। रँगी की जीवनी का वर्णन प्रस्तुत करके इस सत्य को प्रदर्शित करना लेखक का लक्ष्य रहा है।

<u>शैली</u> :—

कहानी में मुहावरों की भरमार है। शैली प्रभावोत्पादक है। जैसे — 1) मरम्मत करना। 2) चमड़ा उधेड़ना 3) आँखों में धूल झोंकना आदि। पियक्कड़ की

छोटे छोटे वाक्यों से कहानी की शैली में रोचकता आ गयी है जैसे —

पड़ाल :— कौन कहता है कि मैं ने पी है?

गुमाश्ता :— अरे ! इसको उतारो। इसे चढ़ने ही क्यों दिया? बड़ा पीता है यह।

पड़ाल :— बहुत नहीं जी। थोड़ा सा पीता हूँ। इस कहानी में पात्रों के द्वारा छोटी मोटी गालियाँ भी प्रस्तुत हैं जिसके द्वारा ग्रामीण भाषा शैली सूचित है जैसे — 1) सूअर का बच्चा 2) मेरे सामने बैठा रोब गाँठने चला है आदि।

भाषा सरल, सुबोध और बोलचाल की है।

चतुर्थ अध्याय

श्रीपद्मराजु का योगदान

4·0·0

तेलुगु साहित्य में श्री पद्मराजु का योगदान

श्रीपद्मराजुजी आन्ध्र साहित्य के मेरुदंड हैं। ये तो प्रसिद्ध कहानीकार और उपन्यासकार ही नहीं बड़े नामी नाटककार और एकांकीकार भी हैं। तेलुगु साहित्य में श्रीपद्मराजु का योगदान निम्न प्रकार रहा है।

1) कहानी साहित्य :—

ये तो प्रसिद्ध कहानीकार हैं, जिन्हें विश्व कहानी प्रतियोगिता में द्वितीय पुरस्कार मिला है। इनकी उत्तम कहानी 'तूफान' (गालिवाना) है। कहानी रचना में ये तो एक उत्तम ढंग की शिल्पविधा को प्रदर्शित करते हैं। इनकी भाषा सरल और बोल चाल की है। 'प्रतीक्षित मुहूर्त' (एदुरु चूस्तुन्न मुहूर्तं), सुगंध रहित पुष्प (वासन लेनि पुव्वु), नौकायात्रा (पडव प्रयाणमु) आदि इनकी प्रसिद्ध कहानियाँ हैं। इनकी कहानियों में शिल्पविधा, सुंदर घटनाओं का सिलसिला, पात्रोचित बातचीत आदि उल्लेखनीय हैं।

2) उपन्यास साहित्य :—

पद्मराजुजी उल्लेखनीय उपन्यासकार भी हैं। ये तो उपन्यास और नाटक आदि लिखने में केवल सामाजिक दृष्टिकोण ही नहीं रखते, बल्कि हास्य रस की ओर भी इनकी दृष्टि केंद्रीकृत है। इनका हास्यरसपूर्ण उपन्यास का नाम है 'ब्रतिकिन कालेजी'। यह तो हास्यरस की पराकाष्ठा तक पहुँचा है। एक साधारण परिवार में घटित सभी घटनाओं को हास्य रसपूर्ण शैली में प्रदर्शित करने में लेखक सफल बने हैं। इनके राजनीतिक दृष्टिकोण से पूर्ण उपन्यास है 'द्वितीय अशोक के तीन दिनों का शासन'

(रैंडव अशोकुनि मूण्णळ्ळ पालना)। इस उपन्यास में भी राजनीतिक कुरीतियों का खंडन हुआ है। इस उपन्यास के द्वारा लेखक ने साबित किया है कि प्रजासत्ता से प्रभुसत्ता ही उत्तम है। इनके 'कालीमिट्टी' नामक उपन्यास ग्रामीण वातावरण से पूरित है। इस में ग्रामीण रीति-रिवाजों का उल्लेख है। इस उपन्यास में टूटते हुए गाँवों की दशा का भर-पूर वर्णन है। इस उपन्यास के द्वारा लेखक ने टूटते हुए गाँवों का वर्णन करके जनता को सही रास्ते पर लाने का सफल प्रयास किया है।

3) रूपक साहित्य :—

श्री पद्मराजुजी प्रसिद्ध नाटककार हैं। इनके कई नाटक सामाजिक दृष्टिकोण से खरे उतरते हैं। रक्तकनीरु (रक्तिम आँसू) नामक इनका सामाजिक नाटक पाश्चात्य सभ्यता के पुजारियों की आँखें खोलता है। पुरुष की अठखेलियों के कारण बलिवेदी पर चढनेवाली स्त्रियों की मनोदशा का वर्णन इस में मिलता है। इनके अन्य सामाजिक नाटक हैं 'भिखारी राम' और 'पापं पंडिंदि (पाप पक गया है)। भिखारी राम नामक नाटक के द्वारा लेखक जनता को यह संदेश पहुँचाना चाहते हैं कि ''रूप-सौंदर्य से किसी बच्चे या व्यक्ति के भविष्य का निर्माण नहीं कर सकते। रूपवान व्यक्ति बडा पापी हो सकता है और कुरूपी व्यक्ति आत्म सौंदर्य से शोभित हो सकता है।'' इस नाटक में एक कुरूपी बच्चे का जीवन चरित्र अंकित किया गया है।

'पापं पंडिंदि' (पाप पक गया है) नामक नाटक के द्वारा लेखक ने समाज में धनवान लोगों के कारण बलि वेदी पर चढनेवाले गरीब और मजदूर लोगों का चित्रण किया है। ये तो उत्तम रेडियो एकांकीकार भी हैं। इनके चालीस रेडियो एकांकी नाटक हैं जो अभी तक ग्रंथ के रूप में नहीं निकले। इनकी भाषा सरल, सुबोधक और प्रभावोत्पादक है।

इनकी दृष्टि पैनी है अतः वे 'पद्मराजु' के नाम से लोकप्रिय हैं। श्री पद्मराजु स्वतंत्र, आदर्शोन्मुख यथार्थवादी कलाकार हैं। 'पद्मराजु' की तरह उनकी प्रतिभा लोक-व्याप्त हुई है। श्री पद्मराजु विश्वभारती के वरद पुत्र हैं। इस प्रकार तेलुगु साहित्य में श्री पद्मराजु का योगदान अनुपम है।

*% *% *%

परिशिष्ट : ग्रन्थसूची

पत्र-पत्रिकाएँ

लेख का नाम	लेखक का नाम	पत्रिका का नाम	प्रकाशन तिथि
1) आन्ध्र कहानी साहित्य का विकास	डा0 कर्णराजशेषगिरिराव	हिन्दी प्राध्यापक	1966 - 67
2) नेनाटि साहित्यंलो स्थितिगतुलु	तुम्मलपल्लि रामलिंगेश्वरराव	भारती (मासिक)	1966, जनवरी
3) ''	''	''	'' मई
4) तेलुगु नवल तेन्नुलु	कुमारि0 जी · ललिता	''	1970, जनवरी